



महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको बुलेटिन



२०६९, वैशाख / जेष्ठ



प्रकाशक
महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय
रामशाहपथ, काठमाडौं

संरक्षक

महान्यायाधिवक्ता

श्री मुक्तिनारायण प्रधान

सल्लाहकारहरू

नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पुष्पराज कोइराला

नायब महान्यायाधिवक्ता श्री प्रेमराज कार्की

नायब महान्यायाधिवक्ता श्री राजनारायण पाठक

सम्पादन समिति

नायब महान्यायाधिवक्ता श्री सूर्यप्रसाद कोइराला

- संयोजक

उपन्यायाधिवक्ता श्री रेवतीराज त्रिपाठी

- सदस्य

शाखा अधिकृत श्री सोमकान्त भण्डारी

- सदस्य सचिव

विषय - सूची

क्र.स.	शीर्षक	पेज नं.
१.	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयबाट सम्पादित कार्यको विवरण	५
२.	पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालयहरूबाट सम्पादित कार्यको विवरण	६
३.	जिल्ला सरकारी वकील कार्यालयहरूबाट सम्पादित कार्यको विवरण	७
४.	गतिविधिहरू	१०
५.	सरकारी वकीलहरूको क्षेत्रीय वार्षिक कार्य समीक्षा तथा अनुशिक्षण कार्यक्रम	११
	(१) उद्घाटन सत्र	११
	(२) कार्यपत्र प्रस्तुति सत्र	१४
	(३) प्रस्ताव पारित सत्र	२७
	(४) समापन सत्र	२९
६.	भावी संविधानमा महान्यायाधिवक्ता कार्यालयको संरचना सम्बन्धी अन्तरक्रिया	३१
७.	बहस नोट	३५

अनुसूचीहरू १

१.	सरकारी वकीलहरूको क्षेत्रीय वार्षिक कार्य समीक्षा तथा अनुशिक्षण कार्यक्रममा सहभागी, पर्यवेक्षक तथा व्यवस्थापकहरूको नामावली	५१
२.	भावी संविधानमा महान्यायाधिवक्ताको संरचना र स्वरूप सम्बन्धी कार्यक्रममा सहभागी तथा व्यवस्थापकहरूको नामावली	५३
३.	सरकारी वकीलहरूको क्षेत्रीय वार्षिक कार्य समीक्षा तथा अनुशिक्षण कार्यक्रममा प्रस्तुत भएका कार्यपत्रहरू	५५
	(क) अपराधको अनुसन्धान तथा अभियोजनमा देखिएका सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक समस्या र समाधानका उपायहरू	५५
	- जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री सञ्जीवराज रेग्मी	
	जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, चितवन	
	(ख) रिट निवेदनको क्षेत्राधिकार विस्तारको सन्दर्भमा सरकारी वकीलको भूमिकामा चुनौती र तत्सम्बन्धमा चाल्नु पर्ने कदमहरू,	६४
	- सहन्यायाधिवक्ता श्री राजनप्रसाद भट्टराई	
	पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, विराटनगर	
	(ग) महिला, दलित र बालबालिका सम्बन्धी कानून कार्यान्वयनमा देखा परेका समस्या र समाधानका उपायहरू,	६९

- सहन्यायाधिवक्ता डा. टेकबहादुर घिमिरे
पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, इलाम

(घ) भावी संविधानमा महान्यायाधिवक्ताको स्वरूप र ढाँचा

- जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री पुष्कर सापकोटा ७८
जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, सुनसरी

४. भावी संविधानमा महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको संरचना र स्वरूप ८४
(अवधारणा पत्र)
५. बाल न्याय सम्बन्धी अध्ययन भ्रमण प्रतिवेदन ८९

१. महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयबाट सम्पादित कार्यको विवरण, २०६९, वैशाख/जेष्ठ

सि.नं.	पद	सरकारी वकीलको नाम	बहस पैरवी संख्या	
			वैशाख	जेष्ठ
१-	महान्यायाधिवक्ता	श्री मुक्तिनारायण प्रधान	१०	१९
२-	नायब महान्यायाधिवक्ता	श्री पुष्पराज कोइराला	७२	८१
३-	नायब महान्यायाधिवक्ता	श्री सूर्यप्रसाद कोइराला	२५५	२८९
४-	नायब महान्यायाधिवक्ता	श्री प्रेमराज कार्की	५९	७२
५-	नायब महान्यायाधिवक्ता	श्री राजनारायण पाठक	१०२	२४९
६-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री युवराज सुवेदी	८८	५७
७-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री सरोजप्रसाद गौतम	१२३	१५४
८-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री ठोकप्रसाद शिवाकोटी	७४	८८
९-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री दुर्गाबन्धु पोखरेल	१२	५८
१०-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री महेशकुमार थापा	७६	१३५
११-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री विनोदकुमार पोखरेल	—	६३
१२-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री किरण पौडेल	१०३	११२
१३-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री महेश शर्मा पौडेल	१३७	४२
१४-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री सूर्यप्रसाद पोखरेल	७०	८४
१५-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री कृष्णजीवी धिमिरे	२२९	२५८
१६-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री कृष्णप्रसाद पौडेल	१५१	४५
१७-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री धर्मराज पौडेल	—	५२
१८-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री योगराज बराल	५	—
१९-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री सूर्यनाथप्रकाश अधिकारी	६१	१०८
२०-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री तेजनारायण पौडेल	२१	४२
२१-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री भरतलाल शर्मा	९७	९०
२२-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री राजेन्द्रकुमार श्रेष्ठ	४१	५१
२३-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री रेवतीराज त्रिपाठी	९९	१०१
२४-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री हरिप्रसाद रेग्मी	६०	१०७
२५-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री गंगाप्रसाद पौडेल	१११	१०८
२६-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री मदनबहादुर धामी	५८	५७
२७-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री शंकरबहादुर राई	७९	१०३
२८-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री उद्धवप्रसाद पुडासैनी	७२	४४

नोट : एउटा मुद्दामा एक भन्दा बढी सरकारी वकील खटिएकोमा खटिएका सरकारी वकीलले बहस पैरवी गरेको मानी बहस पैरवी संख्या उल्लेख गरिएको ।

२. पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालयहरूबाट सम्पादित कार्यको विवरण, २०६९ वैशाख												
सिं नं.	कार्यालयको नाम	मुद्दाको लगत, फछ्यौट र बाँकीको विवरण								पेशी सम्बन्धी विवरण		
		लगत	फछ्यौट					जम्मा	बाँकी	पेशीमा चढेको मुद्दा संख्या	बहस पैरवी गरेको संख्या	सरकारी वकीलबाट स्थगित संख्या
			कसूर वा दावी कायम	कसूरमा सफाई वा दावी खारेज	मुलतवी /तामेली	मुद्दा फिर्ता	मिलापत्र					
1	पु.स.व.का. इलाम	164	49	25	0	0	0	74	90	500	322	89
2	पु.स.व.का. विराटनगर				0	0	0	0	0			
3	पु.स.व.का. धनकुटा	140	39	30	3	0	0	72	68	282	182	73
4	पु.स.व.का. राजविराज	895	176	176	29	0	0	381	514			
5	पु.स.व.का. जनकपुर				0	0	0	0	0			
6	पु.स.व.का. हेटौँडा				0	0	0	0	0			
7	पु.स.व.का. पाटन							0	0			
8	पु.स.व.का. पोखरा	546	124	52	0	0	0	176	370	1098	838	206
9	पु.स.व.का. बाग्लुङ	110	9	1	0	0	0	10	100	275	215	46
10	पु.स.व.का. बुटवल	428	59	94	5	0	0	158	270			
11	पु.स.व.का. तुल्सीपुर	339	91	44	1	0	0	136	203			
12	पु.स.व.का. सुर्खेत				0	0	0	0	0			
13	पु.स.व.का. नेपालगंज	512	101	22	1	0	0	124	388			
14	पु.स.व.का. जुम्ला	40	2	2	0		0	4	36			
15	पु.स.व.का. दिपायल	169	54	11	0	0	0	65	104			
16	पु.स.व.का. महेन्द्रनगर	131	34	26	3	0	0	63	68			
	जम्मा	3474	738	483	42	0	0	1263	2211			

नोट : खाली रहेको कोष्ठहरूले सम्बन्धित कार्यालयहरूबाट तथ्यांक प्राप्त नभएको भन्ने जनाउँदछ ।

३. जिल्ला सरकारी वकील कार्यालयहरूबाट सम्पादित कार्यको विवरण, २०६९ वैशाख												
सि.नं	कार्यालयको नाम	मुद्दाको लगत, फछ्यौट र बाँकीको विवरण							पेशी सम्बन्धी विवरण			
		लगत	फछ्यौट					जम्मा	बाँकी	पेशीमा चढेको मुद्दा संख्या	बहस पेशी गरेको संख्या	सरकारी वकील बाट स्थागित पेशी संख्या
			कसूर वा दावी	कसूरमा सफाई वा दावी खारेज	मुलतवी तामेली	मुद्दा फिर्ता	मिलापत्र					
1	ताप्लेजुङ	129	42	9	0	0	0	51	78	266	217	49
2	पाँचथर	130	49	3	1	0	0	53	77	373	143	18
3	इलाम	191	81	8	4	0	0	93	98	##	399	35
4	भापा	716	90	4	0	0	0	94	622	933	859	21
5	तेह्रथुम	90	63	4	1	0	0	68	22	57	35	23
6	संखुवासभा	87	27	2	0	0	0	29	58	245	175	33
7	भोजपुर	78	12	2	0	0	0	14	64	193	99	14
8	धनकुटा	76	27	0	0	0	0	27	49	199	154	45
9	मोरङ				0	0	0	0	0			
10	सुनसरी							0	0			
11	सोलुखुम्बु	38	11	1	0	0	0	12	26			
12	ओखलढुङ्गा	61	11	8	3	0	0	22	39			
13	खोटाङ	67	18	6	0	0	0	24	43			
14	उदयपुर	227	39	21	6	0	0	66	161			
15	सप्तरी	641	25	0	0	0	0	25	616			
16	सिराहा	850	61	44	32	0	0	137	713			
17	रामेछाप	56	7	3	1	0	0	11	45			
18	सिन्धुली	121	32	3	0	0	0	35	86			
19	धनुषा	833	46	7	0	0	0	53	780			
20	महोत्तरी	378	71	12	3	0	0	86	292	467	381	29
21	सर्लाही	622	109	30	0	0	0	139	483			
22	रौतहट	540	68	40	0	0	0	108	432			
23	वारा	383	68	22	1	1	0	92	291			
24	पर्सा	810	223	49	2	0	0	274	536			
25	मकवानपुर				0	0	0	0	0			
26	चितवन	630	80	48	0	0	0	128	502			
27	दोलखा	118	43	4	3	0	0	50	68			
28	सिन्धुपाल्चोक	170	9	0	0	0	0	9	161			

29	काभ्रेपलाञ्चोक	275	0	0	0	0	0	0	275			
30	भक्तपुर	405	24	8	0	0	0	32	373			
31	ललितपुर							0	0			
32	काठमाडौं	5657	690	468	11	0	0	1169	###	###	2528	123
33	नुवाकोट	200	51	11	0	0	0	62	138			
34	रसुवा	45	12	6	0	0	0	18	27			
35	धादिङ					0	0	0	0			
36	गोर्खा	185	44	2	0	0	0	46	139	351	334	17
37	तनहुँ	242	88	9	1	0	0	98	144	569	8	68
38	लमजुङ	87	19	1	17	0	0	37	50	233	218	15
39	मनाङ	6	4	0	0	0	0	4	2	4	4	0
40	कास्की				0	0	0	0	0			
41	स्याङजा	132	66	14	0	0	0	80	52	314	307	7
42	मुस्ताङ	9	4	2	0	0	0	6	3	11	9	0
43	म्याग्दी	69	21	5	0	0	0	26	43	157	148	9
44	वाग्लुङ	231	39	12	0	0	0	51	180	268	217	16
45	पर्वत	79	11	4	19	0	0	34	45	166	61	9
46	पाल्पा	107	37		0	0	0	37	70			
47	गुल्मी	87	24	2	0	0	0	26	61			
48	अर्घाखाँची				0	0	0	0	0			
49	नवलपरासी	381	90	7	0	0	0	97	284			
50	रुपन्देही	874	0	0	0	0	0	0	874			
51	कपिलवस्तु	439	99	5	0	0	0	104	335			
52	दाङ	616	203	62	0	0	0	265	351			
53	सल्यान	54	14	5	0	0	0	19	35			
54	प्युठान	50	14	0	0	0	0	14	36			
55	रुकुम	70	5	1	0	0	0	6	64			
56	रोल्पा	53	16	6	0	0	0	22	31			
57	सुर्खेत	377	83	18	0	0	0	101	276			
58	दैलेख	68	12	5	0	0	0	17	51			
59	जाजरकोट	49	1	5	0	0	0	6	43			

60	बाँके				0	0	0	0	0			
61	बर्दिया	247	86	22	0	0	0	108	139			
62	डोल्पा	20	6	0	0	0	0	6	14	11	0	12
63	जुम्ला	33	2	2	0	0	0	4	29	39	24	6
64	मुगु	24	3	0	0	0	0	3	21	2	3	
65	हुम्ला	20	0	0	0	0	0	0	20	0	0	0
66	कालिकोट	14	3	0	6	0	0	9	5	25	22	5
67	बझाङ							0	0			
68	बाजुरा	26	11	0	0	0	0	11	15			
69	अछाम				0	0	0	0	0			
70	डोटी	26	9	4	1	0	0	14	12			
71	कैलाली	583	100	11	0	0	0	111	472			
72	कञ्चनपुर	305	48	9	0	0	0	57	248			
73	डडेल्धुरा	59	23	1	0	0	0	24	35			
74	वैतडी	34	3	3	0	0	0	6	28			
75	दार्चुला	40	11	4	1	0	0	16	24			

नोट : खाली रहेको कोष्ठहरूले सम्बन्धित कार्यालयहरूबाट तथ्यांक प्राप्त नभएको भन्ने जनाउँदछ ।

४. गतिविधिहरू

च्यथर्वा ऋयगचत या वाकतपुअभ की ऋजपुआ वाकतपुअभ या दृजगतवल, क्यलक त्यदनथभ को निमन्त्रणामा १३ देखि १७ अप्रिल २०१२ सम्म भुटान भ्रमणमा महान्यायाधिवक्ता श्री मुक्तिनारायण प्रधान जानु भएको थियो ।

पुनजप्तपुन ऋयचचगउतपुपुल पुल व ऋजवलनपुन ध्यचमि को आयोजनामा हडकडमा ९ मे देखि ११ मे सम्म भएको छतज ऋयचचगउतपुपुल कार्यक्रममा महान्यायाधिवक्ता श्री मुक्तिनारायण प्रधान र नायव महान्यायाधिवक्ता श्री सूर्यप्रसाद कोइराला सहभागी हुनु भयो ।

गुलपुतभम लुवतपुपुलक भुलखपुचयलकभलत एचयनचक १९८९० ले आयोजना गरेको ध्यचमि ऋयलनचभकक यल वाकतपुअभ, न्यखभचलभलअभ वलम वीवध ायच भुलखपुचयलकभलतर्वा वाकतवपुलवदपुपुतथ पुल च्य मभ वभलभचपुपु जघ बालभ, दृणुनुद लाई सफल बनाउन मलेशियाको कुवलालम्पुरमा १२-१३ अक्टोबर २०११ मा भएको एचभउवचवतयचथ ःभभतपुन मा नायव महान्यायाधिवक्ता श्री सूर्यप्रसाद कोइराला सहभागी हुनु भयो ।

बाल न्याय समव्वय समितिको तत्वावधान तथा संयुक्त राष्ट्र संघीय बालकोषको सहकार्यमा १२-२१ मे, २०१२ सम्म क्यगतज वचपुअव मा सञ्चालन भएको कुतगमथ तयगच तय क्यगतज वचपुअव तय ाकपुपुवचपुआभ धपुतज उचवअतपुअभक वलम वउउचयवअजभक पुल तजभ वचभव या वाकतपुअभ ायच ऋजपुमचभल कार्यक्रममा सहन्यायाधिवक्ता श्री धर्मराज पौडेल सहभागी हुनु भयो । अध्ययन भ्रमण प्रतिवेदन अनुसूची ५ मा समावेश गरिएको छ ।

५. सरकारी वकीलहरूको क्षेत्रीय वार्षिक कार्य समीक्षा तथा अनुशिक्षण कार्यक्रम

मध्यमाञ्चल (पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय पाटन बाहेक) र पूर्वाञ्चल विकास क्षेत्र अन्तर्गत कार्यरत सरकारी वकीलहरू)

कार्यक्रम स्थान: विराटनगर, मोरङ्ग

सञ्चालन मिति: २०६९/०१/१५-

१६

- अध्यक्षता - नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पुष्पराज कोइराला
- प्रमुख अतिथि - महान्यायाधिवक्ता श्री मुक्तिनारायण प्रधान
- विशेष अतिथि - माननीय नि.मुख्य न्यायाधीश श्री देवेन्द्रगोपाल श्रेष्ठ
- अतिथिहरू - नायब महान्यायाधिवक्ता श्री सूर्यप्रसाद कोइराला
- माननीय न्यायाधीश श्री कुमार चुडाल
 - माननीय न्यायाधीश श्री गिरिराज पौडेल
 - माननीय न्यायाधीश श्री रेवन्त कुँवर
 - माननीय न्यायाधीश श्री नरेन्द्रप्रसाद शिवाकोटी
 - क्षेत्रीय प्रशासक डा. कृष्णचन्द्र पौडेल
 - माननीय जिल्ला न्यायाधीश श्री चण्डिराज ढकाल
 - प्रमुख जिल्ला अधिकारी श्री तारानाथ गौतम
 - प्रहरी नायब महानिरीक्षक श्री सुरेन्द्रबहादुर शाह
 - प्रहरी नायब महानिरीक्षक (सशस्त्र) श्री सिंहबहादुर श्रेष्ठ
 - बरिष्ठ अधिवक्ता श्री कालीकुमार लाल
 - बरिष्ठ अधिवक्ता विपुलेन्द्र चक्रवर्ती
 - बरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामप्रसाद सिटौला
 - वारका पूर्वाञ्चल उपाध्यक्ष श्री सीताराम राई
 - पार्श्व श्री भरत थापा
 - जिल्ला अदालत वार इकाई अध्यक्ष डिल्ली कार्की

कार्यक्रम संयोजक - सहन्यायाधिवक्ता श्री राजनप्रसाद भट्टराई, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, विराटनगर

कार्यक्रम संचालक/सह-संयोजक - जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री कोषहरि निरौला, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, मोरङ्ग

न्यापोटर/प्रतिवेदन लेखन - शाखा अधिकृत श्री सोमकान्त भण्डारी, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय

१. उद्घाटन सत्र

मध्यमाञ्चल (पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय पाटन र अन्तर्गतका सरकारी वकील बाहेक), पूर्वाञ्चल विकास क्षेत्र अन्तर्गत कार्यरत सरकारी वकीलहरूको द्वि-दिवसीय क्षेत्रीय वार्षिक समिक्षा तथा अनुशिक्षण कार्यक्रम मिति २०६९ वैशाख १५ गते मोरङको विराटनगरमा शुभारम्भ भएको थियो । नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पुष्पराज कोइरालाको अध्यक्षतामा सञ्चालन भएको उक्त कार्यक्रमको प्रमुख अतिथि महान्यायाधिवक्ता श्री मुक्तिनारायण प्रधानले दीप प्रज्वलन गरी समुद्घाटन गर्नु भएको थियो । उक्त कार्यक्रममा सहन्यायाधिवक्ता श्री राजनप्रसाद भट्टराईले अतिथिगण, सहभागी, पर्यवेक्षक तथा उपस्थित सबैलाई स्वागत गर्नु भएको थियो ।

कार्यक्रममा पाल्नु भएका अतिथि नेपाल वार एशोसियसनका उपाध्यक्ष (पूर्वाञ्चल) श्री सीताराम राईले कार्यक्रममा वर्ष भरी सम्पादन भएका काम कारवाहीका सम्बन्धमा, भोगेका समस्या, कमी कमजोरी र भावी दिनका लागि सुधारका योजना निर्माण गर्न यस कार्यक्रमले सफलता हासिल गरोस् । पीडितलाई न्याय र पिडकलाई सजाय दिलाउने जिम्मेवारी अझ सशक्त ढंगले लैजान यस कार्यक्रमले सघाउ पुऱ्याउन सकोस् । सरकारी वकीलबाट सम्पादन भएका काम कारवाही सशक्त ढंगले तुलनात्मक रूपमा अगाडि बढ्न नसकेको र हामीबाट सम्पादन भएका काम कारवाहीका सम्बन्धमा केही गुनासो पनि सुनिन थालेका छन् । सरकारी वकीलको सेवा सुविधा वृद्धि र कार्यालयलाई स्रोत साधन सम्पन्न गर्ने लगायतका कार्यमा वारको तर्फबाट सहयोग, समन्वय हुने नै छ भन्दै कार्यक्रमको सफलताको शुभकामना व्यक्त गर्नु भएको थियो ।

कार्यक्रमका अतिथि प्रहरी नायब महानिरीक्षक श्री सुरेन्द्रबहादुर शाहले अपराधको अनुसन्धान कार्य पछिल्ला समयमा केही प्रभावकारी रहेको तथ्याकबाट देखिएको छ । फरार रहेका प्रतिवादीलाई पक्राउ गरी अपराधको नियन्त्रण र अपराधीलाई कानूनी दायरामा ल्याउन सक्रियता बढाइएको छ । सरकारी वकीलबाट समेत अनुसन्धान अधिकृतलाई अझ प्रभावकारी रूपमा निर्देशन प्राप्त हुने अपेक्षा गरिएको छ । अपराधको अनुसन्धान परम्परागत रूपमा गरिरहेका छौं । मुद्दासँग सम्बन्धित कामका लागि सम्पर्क अधिकृत तोक्यो काम कारवाही प्रभावकारी रूपमा लगिएको छ । कार्यक्रममा अपराध अनुसन्धान, मुद्दाको काम कारवाही, आवश्यक समन्वय र सहकार्य लगायतका विषयमा छलफल हुनेछ भन्दै कार्यक्रमले पूर्ण सफलता पाओस् भन्नु भयो ।

यसैगरी क्षेत्रीय प्रशासक (पूर्वाञ्चल) डा. कृष्णचन्द्र पौडेलले वर्षभरी सँगालेका अनुभव, छलफलको निचोड र भावी मार्ग दर्शनका रणनीतिका सम्बन्धमा कार्यक्रमले सफलता पाओस् भन्दै समाज जटिलता तर्फ उन्मुख छ, समाजले छिटोछिटो खोजी रहेकोमा सन्दर्भमा हाम्रा कारवाहीको परिणाम पनि छिटो चाहान्छन् । हाम्रा सक्रियताले सभ्य र न्यायिक समाज सिर्जना गर्ने कार्यमा यस कार्यक्रम महत्वपूर्ण हुनेछ । अर्ध न्यायिक निकायका पदाधिकारीहरू पनि कार्यक्रममा पर्यवेक्षकको रूपमा सहभागी हुनु भएको छ । अर्ध न्यायिक निकायमा सम्पादन गर्दा रहने त्रुटि सुधार गर्दै भावी दिनमा प्रभावकारी रूपमा न्याय सम्पादन गर्ने सक्ने गरी छलफल गरौं । हामी बीच सहकार्य र समन्वय गरी छिटो छरितो न्याय सम्पादन गर्ने कार्यमा यस कार्यक्रम महत्वपूर्ण हुने अपेक्षा गरेको छु भन्नु भयो ।

कार्यक्रमका विशेष अतिथि माननीय नि. मुख्य न्यायाधीश श्री देवेन्द्रगोपाल श्रेष्ठले आफ्नो सरकारी सेवाको सुरुवात सरकारी वकीलबाटै भएको स्मरण गर्दै सरकारी वकीलले तथ्य, प्रमाण र कानूनका आधारमा कार्य सम्पादन गर्ने र मुद्दाको कारबाहीलाई अगाडि बढाउनु पर्दछ । प्रमाण बिना मुद्दा चलाउने वा पुनरावेदन, निवेदन मात्र गर्नु हुँदैन । कूटपिट, अंगभंग कूटपिट र ज्यान मार्ने उद्योग बीचको अन्यौलताका सम्बन्धमा कार्यक्रममा छलफल होस् भन्नु हुँदै कार्यक्रमको सफलताको शुभकामना व्यक्त गर्नु भयो ।

कार्यक्रमका प्रमुख अतिथि महान्यायाधिवक्ता मुक्तिनारायण प्रधानले अतिथि, सहभागी, पर्यवेक्षक तथा सम्पूर्ण महानुभावहरूलाई उपस्थितिका लागि धन्यवाद ज्ञापन गर्नु हुँदै कुनै पनि कार्यक्रम सामाजिक संरचनासँग जोडिँदैन भने त्यसको सार्थकता रहँदैन । कार्यक्रमलाई औपचारिकतामा मात्र हेरिनु हुँदैन । संक्रमणकालीन वर्तमान समय अनुसार व्यवस्थापन गर्ने सोच राखी हामीले कार्यक्रमलाई लिनु पर्दछ । हामी सबैको उद्देश्य जनतालाई न्याय प्रदान गर्ने नै हो । संक्रमणकालीन समयमा हामीले कसरी काम गरी रहेका छौं, आफैले सोच्नु पर्दछ । जनताको न्यायको तिर्खा मेटाउन सक्ने गरी हुनु पर्दछ ।

एकात्मक सोच र शैलीमा संचालित संरचनालाई विविधता र समावेशीको रूपमा बनाउनु पर्दछ । मनोगत संरचना, प्रणालीको काम गर्न खोज्नु हुँदैन । प्रभावकारी फौजदारी न्याय प्रणालीका सम्बन्धमा हामी सबैले सोच्नु पर्दछ । अनुसन्धानकर्ता, अभियोजनकर्ता, न्यायाधीश सबै न्यायकर्मी हौं । हामीले विगतका त्रुटि कमजोरी के कति भयो ? त्यसलाई विचार गरी नयाँ ढंगले ठोस सुधार गर्ने सोचका साथ काम गर्नु पर्दछ । जनउत्तरदायी, पारदर्शिता (सुनवाइ र प्रमाण संकलन), जन अनुमोदित हुनु पर्दछ र त्यही अनुसार हामी व्यावहारिक रूपमा रूपान्तरित हुनु पर्दछ । कार्यक्रममा पेश हुने कार्यपत्रहरू पनि त्यही अनुरूप हुनेछन् । हालको फौजदारी न्याय प्रणाली सन्तोषजनक रूपमा अगाडि बढाउन सकिएको छैन । हामीले निश्चित अनुसन्धान पद्धति (चक्रभबचअज नभतजयमययिनथ) अपनाउन सकेका छैनौं । यस सम्बन्धमा सर्वेक्षण (काचखभथ) गरेका छैनौं । दबाव बिना काम नगर्ने, योजना, पद्धतिमा काम नगर्ने हुँदा काम कारबाहीहरू प्रभावकारी भएका छैनन् । अपराधको अनुसन्धान देखि नै समस्या छ, राजनीतिक दबाव, सामाजिक सोचले जटिलता उत्पन्न भएको छ । यसका लागि तत्काल क्षेत्रीय र केन्द्रीय तहमा अनुसन्धान व्युरो गठन गर्नु पर्दछ । अपराधको अनुसन्धान विज्ञान, प्रविधि र प्रमाणले पुष्टि हुनु पर्दछ । भावी संविधानमा सरकारी वकीलको सेवा सर्तको स्पष्ट व्यवस्था गरी तत्तत् न्यायाधीश सरहको सेवा, सुविधा र सर्तको व्यवस्था हुनु आवश्यक छ । यसमा राज्यले कन्जुस्याई गर्नु हुँदैन । संस्थालाई यसरी नै उपेक्षा गरिरहने हो भने संस्था विगठन हुने अवस्थामा पुग्दछ । संरचना, जनशक्ति, प्रविधि र विज्ञानलाई आधार बनाएर हामी नयाँ ढंगबाट जानु पर्दछ । सरकारी वकील फौजदारी न्याय प्रणालीको कार्य बाहक भएकाले देशको आर्थिक समृद्धि र सुशासनका लागि समेत आफ्नो जिम्मेवारी निर्वाह गरौं भन्नु भयो ।

उद्घाटन सत्रको अध्यक्षता गर्नु भएका नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पुष्पराज कोइरालाले समापन मन्तव्य व्यक्त गर्नु हुँदै दुई दिनसम्म सञ्चालन हुने यस कार्यक्रममा चार वटा कार्यपत्र

समावेश हुनेछन् । हामी सबै न्याय कर्मी हौं । सबैको मुख्य उद्देश्य न्याय दिलाउने नै हो । हामी सबैले आफ्नो कार्य प्रकृति अनुसार विभिन्न काम कारवाही र निर्णय गरिरहेका हुन्छौं । सबै काम न्यायिक आधारमा नै गर्दछौं । व्यक्तिको दृष्टिकोण अनुसार निर्णयमा केही फरक हुन सक्छ । त्यसकारण पुनरावेदन/निवेदन गर्ने गरिन्छ । न्यायको लागि तहगत परीक्षण आवश्यक हुन्छ । हामी बीच रहेका त्रुटिलाई हटाई जनतालाई न्याय दिलाउने कार्यमा यस कार्यक्रममा छलफल सहित निष्कर्षका रूपमा पारित प्रस्तावहरूलाई कार्यान्वयनमा लगिनेछ । हामीलाई दिएको जिम्मेवारी जनताप्रति उत्तरदायी रही काम गरौं । निमन्त्रणा स्वीकार गरी पाल्नु हुने सबैमा धन्यवाद व्यक्त गर्दै उद्घाटन कार्यक्रम विसर्जन भएको घोषणा गर्नु भएको थियो ।

२. कार्यपत्र प्रस्तुति सत्र

प्रथम खण्ड

अध्यक्षता

- नायब महान्यायाधिवक्ता श्री सूर्यप्रसाद कोइराला

सहजकर्ता

- नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पुष्पराज कोइराला

कार्यपत्र प्रस्तुतकर्ता

- जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री सञ्जीवराज रेग्मी, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, चितवन

अपराधको अनुसन्धान एवं अभियोजन देखिएका सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक समस्या र समाधानका उपायहरू विषयमा प्रस्तुत गर्नु भएको कार्यपत्र अनुसूची ३ (क) मा समावेश गरिएको छ ।

सहभागीहरूबाट छलफल

सहन्यायाधिवक्ता श्री विनोदकुमार पोखरेल, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, जनकपुर

- पुरक अभियोगपत्र धेरै समयदेखि चुनौतीको रूपमा रही आएको छ, यो हामीले प्रयोग गर्न मिल्ने नमिल्ने के हो भन्ने विषय कार्यपत्रमा समावेश हुन पर्ने,
- हातहतियार लगायतका मुद्दाहरूमा निर्णय हुने निकायहरूबाट जथाभावी निर्णय (कसैलाई जरिवाना र कसैलाई कैद समेत) भएको देखिन्छ, यसले समस्या सिर्जना भएको छ,
- अपहरण मुद्दामा मुलतवी, तामेली राख्न सक्ने कानूनी व्यवस्था छैन, यसले अस्पष्टता ल्याएको छ,
- हामी कुन पद्धतिबाट अपराधको अनुसन्धान र अभियोजन तथा न्याय सम्पादन गरिरहेका छौं, स्पष्ट हुनु पर्दछ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री मुकुन्दप्रसाद अधिकारी, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, सर्लाही

- अनुसन्धान तहकिकातको लागि सरकारी वकीलले निर्देशन दिएको संख्या ३% मात्र देखिएको छ । यो लिखित निर्देशन संख्या हो । हामी निरन्तर रूपमा मौखिक निर्देशन दिने गरिएको हुँदा यो संख्याले सही अर्थ दिन सक्दैन,
- अनुसूची बाहिरका मुद्दाको सम्बन्धी विषयहरू कार्यपत्रमा समावेश भएको देखिदैन,
- अंगभंग सम्बन्धी मुद्दाको परिभाषा फराकिलो पारी सरकार वादी मुद्दाको रूपमा अभियोजन गर्नु पर्ने,

- सार्वजनिक अपराध मुद्दामा प्रमुख जिल्ला अधिकारीले हदम्याद दिने व्यवस्था व्यावहारिक छैन, यसमा ध्यान दिनु पर्ने देखिन्छ,
 - अनुसन्धान अधिकारी र सरकारी वकीलको समन्वयबाटै सफलता हासिल हुन्छ,
- प्रहरी निरीक्षक श्री मदन यादव, जिल्ला प्रहरी कार्यालय, सिन्धुली**
- मुचुल्काको रोहवरमा साक्षी नराखेकै कारण मुद्दा कमजोर हुनु हुँदैन,
 - सरकारी वकील पनि घटनास्थलमा जानु पर्ने र आवश्यक निर्देशन दिने कानूनी व्यवस्था हुनु पर्दछ,
 - मुद्दा नचलाउने निर्णय गर्नु भन्दा मुद्दा पुनः अनुसन्धानका लागि अनुसन्धान अधिकारी समक्ष पठाउन उपयुक्त हुन्छ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री परमेश्वर पराजुली, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, धनुषा

- जाहेरी दरखास्त परे पछि अनुसन्धान प्रारम्भ गर्दा प्रतिवादी पक्राउ नगरेसम्म अरु अनुसन्धानको काम गरिदैन, यसले अनुसन्धानको प्रक्रिया नै त्रुटिपूर्ण बनाएको छ,
- प्रतिवादी पक्राउ पूर्व पनि आवश्यक सबुद प्रमाण संकलन र परीक्षणको कार्य, मानिस बुझ्ने आदि काम गर्न सकिन्छ,
- अनुसन्धानको निश्चित म्याद कानूनमा उल्लेख छ तर अभियोजनका लागि कानूनमा म्याद तोकिएको छैन, यसकारण अनुसन्धान र अभियोजनको समय स्पष्ट विभाजन गर्नु पर्दछ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री चन्द्रबहादुर सापकोटा जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, मकवानपुर

- मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐनमा शोषणको परिभाषामा यौन शोषणलाई समेटेको छैन, तर हामी जबरजस्ती अभियोजन गरिरहेका छौं,
- त्यस्तै दुरुत्साहन, मतियार, षडयन्त्रलाई ऐनमा कसूर हुने गरी समावेश गरेको छैन,
- नागरिकता कित्तैको मुद्दा नागरिकता ऐन वा कित्तैको महल अनुसार कारवाही हुने हो ? अन्यौल देखिन्छ,
- जबरजस्ती करणी, लागू औषध लगायतका मुद्दामा उमेरको विवाद धेरै देखिने गरेको छ, स्थानीय स्तरमा विशेषज्ञ नहुने र काठमाडौं पठाउन खर्च अभावले समेत समस्या थपिएको छ,
- नागरिक समाजको भूमिकालाई पनि कार्यपत्रमा समावेश गर्नु पर्दथ्यो,

उपन्यायाधिवक्ता श्री शिवबहादुर रानाभाट, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, राजविराज

- हामीले अवलम्बन गरेको पद्धति अनुसार प्रतिवादीको चुप लाग्न पाउने अधिकार र अभियोजनकर्ताले शंकारहित तवरले दोषी प्रमाणित गर्नु पर्ने हुन्छ,
- हाम्रो मुख्य उद्देश्य न्याय नै हो, अवलम्बित प्रणालीमा रहेका कानूनी र व्यावहारिक पाटोलाई सोही अनुसार हेरिनु पर्दछ,
- अनुसन्धानको काम बाध्यात्मक भन्दा तजविजीमा रहेको छ, अनुसन्धानको जगमा अभियोजन र निर्णय हुने हुँदा अनुसन्धानको कार्यलाई बढी जिम्मेवार भई गर्नु पर्दछ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री खडानन्द गौतम, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, महोत्तरी

- जबरजस्ती करणी मुद्दालाई अदालतले आशय करणीमा परिणत गर्ने गर्दछ, त्यसकारण आशय करणीलाई पनि सरकारी मुद्दा सम्बन्धी ऐनको अनुसूची १ मा समावेश गर्नु पर्दछ,
- मानव अपहरणका मुद्दा बढिरहेको देखिन्छ, यस प्रकृतिका मुद्दामा रहेका प्रतिवादीलाई वारेन्ट जारी हुने कानूनी व्यवस्था आवश्यक छ, अनुसन्धान गर्दा पनि बढी संवेदनशील भई गर्नु पर्दछ,

उपन्यायाधिवक्ता श्री पुण्यप्रसाद पाठक, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, धनकुटा

- निर्णयकर्ताको स्वविवेकीय अधिकार अन्तर्गत भएका निर्णयमा विवेक नै प्रयोग भएको अवस्था छैन भने पुनरावेदन गर्ने वा नगर्ने ?
- जबरजस्ती करणी उद्योग र आशय करणी बीच स्पष्ट विभाजन ल्याउन गाह्रो देखिन्छ, स्पष्ट हुने गरी व्यवस्था हुन आवश्यक छ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री नारायणबहादुर थापा, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, सिन्धुली

- अनुसन्धानको क्रममा म्याद थपको लागि प्रहरी सरकारी वकील मार्फत नगई सिधै जाने गरेको छ,
- साक्षीले प्रतिकूल (ज्यक्तर्षभ) बकपत्र गर्ने र त्यसबाट मुद्दा नै प्रभावित भैरहेको सन्दर्भमा पीडित, साक्षीको सुरक्षा, प्रतिकूल बकपत्र गर्ने साक्षीलाई कडा सजाय हुने आदि विषय समेटि कानून बनाउन आवश्यक छ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री लोकराज पराजुली, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, सप्तरी

- सामान्यतः मुद्दाको अभियोजन सम्बन्धी निर्णय गर्दा प्राय मुद्दा चलाउने गरी निर्णय हुने गरेको छ, हामीले हाम्रो अभियोजन गर्ने निर्णयाधिकार सही रूपमा प्रयोग गर्न नसकिएको हो कि जस्तो देखिन्छ,
- एगदण्डि प्लतचभकत लाई समेत विचार गरी अभियोजन सम्बन्धी निर्णय गर्नु पर्दछ,

सहन्यायाधिवक्ता श्री शंकरराज बराल, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, हेटौँडा

- लोपोन्मुख तथा पर्यावरणका विषयमा सजाय गर्दा कठोर निर्णय हुन आवश्यक छ,
- बकपत्र गर्ने कार्यमा हाम्रो चासो कम देखिएको छ, भौतिक सबुदको अभावमा साक्षी परीक्षणबाट ठोस निष्कर्ष निकाल्न सकिने हुँदा यसमा ध्यान दिनु पर्दछ,

स्पष्ट पार्नु हुँदै कार्यपत्र प्रस्तुतकर्ता सञ्जीवराज रेग्मी

- पुरक अभियोग मात्रै होइन, नयाँ सबुद, तथ्य फेला पारेमा अभियोग नै संशोधन गर्ने अभ्यास भएको अन्यत्र देखिएको छ, त्यसलाई हामीले पनि अवलम्बन गर्न सक्छौं,
- मानव बेचबिखन सम्बन्धी कानूनमा कानूनी छिद्रता रहेका छन्, यस अभियोगका प्रतिवादीलाई वारेन्ट जारी हुने व्यवस्था आवश्यक छ,

- अनुसूची बाहिरका मुद्दामा अनुसन्धान भन्नु कमजोर रहेको छ,
- नागरिकता कित्ते गरेको मुद्दा नागरिकता ऐनले संबोधन गर्दछ,
- हामीले मिश्रित प्रणाली अपनाएका छौं,
- हामी अनुकूल कानून खोज्नु हुँदैन,
- स्वविवेकीय निर्णय उपर पुनरावेदन लाग्दैन तर स्वेच्छाचारी निर्णय विरुद्धमा पुनरावेदन गर्न सकिन्छ,

■ जबरजस्ती करणी उद्योग र आशय करणी एउटै होइन,

■ म्याद थपको काम सरकारी वकील मार्फत जाने अभ्यास केही रूपमा बढेको छ,

अध्यक्ष नायब महान्यायाधिवक्ता श्री सूर्यप्रसाद कोइराला (प्रथम खण्डको समापन सहित)

- आफू अनुकूल कानून खोज्नु हुँदैन, कानून जनताका लागि हो, हामी कार्यान्वयनकर्ता मात्र हौं,
- हामीले विचार विमर्श गर्दा सर्वसाधारण प्रति उत्तरदायी भई गर्नु पर्दछ,
- प्रविधि, संचार तथा कार्य प्रकृति अनुसार मौखिक रूपमा निर्देशन दिइने हुँदा लिखित निर्देशन कम हुन गएको देखिन्छ,
- जबरजस्ती करणी मुद्दाका पीडितले पछि बकपत्र गर्दा प्रतिकूल (ज्यक्तर्षभ) हुने गरी बकपत्र गर्ने क्रम बढी रहेको हुँदा पीडितको बकपत्र अभियोग पेश हुँदा साथ गर्ने व्यवस्था हुनु पर्दछ,
- पीडितले प्रतिकूल बकपत्र गरे पनि मुद्दा यच्चधबचम नगर्नु हुँदैन,
- म्याद थप गर्न सरकारी वकील मार्फत जाने कुरा निर्देशनबाट गरिएको व्यवस्था हो, यसमा प्रहरीको महानिरीक्षकले विभागीय निर्देशन दिएको हुँदा यसलाई अनुशरण गर्नु पर्दछ,

दोस्रो खण्ड

अध्यक्षता - नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पुष्पराज कोइराला

कार्यपत्र प्रस्तुतकर्ता - सहन्यायाधिवक्ता श्री राजनप्रसाद भट्टराई, पुनरावेदन सरकारी वकील

कार्यालय, विराटनगर

रिट निवेदनको क्षेत्राधिकार विस्तारका सन्दर्भमा सरकारी वकीलको भूमिकामा चुनौती र तत्सम्बन्धमा चाल्नु पर्ने कदमहरू विषयमा प्रस्तुत गर्नु भएको कार्यपत्र अनुसूची ३ (ख) मा समावेश गरिएको छ।

सहभागीहरूबाट छलफल

सहन्यायाधिवक्ता श्री विनोदकुमार पोखरेल, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, जनकपुर

- रिट क्षेत्राधिकारको विस्तारले मुद्दा तथा रिटको चाप बढाएको छ, यस अनुसार दरबन्दी थप हुन आवश्यक छ,

- रिटले सरकारी वकीललाई मात्र होइन, न्यायाधीशलाई समेत अन्यायलता र समस्या पारेको देखिन्छ, यसलाई न्युनीकरण गर्न तालिम प्रदान गरिनु आवश्यक छ,
- बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदनमा म्याद थप गर्न पाइन्छ, व्यावहारिक रूपमा कसरी व्यवस्थापन (:बलबनभ) गर्ने चुनौती रहेको छ,
- सार्वजनिक मुद्दामा हदम्यादको समस्या देखिएको छ,
- सवारी तथा यातायत व्यवस्था ऐनले सवारी दुर्घटनाबाट भएको क्षतिपूर्तिको मुद्दा सरकारी मुद्दा सम्बन्धी ऐन, २०४९ को अनुसूची १ मा समावेश गरी प्रमुख जिल्ला अधिकारी समक्ष मुद्दा निर्णयका लागि लग्ने व्यवस्था गरेको छ, क्षतिपूर्ति अपराध हो होइन ? यसमा थुनछेकसम्म गरिन्छ, यस्ता मुद्दाहरूमा समेत बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदन आउने गर्दछ,
- यस विषयमा अदातल पनि अन्यायको अवस्थामा रहेको छ, यसका लागि महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयबाटै स्पष्टता आउनु पर्ने देखिन्छ,
- भौगोलिक क्षेत्राधिकार बाहिरका निकायलाई पनि विपक्षी बनाएका रिटलाई कसरी हेर्ने,
- शिक्षक नियुक्ति लगायतका विषयमा शिक्षा ऐनमा समस्या रहेको देखिन्छ,

सहन्यायाधिवक्ता श्री बलराम शर्मा, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, धनकुटा

- निवेदक र विपक्षी बीच मिलेमतोमा लिखित जवाफ आउने गरेको देखिन्छ, यसले प्रतिरक्षामा समस्या सिर्जना गरेको छ,
- सम्बन्धित सरोकारवाला निकाय र सरकारी वकीललाई प्रशिक्षण दिनु पर्दछ,
- सम्बन्धित निकायलाई जवाफदेही बनाउनु पर्दछ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री मुकुन्दप्रसाद अधिकारी, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, सर्लाही

- कार्यालय प्रमुखहरूले जानाजान गलत काम गरेकोले पनि रिट बढेको छ, तर ती सबै गलत कामको वाकतपष्त्रवतप्यल हामीले गर्नु परेको छ,
- हामीले गरिने प्रतिरक्षामा म्फबचअवतप्यल गर्नु पर्ने देखिन्छ,
- रिटले कानूनी समस्यासँगै व्यावहारिक जटिलता थपिएको छ,
- जिल्ला अदालतले रिट निवेदनमा पूर्ण रूपमा आदेश गर्न सकेको अवस्था छैन,
- दरबन्दी थप हुनु पर्ने देखिन्छ,

सहन्यायाधिवक्ता श्री शंकरराज बराल, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, हेटौँडा

- रिट निवेदन सम्बन्धी हदम्याद, हकदैयाका सम्बन्धमा कार्यपत्रमा समावेश भएको देखिदैन,
- निवेदकहरू एक तह निवेदन दिई चित्त नबुझेमा पुनरावेदन नगर्ने माथिल्लो अदालतमा पुनः निवेदन दिने गरेको देखिन्छ, यसलाई कसरी व्यवस्थापन गर्ने सोच्नु पर्दछ,
- रिट निवेदनको विस्तारसँगै सैद्धान्तिक र व्यावहारिक समस्याहरू देखा परेका छन्,

सहन्यायाधिवक्ता श्री खगराज पौडेल, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, राजविराज

- विपक्षी बनाएका सबै निकायले लिखित जवाफ पेश नगर्ने, बाकिने गरी पेश गर्ने हुँदा प्रतिरक्षामा समस्या देखिएको छ,
- कार्यबोझ र मुद्दाको चाप अनुसार दरबन्दी कम छ, थप गर्नु पर्दछ,
- सरोकारवाला निकायलाई समेत तालिमको व्यवस्था हुनु पर्दछ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री गोपिचन्द्र भट्टराई, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, सिराहा

- रिट जारी हुने नहुने अवस्थाका सम्बन्धमा कार्यपत्रमा उल्लेख भएको छैन,
- लिखित जवाफ कमजोर भएका कारण प्रतिरक्षा राम्रो हुन सकेको छैन, हामी आफैले सहयोग गर्नु पर्ने देखिन्छ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री चिरिञ्जीवी पराजुली, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, धनकुटा

- सरकारी वकीललाई प्रतिरक्षा गर्नको लागि सम्बन्धित निकायहरूले आवश्यक समन्वय र सहकार्य गरेको देखिदैन,
- लिखित जवाफ साथ आवश्यक कागजात नहुनु, खुलाउनु पर्ने कुराहरू लिखित जवाफमा नआउनु,
- ढाँचा समेत मिलेको देखिदैन, हुलाकबाट समेत लिखित जवाफ आउने गरेको छ, यसकारण उनीहरूलाई नै जवाफदेही बनाउन आवश्यक छ, साथै लापरवाही गर्ने, जिम्मेवारी बहन नगर्ने निकाय वा कार्यालय प्रमुखलाई कारवाही गर्ने व्यवस्था हुनु पर्दछ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री ओमप्रसाद अर्याल, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, पर्सा

- लामो विदामा अदालत खुला रहँदा हामीले कार्यालय कसरी सञ्चालन गर्ने विभागीय स्पष्टता हुनु पर्दछ,
- अदालतले म्याद तामेल गर्दा नजिकको आफैले र टाढाको सरकारी वकील मार्फत तामेल गर्न पठाउने गरेको छ,

सहन्यायाधिवक्ता डा. टेकबहादुर घिमिरे, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, इलाम

- रिट निवेदन सम्बन्धी समस्याका विषयमा नेपालगञ्ज सम्मेलनमा पनि छलफल भएको थियो, सम्मेलनमा भएको छलफलबाट केही कुराहरू निष्कर्षको रूपमा आएको छ,

नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पुष्पराज कोइराला (दोस्रो खण्डको समापन सहित)

- पूर्ण कुनै चिज हुँदैन, थप्दै जाने हो, यसलाई निरन्तर रूपमा लैजानु पर्दछ,
- रिट निवेदन गुमेको हक अधिकार स्थापित गराउन दिइन्छ,
- जिल्ला तथा पुनरावेदन तहमा रिट क्षेत्राधिकार कानून बमोजिम प्राप्त अधिकारक्षेत्र हो, असाधारण अधिकारक्षेत्र होइन,
- पुनरावेदन र जिल्ला तहको रिट निवेदन कानूनी र भौगोलिक दायरामा रही हेरिनु पर्दछ,
- रिट निवेदनमा पनि हकदैया र विलम्बको प्रश्न हेरिनु पर्दछ,
- रिटसँग केही सिद्धान्तहरू गाँसिएका हुन्छन्, सबै विषय रिटबाट हेरिदैन,

- रिटको क्षेत्राधिकारसँगै सरकारी वकील र सहायक कर्मचारीहरूको दरबन्दी थप गर्न संगठन तथा व्यवस्थापन सर्वेक्षण (इ७) गरी दरबन्दी थप गर्नु पर्दछ,
- रिटसँग सम्बन्धित जानकारीमूलक तालिम सरकारी वकील तथा कर्मचारी सबैलाई आवश्यक छ, केही सरकारी वकीललाई तालिम प्रदान गरी सकिएको छ, यसलाई निरन्तर रूपमा लैजानु पर्दछ,
- सवारीको क्षतिपूर्ति प्रमुख जिल्ला अधिकारी कहाँ लैजाने व्यवस्था तत्कालीन समस्या समाधानका लागि गरिएको व्यवस्था हो, अब कानून संशोधन गरी अभियोग मागदावी साथ क्षतिपूर्ति माग गर्नु पर्दछ,
- हामीले कानूनको संरक्षण गर्ने हो, कसैको गैरकानूनी कामको प्रतिरक्षा गर्ने होइन,
- कुनै सरकारी पदाधिकारीले उसलाई प्राप्त जिम्मेवारी पालना गर्दैन भने सरकारी वकीलले प्रतिरक्षा गर्न सक्दैन, कानून बमोजिम भएका निर्णयहरूलाई प्रतिरक्षा गर्ने हो,

तेस्रो खण्ड

समुपस्थिति/टिप्पणीकर्ता - महान्यायाधिवक्ता मुक्तिनारायण प्रधान

अध्यक्षता

- नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पुष्पराज कोइराला

कार्यपत्र प्रस्तुतकर्ता - सहन्यायाधिवक्ता डा. टेकबहादुर घिमिरे, पुनरावेदन
सरकारी वकील कार्यालय, इलाम

महिला, दलित र बालबालिका सम्बन्धी कानून कार्यान्वयनमा देखा परेका समस्या र समाधानका
उपायहरू विषयमा प्रस्तुत गर्नु भएको कार्यपत्र अनुसूची ३ (ग) मा समावेश गरिएको छ।

सहभागीहरूबाट छलफल

सहन्यायाधिवक्ता श्री बलराम शर्मा, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, धनकुटा

- राज्यको नीति लोक कल्याणकारी रूपमा रहेको छ, राज्यको नीति कार्यान्वयन गर्ने विभिन्न
निकायहरू रहेका छन्,
- महिला महिला बीच भिन्नता रहेको छ, दलित दलित बीच भिन्नता रहेको छ,
- बालबालिकाको उमेरका सम्बन्धमा समस्याहरू रहेका छन्, कित्ते काम गरी उमेर घटबढ गराउने
गरेको पाइन्छ,

सहन्यायाधिवक्ता श्री विनोदकुमार पोखरेल, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय,
जनकपुर

- महिला, दलित, बालबालिका सम्बन्धमा सरकारी वकीलको भूमिकाका सम्बन्धमा कार्यपत्रमा
समावेश गरेको देखिदैन,
- घरेलु हिंसा सम्बन्धी विवादमा कानूनी राय बाहेक हाम्रो सम्लग्नता रहदैन,
- बालबालिका अभिभावकलाई बुझाउने कि बाल सुधार गृह पठाउने स्पष्ट छैन, बाल सुधार गृह
क्षेत्रीय स्तरमा स्थापना गर्न नेपाल सरकारलाई अनुरोध गर्नु पर्ने देखिन्छ,

शाखा अधिकृत श्री प्रेमप्रसाद न्यौपाने, पुनरावेदन अदालत विराटनगर

विद्यमान कानून र कार्यान्वयनमा के कस्ता समस्या छन्, कार्यपत्रमा समावेश भएको देखिएन,
उपन्यायाधिवक्ता श्री हिमालयकुमार त्रिताल, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय,
विराटनगर

- कार्यपत्रमा महिलासँग न्मलमभच दलितसँग उत्पत्ति र बालबालिका सम्बन्धमा बाखभण्डिभ
वगकतधभ सम्बन्धी पृष्ठभूमि/इतिहास सम्बन्धी कुराहरू कार्यपत्रमा नभएको देखिन्छ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री परमेश्वर पराजुली, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय,
धनुषा

- कार्यपत्रमा सैद्धान्तिक रूपमा विषय समावेश भए पनि व्यावहारिक कुराहरू कम देखिएका छन्,
- जातीय भेदभाव तथा छुवाछुत सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था कार्यपत्रमा समेटिएको छैन,
- घरेलु हिंसा सम्बन्धी, जेष्ठ नागरिक सम्बन्धी ऐनका कुराहरू समावेश भएको भए राम्रो हुन्थ्यो,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री लोकराज पराजुली, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय,
सप्तरी

- सबै किसिममा जातीय भेदभाव गर्ने महासन्धि छुटेको छ,
- बालबालिका सम्बन्धी व्यवस्थाहरू समावेश भए पनि त्यही तुलनामा दलित र महिलाका कुराहरू कम देखिएका छन्,
- जसको हकहितमा बसेको छ, उनीहरूलाई चेतना फैलाउन हामी कति गर्न सक्छौं र राष्ट्रियस्तरमा के कसरी हुन सक्छ, विचार गर्नु पर्दछ,

उपन्यायाधिवक्ता श्री टेकबहादुर कार्की, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय,
जनकपुर

- विषय बढी विस्तृत भयो ? विषयवस्तुमा ऋभिवच नै भएको देखिएन, कार्यपत्र कउभअषअ हुन सकेन,
- छुट्टाछुट्टै विषयमा कार्यपत्र तयार गर्न उपयुक्त हुन्छ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री खडानन्द गौतम, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय,
महोत्तरी

- सशस्त्र द्वन्द्वमा बालबालिकाको प्रयोग सम्बन्धी व्यवस्था छुट भएको छ,
- नेपाल सरकारले बालबालिका, महिला र दलित सम्बन्धी योजना र नीति ल्याएको छ, ती कुराहरू समावेश हुनु पर्दछ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री गोपिचन्द्र भट्टराई, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय,
सिराहा

- महिला, दलित, बालबालिका कमजोर वर्गहरू हुन, उनीहरूको संरक्षण सम्बन्धमा छलफलको विषय सान्दर्भिक नै छ,
- राष्ट्रिय कानूनका व्यवस्थाहरू छुटे जस्तो छ, समावेश गर्न उपयुक्त हुन्छ,
- सर्वोच्च अदालतबाट भएका निर्णयहरू पनि कार्यपत्रमा समावेश हुनु पर्दछ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री सञ्जीव रेग्मी, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, चितवन

- समावेशी सम्बन्धी कानून र नीतिहरू पनि समावेश गर्न सकिन्छ,
- छुट्टाछुट्टै सम्बन्धी महान्यायाधिवक्ताको वार्षिक प्रतिवेदनमा उल्लेखित तथ्यांक समावेश गर्न सकिन्छ,

महान्यायाधिवक्ता श्री मुक्तिनारायण प्रधान (तीनवटै कार्यपत्र उपर टिप्पणी गर्नु
हुँदै)

- हाम्रो बढी तयारी सामग्री जुटाउन तिर भयो, समस्यातर्फ केन्द्रित हुन सकेनौं,
- हाम्रा अनुभवहरूलाई कार्यपत्रमा समावेश गर्नु पर्दछ, अनुभव अत्यन्त महत्वपूर्ण हुन्छ,
- कार्यक्रममा विगतको अनुभव र भावी योजना सहित मातहतमा समेत राय सल्लाह लिई तय गर्न उपयुक्त हुन्छ,

- हामी कहाँ भूगोल, आर्थिक, सामाजिक संरचना समान छैन, सरकारी मुद्दा सम्बन्धी ऐनमा यी कुराहरूलाई ध्यान नदिई तर्जुमा गरिएको छ,
 - अपराध अनुसन्धान र अभियोजन सबल, प्रभावकारी, सक्षम हुन सकेको छैन,
 - हाम्रा अभियोजनमा त्रुटि रहेको देखिन्छ, हामीले सम्पादन गरेका कामको समीक्षा हुनु पर्दछ,
 - मुद्दामा प्रभाव प्रमाणले होइन, विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक चलखेलले पारेको देखिन्छ,
 - हामी अभियोजनकर्ता मात्र होइन, निर्णयकर्ता पनि हौं, हाम्रो निर्णयमा मात्र अदालतले पुनरावलोकन गर्ने हो, त्यसकारण राज्यको तर्फबाट पहिलो निर्णय हामीले गरेका छौं,
 - निर्दोष व्यक्तिले सजाय पाई दस, पन्ध्र वर्ष पछि सफाइ पाएमा त्यसको जिम्मेवारी कसले लिने ? यसलाई गंभीर रूपमा सोच्नु पर्दछ,
 - अदालत र अनुसन्धानको नियन्त्रणात्मक अधिकार सरकारी वकीलको भूमिकामा अडेको हुन्छ,
 - महिला, दलित, बालबालिकालाई राज्यले गहनाको रूपमा राखेको छ,
 - यिनीहरूसँग सम्बन्धित कानून छुन् तर ती प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन भएका छैनन्,
 - महिला, बालबालिका र दलितलाई अधिकार सम्पन्न बनाउनु पर्दछ,
 - अधिकार बढी रहेका छुन् तर यिनीहरूसँग सम्बन्धित घटनाहरू पनि बढी रहेको देखिन्छ,
 - विद्यमान कानूनमा कहाँ कहाँ छिद्रता रहेका छुन् हेर्नु पर्दछ,
 - दलित त्याग सम्बन्धी कानूनको अभाव छ, दलित उन्मूलन गर्नु पर्दछ,
 - उनीहरूलाई राज्यले विशेष सुविधा दिनु पर्दछ, दलित भएको सुविधा लिने तर दलित होइन भन्न नसक्ने अवस्था रहनु हुँदैन,
 - बालबालिका सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था कार्यान्वयन भएको छैन, समस्या के छुन् ? वास्तविक धरातलमा रही कानून निर्माण हुन पर्दछ,
 - बालबालिकालाई सुधार, नियन्त्रण, निगरानीको संयन्त्र आदि बाल संरक्षण केन्द्र समेतका व्यवस्थाहरू समावेश हुनु पर्दछ,
 - रिट क्षेत्राधिकार विस्तार, संरचना, योजना, सक्षमता बिना प्रदान गरिएको अवस्था छ,
 - विद्यमान जनशक्तिबाट रिटको प्रतिरक्षा गर्न संभव छैन,
 - प्रक्रिया, पद्धति, कार्यविधिका आधारमा यो प्रभावकारी छैन,
 - सरकारी निकायहरूले कानूनी सल्लाहकार राखी लिखित जवाफ र प्रतिरक्षा गर्न पर्ने देखिन्छ,
- नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पुष्पराज कोइराला (तेस्रो खण्डको समापन सहित)**
- छोटो समयमा मेहनतका साथ कार्यपत्र तयार भई आएको छ,

- महिला, बालबालिका, दलित सम्बन्धी विभेदकारी कानूनी व्यवस्था, विद्यमान कानून र उनीहरूको पक्षमा रहेका नीति, हक अधिकार संरक्षणमा रहेका कमी कमजोरीहरू र सरकारी वकीलको भूमिका समेत उल्लेख गरी कार्यपत्र आउन सकेको भए राम्रो हुन्थ्यो,
- सहभागीहरूबाट उठाइएका विषयहरू कार्यपत्रमा समावेश गर्नु पर्दछ,

दोस्रो दिन २०६९ वैशाख १६ गते
चौथो खण्ड

- अध्यक्षता - महान्यायाधिवक्ता मुक्तिनारायण प्रधान
सहजकर्ता - नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पुष्पराज कोइराला
- नायब महान्यायाधिवक्ता श्री सूर्यप्रसाद कोइराला
कार्यपत्र प्रस्तुतकर्ता - जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री पुष्कर सापकोटा, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, सुनसरी

भावी संविधानमा महान्यायाधिवक्ताको स्वरूप र ढाँचा विषयमा प्रस्तुत गर्नु भएको कार्यपत्र अनुसूची ३ (घ) मा समावेश गरिएको छ ।

सहभागीहरूबाट छलफल

नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पुष्पराज कोइराला

- संघीय महान्यायाधिवक्ता मातहतमा राज्य महान्यायाधिवक्ता हो, होइन ?
- संघीय महान्यायाधिवक्ता अन्तर्गत राज्य महान्यायाधिवक्ता राख्नु पर्ने हुन्छ,
- संघीय महान्यायाधिवक्ताले राज्य/स्थानीय महान्यायाधिवक्ताले गरेका काम कारवाही समेतको प्रतिवेदन पेश गर्नु पर्ने हुँदा मातहत हुनु पर्दछ,
- राज्य संरचना अनुसार राज्यलाई प्रदान गरिने स्वायत्तताका आधारमा हाम्रो संरचना प्रभावित हुन्छ,
- न्याय प्रणाली एकात्मक प्रकृतिको हुन उपयुक्त देखिन्छ,
- महान्यायाधिवक्ता र नायब महान्यायाधिवक्ता बीचको खाडल रहेको छ, त्यसलाई हटाई संस्था सहज रूपमा लैजान महाअभियोजनकर्ता आवश्यक देखिएको हो,

सहान्यायाधिवक्ता श्री खगराज पौडेल, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, राजविराज

- राज्य र संघीय महान्यायाधिवक्ताको सम्बन्ध कसरी निर्धारण गर्ने ?
- अभियोजनकर्ता स्वच्छ रूपमा निर्णय गर्न सक्ने गरी स्वतन्त्र रहने गरी व्यवस्था गर्नु पर्दछ,
- संघीय महान्यायाधिवक्ताले कुन मुद्दा चलाउने हो ? स्पष्ट हुनु पर्दछ,

भन्सार अधिकृत श्री भुपेन्द्र कार्की, भन्सार कार्यालय, विराटनगर

- कार्यपत्रमा स्थानीय महान्यायाधिवक्ताको कामका सम्बन्धमा स्पष्ट व्यवस्था उल्लेख गरिएको छैन, सहान्यायाधिवक्ता श्री बलराम शर्मा, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, धनकुटा
- कार्यपत्रमा उल्लेख भएको महान्यायाधिवक्ता सम्बन्धी व्यवस्था स्पष्ट रहेको छैन,
- कार्यपत्रमा संघीय महान्यायाधिवक्ता उल्लेख छ, नेपाल राज्यका महान्यायाधिवक्ता राख्दा हुन्छ,
- महान्यायाधिवक्ता र महाअभियोजनकर्ता दुवै राख्न उपयुक्त हुँदैन,
- महान्यायाधिवक्ताको संरचना अदालतसँग सम्बन्ध र सामिप्यता रहन्छ, न्यायिक संरचना स्पष्ट नहुँदै यस विषयमा पूर्ण छलफल संभव छैन,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री गोपिचन्द्र भट्टराई, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, सिराहा

- हामीले कुन मोडल अपनाउने हो ? स्पष्ट हुन पर्दछ,
- संघीय राज्यका कानूनले व्यवस्था गरे अनुसार राज्य महान्यायाधिवक्ताका काम कर्तव्य तोकिने हो वा समग्र एउटै कानून वा राज्य कानूनले नियमन गर्ने हो ? स्पष्ट छैन, काम कर्तव्य सम्बन्धमा अन्यौलता नै रहने अवस्था छ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री चिरिञ्जिवी पराजुली, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, धनकुटा

- न्यायिक संरचना स्पष्ट नभएको अवस्थामा हाम्रो संस्थाको स्पष्ट खाका कोर्न सकिदैन,
- महान्यायाधिवक्ताको पद राजनीतिक अस्थिरताको कारण स्थायित्व नभएको हुँदा पदावधि निश्चित समयसम्म रहने व्यवस्था हुनु पर्दछ,
- मुद्दा फिर्ता र मिलापत्र महान्यायाधिवक्ताले गर्ने होइन, सरकारले गर्दा महान्यायाधिवक्ताको राय परामर्श लिनु पर्ने व्यवस्था उपयुक्त हुन्छ,
- स्थानीय महान्यायाधिवक्तालाई अधिकार सविधान वा कानून बमोजिम दिइने हो ? स्पष्ट व्यवस्था हुनु पर्दछ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री मुक्तिनाथ ओझा, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, इलाम

- न्यायाधिवक्ता र सरकारी वकील कार्यपत्रमा उल्लेख गरिएको छ, एकरूपता हुने गरी लेखिनु पर्दछ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री ओमप्रसाद अर्याल, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, पर्सा

- मुद्दा फिर्ता लिने विषय राजनीतिक र विवादास्पद रहँदै आएको छ, मुद्दा फिर्ता महान्यायाधिवक्ताले गर्दा भन विवादित हुन सक्दछ,
- मुद्दा फिर्ता र मिलापत्र नेपाल सरकारले महान्यायाधिवक्ताको परामर्शमा गर्नु उचित हुन्छ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री चन्द्रबहादुर सापकोटा, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, मकवानपुर

- हामीले दण्ड दिने होइन ? दण्ड दिलाउने प्रकृत्यामा काम गर्ने हो,
- महान्यायाधिवक्ताको पदावधि इच्छा अनुसार हुने गरी राख्न उपयुक्त हुँदैन,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री मनोज आचार्य, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, पाँचथर

- संगठनको सम्पर्क र समन्वय कसरी हुने स्पष्ट हुन पर्दछ,
- पदावधि स्थायित्व नहुँदा संस्थागत सुदृढीकरणमा समस्या परेको हुँदा निश्चित समय पदमा रहने व्यवस्था हुनु पर्दछ,
- महान्यायाधिवक्ताको अधिकार र जिम्मेवारी स्पष्ट हुनु पर्दछ,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री परमेश्वर पराजुली, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, धनुषा

- महान्यायाधिवक्ताले कानून मन्त्रीको समेत भूमिका निर्वाह गर्ने व्यवस्था प्रभावकारी हुने देखिन्छ,
 - हाल कार्यरत रहेका सरकारी वकीलहरूको सेवा सुरक्षाको प्रत्याभूति गरिनु पर्दछ,
- जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री गोविन्द उपाध्याय, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, वारा**
- केन्द्रमा एउटै महान्यायाधिवक्ता हुने हुँदा संघीय महान्यायाधिवक्ता भन्न पर्ने देखिदैन,
 - राज्य महान्यायाधिवक्ताको पदमा सेवामा रहेका सरकारी वकीलबाटै नियुक्त गर्न उपयुक्त हुन्छ,
- उप न्यायाधिवक्ता श्री हिमालयकुमार त्रिताल, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, विराटनगर**
- न्यायिक संरचना स्पष्ट नभएकोले छलफल गर्ने समय नभएको भन्ने लाग्दछ,
 - प्रत्येक राज्यमा महान्यायाधिवक्ता धान्न सक्ला भन्ने लाग्दैन,
 - हामीले न्यायाधीश सरह तुलाना गरेर सुविधा खोज्न हुँदैन, हाम्रो छुट्टै सेवा शर्त, सुविधा हुनु पर्दछ,
- उप न्यायाधिवक्ता श्री रमेशकुमार सुवेदी, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, इलाम**
- यही विषयमा नेपालगञ्जमा समेत कार्यपत्र प्रस्तुत भएको थियो, यी दुई बीच तालमेल देखिएन,
 - महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय आफैमा स्पष्ट भई कार्यपत्र पेश र छलफल हुन उपयुक्त हुन्छ,
- उप न्यायाधिवक्ता श्री शिबहादुर रानाभाट, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, राजविराज**
- महान्यायाधिवक्ता राजनीतिरक रूपमा नियुक्ति भए पनि कानून प्रति उत्तरदायी भई काम गर्नु पर्ने हुन्छ,
 - महान्यायाधिवक्ताको अस्थितरताले समस्या देखिएको छ, पदावधिलाई सुनिश्चितता हुने गरी संविधानमा व्यवस्था गर्नु पर्दछ,
 - महाअभियोजनकर्तालाई अभियोजनको अन्तिम निर्णय गर्ने अख्तियारी दिनु पर्दछ,
- जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री मुकुन्द अधिकारी, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, सर्लाही**
- न्याय परिषद्मा महान्यायाधिवक्ताको प्रतिनिधित्व हुनु पर्दछ,
 - पूर्व महान्यायाधिवक्ताहरूको अनुभव आदानप्रदान गरी उनीहरूको सुझाव लिई अगाडि बढ्दा उपयुक्त हुन्छ,
 - सरकारी वकील समाज कहाँ छ ? भूमिका केही देखिएन,
 - हाम्रो सेवा सुविधा, शर्त वृद्धि भएमा न्यायाधीश नियुक्ति प्रति भुकाव कम रहने देखिन्छ,
- सहान्यायाधिवक्ता श्री विनोदकुमार पोखरेल, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, जनकपुर**
- हाम्रो भविष्यका विषयमा छलफल गरिरहेका छौं, प्रारूपहरू राम्रा छन्,
 - मुद्दा चल्ने नचल्ने निर्णय गर्ने अधिकार महान्यायाधिवक्तालाई भए पनि अनुसन्धान गर्ने सन्दर्भमा सामान्य निर्देशन दिने बाहेक अरु कार्यमा नियन्त्रण र निगरानी हुने अवस्था छैन,

- अनुसन्धानको नियन्त्रण र निगरानी लगायत फौजदारी मुद्दाको जिम्मेवारी महान्यायाधिवक्तालाई हुने गरी भावी संविधानमा राखिनु पर्दछ,
- संघीय महान्यायाधिवक्ता र महाअभियोजनकर्ता दुवै किन आवश्यक पन्थो ? कार्यपत्रमा स्पष्ट खुलेको छैन,

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री सञ्जीव रेग्मी, जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, चितवन

- न्यायपालिकाको मोडल र संरचनाबाट हाम्रो संरचना प्रभावित हुन्छ,
- केन्द्रीय, प्रान्तीय, स्थानीय सरकारको अधिकारक्षेत्रले पनि हाम्रो संरचना, अधिकारक्षेत्रमा प्रभाव पार्दछ,
- महान्यायाधिवक्ता र महाअभियोजनकर्ता सवैधानिक हैसियत र नियुक्त गर्ने हो भने काम कर्तव्य र अधिकार स्पष्ट हुनु पर्दछ,

सहान्यायाधिवक्ता श्री शंकरराज बराल, पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, हेटौँडा

- न्यायालयको संरचनात्मक स्वरूपमा नै हाम्रो संरचना रहन्छ,
- महाअभियोजनकर्ताले मुद्दा अभियोजन गर्ने भए पनि मुद्दा फिर्ता र मिलापत्रको सम्बन्धमा उसको भूमिका स्पष्ट उल्लेख भएको देखिदैन,

स्पष्ट पार्नु ह“दुवै कार्यपत्र प्रस्तुतकर्ता पुष्कर सापकोटा

- सबै राजनीतिक नियुक्ति हुने होइन, राज्य र संघीय महान्यायाधिवक्ता मात्र राजनीतिक नियुक्त हुने हो,
- संघ कति वटा हुने अहिले नै स्पष्ट अवस्था छैन,
- महान्यायाधिवक्ताले सरकारसँग सम्बन्ध रहने हुँदा राजनीतिक स्थिरता बिना पदावधि स्थिर रहदैन,
- मुद्दा फिर्ता महान्यायाधिवक्ताले फिर्ता लिन उपयुक्त हुन्छ,
- संविधानमा सबै कुरा आउने होइन, कानूनद्वारा व्यवस्थित गर्ने हो,

महान्यायाधिवक्ता श्री मुक्तिनारायण प्रधान (चौथो खण्डको समापन सहित)

- यो विषय नेपालगञ्ज सम्मेलन देखि नै निरन्तरको विषय हो,
- कार्यपत्रले छलफलका लागि विषयवस्तु यउभल गरेको छ,
- न्यायपालिकाको स्वरूप र महान्यायाधिवक्ताको स्वरूप फरक फरक हो, संविधानले नै स्पष्ट फरक उल्लेख गरिरहेको नै छ, न्यायपालिका अन्तर्गत हामी रहेका छैनौं,
- संघीयतालाई आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, भाषागत रूपमा हेर्नु पर्दछ, सबै देशमा यसको एकरूपता रहेको देखिदैन,
- नागरिकप्रति उत्तरदायी र उनीहरूको अधिकार प्रदान गर्न सक्ने गरी हामी प्रस्तुत हुन सक्नु पर्दछ,
- पेश भएको संरचना त्यति सन्तोषजनक छैन,
- हामीले सुभाष पेश गर्ने समय धेरै छैन, छलफल गरी निष्कर्ष निकाली एउटा धारणा (व्यततय) पेश गर्नु पर्दछ,

- जिल्ला तथा पुनरावेदनमा सम्बन्धित निकायहरूले मान्यता दिएको देखिदैन, काम बिग्रे पछि कानूनी राय माग्ने, सोध्ने अवस्था छ,
- केन्द्रमा हाल केही मात्रामा सल्लाहकारी भूमिकामा वृद्धि भएको छ,
- नेपाल सरकारको सल्लाहकारको महान्यायाधिवक्ता उल्लेख भए पनि दचभबप मयधल छैन, कानूनमा स्पष्ट व्यवस्था गर्नु पर्दछ,
- हालको संविधानमा प्रतिरक्षाको गलततप्यलर्ब व्यवस्था छैन, कसरी प्रतिरक्षा गर्ने, स्वतन्त्रता के कति हुने ? स्पष्ट छैन,
- मनोवैज्ञानिक रूपमा मभाभलमभच हुनु पर्दछ, त्यस अनुसार सेवा, शर्त, सुविधा, सुरक्षा, नियुक्ति आदिको व्यवस्था संविधानमा नै उल्लेख गरी छुट्टै कानून निर्माण गर्न आवश्यक छ,
- संस्थागत परिवर्तन गर्ने चरणमा छौं,
- सरकारी वकीलको व्यावसायिक दक्षता र पेशाको सम्मान राज्यले गर्नु पर्दछ,

पा“चौ खण्ड

संस्थागत सुदृढीकरण, कार्यालय सञ्चालन, सेवा शर्त सम्बन्धमा

उपस्थिति - महान्यायाधिवक्ता मुक्तिनारायण प्रधान

- नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पुष्पराज कोइराला

- नायब महान्यायाधिवक्ता श्री सूर्यप्रसाद कोइराला

यस खण्डमा कार्यालय सञ्चालनमा रहेका समस्या, भौतिक पूर्वाधार (भवन, जग्गा, कार्यालय भाडाको रकम, कम्प्युटर, टेलिफोन आदि) सम्बन्धी विषय, बजेट, जनशक्ति, कार्यबोझको अवस्थाका सम्बन्धमा सम्बन्धित पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालयका सहन्यायाधिवक्ताले पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय र मातहतका सरकारी वकील कार्यालयका सम्बन्धमा जानकारी गराउनु भएको थियो भने अलग अलग रूपमा जिल्ला न्यायाधिवक्ताहरूले पनि आ-आफ्नो कार्यालयको अवस्था र सहभागी सरकारी वकीलहरूले सरकारी वकीलको सेवा शर्त, सुरक्षा र संस्थागत सुदृढीकरणका सम्बन्धमा छलफल गर्नु भएको थियो । सहभागीहरूबाट उठाइएका समस्या तथा जिज्ञासाहरूलाई महान्यायाधिवक्ता श्री मुक्तिनारायण प्रधान तथा नायब महान्यायाधिवक्ताहरू श्री पुष्पराज कोइराला र सूर्यप्रसाद कोइरालाले सम्बोधन गर्नु भएको थियो ।

३. प्रस्ताव पारित सत्र

पूर्वाञ्चल र मध्यमाञ्चल (पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय पाटन बाहेक) विकास क्षेत्रमा कार्यरत सरकारी वकीलहरूको मिति २०६९ वैशाख १५ र १६ गते विराटनगरमा सञ्चालन भएको क्षेत्रीय वार्षिक कार्य समीक्षा तथा अनुशिक्षण कार्यक्रममा सहभागी एवं पर्यवेक्षकहरूबाट देहायका प्रस्तावहरू पारित गरियो ।

- १= सरकारी वकीलको पेशालाई आकर्षित, प्रतिस्पर्धी, व्यावसायिक, मर्यादित बनाउन तथा योग्य जनशक्तिलाई सेवामा आकर्षित गर्न र सरकारी वकीलको अनुभव, ज्ञान, दक्षता र सीपलाई मर्यादित र सम्मानजनक रूपमा अधिकतम उपयोग गर्नका लागि सरकारी वकीलहरूको सेवालाई निजामती सेवाबाट अलग गरी व्यावसायिक, विशिष्टीकृत, विशेषज्ञ सेवाको रूपमा स्थापित गर्न भावी संविधानमा सरकारी वकीलको संरचना, नियुक्ति, सेवा, शर्त, सुविधाका सम्बन्धमा स्पष्ट व्यवस्था गर्न महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयबाट पहल गर्ने ।
- २= आगामी संविधानमा महान्यायाधिवक्ताको स्थिति विषयमा सम्मेलनमा प्रस्तुत भएको कार्यपत्र र त्यस उपर प्राप्त सुधार सुझाव सहित अन्य मुलुकहरूको समेत तुलनात्मक अध्ययन गरी अन्तिम निष्कर्षमा पुगी महान्यायाधिवक्ता सम्बन्धी व्यवस्था आगामी संविधानमा समावेश गर्न सुझावको रूपमा प्रस्तुत गर्ने ।
- ३= विद्यमान परम्परागत अपराध अनुसन्धान पद्धतिलाई आधुनिकीकरण र वैज्ञानिकीकरण गर्ने प्रारम्भिक पृष्ठभूमिको रूपमा अपराधको अनुसन्धान सम्बन्धी कार्य गर्न विशेष दक्षता भएका अनुसन्धानकर्ता सहित कानून, विशेषज्ञ समूह समेतको सहभागिता हुने गरी कम्तीमा क्षेत्रीय र केन्द्रीय तहमा सक्षम र स्वतन्त्र अनुसन्धान व्यूरो तत्काल गठन गरी अपराध अनुसन्धानको

- कार्यलाई आधुनिकीकरण र वैज्ञानिकीकरण गर्दै यस कार्यलाई भौतिक प्रमाणमुखी बनाउन तत्काल निर्णयमा पुग्न जरुरी भएको कुरा सरकारसम्म महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय मार्फत पुऱ्याउने ।
- 4- जिल्ला तथा पुनरावेदन अदालतमा भएको रिट सम्बन्धी क्षेत्राधिकारको विस्तार तथा मुद्दामा भएको संख्यात्मक वृद्धि समेतको आधारमा आवश्यक पर्ने स्रोत र साधनको अनुमान गरी वस्तुगत विश्लेषणका आधारमा जनशक्ति थप गर्नका लागि महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय तथा मातहतका सरकारी वकील कार्यालयहरू साथै अन्य निकायहरूमा सरकारी वकीलको आवश्यकता सम्बन्धी संगठन तथा व्यवस्थापन सर्वेक्षण (इ ७ :) गरी कार्यबोभको अनुपातमा सरकारी वकील तथा कर्मचारीहरूको दरबन्दी वृद्धि गर्न महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयले अविलम्ब पहल गर्नु पर्ने ।
- 5- रिट निवेदन सम्बन्धी सैद्धान्तिक अवधारणा, लिखित जवाफ, बहस पैरवी तथा प्रतिरक्षा आदि विषयहरूमा सरकारी वकील तथा सहायक कर्मचारीहरूलाई प्रशिक्षण प्रदान गर्न पाठ्यक्रम तर्जुमा गरी महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय, अभियोजन प्रशिक्षण केन्द्रले प्रशिक्षण सञ्चालन गर्ने र अन्य तालिम प्रदायक निकाय (न्याय सेवा तालिम केन्द्र, राष्ट्रिय न्यायिक प्रतिष्ठान, आदि) लाई समेत प्रशिक्षण सञ्चालनका लागि महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयबाट विशेष पहल गर्नु पर्ने ।
- 6- कानूनी ज्ञानको अभाव तथा मुद्दा सम्बन्धी काम प्रतिको उदासीनताका कारण सरकारी निकायहरूबाट त्रुटिपूर्ण निर्णयहरू हुनेक्रम बढ्दो अवस्थामा रहेको र कतिपय निकायहरूले लिखित जवाफै नपठाउने, म्याद भित्र नपठाउने, निवेदकलाई अनुकूल हुने व्यहोरा उल्लेख गरी पठाउने, अनुभवको अभावका कारण प्रतिरक्षा गर्न आवश्यक हुने सबै कागज प्रमाणहरू संलग्न नगरी पठाउने, एउटै सवालमा परेको रिट निवेदनको लिखित जवाफ प्रस्तुत गर्ने विपक्षी सरकारी निकायहरू बीच आवश्यक समन्वय नगरी परस्पर विरोधी लिखित जवाफ पेश हुने गरेको जस्ता समस्याका कारण त्यस्ता रिट निवेदनको प्रतिरक्षामा समस्या रहेकोले त्यस्ता निकायहरूमा अनिवार्य रूपमा कानूनी सल्लाहकारको व्यवस्था गर्नु पर्ने र मुद्दा तथा रिट निवेदन सम्बन्धी कार्यका लागि सम्पर्क अधिकृतको व्यवस्था गर्न सम्बन्धित निकायमा अनुरोध गर्ने ।
- 7- मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ मा यौन शोषणको स्पष्ट परिभाषा र दुरुत्साहन, मतिहार, षडयन्त्र लगायतका व्यवस्था नभएको तथा मुलुकी ऐन अपहरण तथा शरीर बन्धकको महलमा मुलुकी र तामेली लगायतका व्यवस्था नभएको हुँदा ती कानूनी अस्पष्टता र द्विविधा हटाउने गरी कानूनमा संशोधन गर्ने र अपहरण तथा शरीर बन्धक सम्बन्धी कसूरका प्रतिवादीलाई वारेण्ट जारी गर्ने सम्बन्धमा अदालतमा समेत अन्यायलता रहेको हुँदा अपराधको गंभीरताका आधारमा मुलुकी ऐन अदालती बन्दोवस्तको महलको ९४ नं. मा वारेण्ट जारी हुने मुद्दाहरूको सूचीमा अपहरण तथा शरीर बन्धक सम्बन्धी मुद्दा समेत समावेश गर्ने गरी कानूनमा संशोधन हुनु पर्ने ।
- 8- सरकार वादी भई चल्ने मुद्दाहरूमा अनुसन्धान गर्ने अवधी मात्र उल्लेख भएको र कतिपय मुद्दामा अनुसन्धान अधिकारीबाट अनुसन्धान पूरा नभएको आधारमा अन्तिम समयमा मात्र अभियोजन सम्बन्धी निर्णयका लागि सरकारी वकील समक्ष मुद्दा पेश हुने गरेको र सरकारी वकीललाई मुद्दाको तथ्य, सबुद प्रमाण मूल्यांकन गरी मुद्दा चल्ने वा नचल्ने निर्णय गर्न समय अभाव भई अभियोजन कमजोर हुने हुँदा अभियोजन सम्बन्धी निर्णयका लागि अनुसन्धान अधिकारीले राय

सहित मुद्दा प्रस्तुत गर्दा अभियोजन तयारीका लागि आवश्यक निश्चित समय तोकी सो समय अगावै फाइल प्रस्तुत गर्नु पर्ने वा फाइल पेश गरे पश्चात अभियोजनको हदम्याद कायम हुने गरी कानूनी व्यवस्था गर्नु पर्ने ।

- 9= फौजदारी मुद्दामा साक्षीको भनाई महत्वपूर्ण रहने भए पनि राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक चलखेल, प्रतिवादीको अनुचित प्रभावका कारण सरकार वादी मुद्दामा साक्षीहरूले अदालतमा प्रतिकूल बकपत्र गर्ने वा अनुपस्थिति हुने क्रम वृद्धि हुँदै गई रहेको र यसले सरकार वादी मुद्दामा असफलता बढाएको हुँदा साक्षीको बकपत्र तत्कालै गर्ने, प्रतिकूल बकपत्र गर्ने साक्षीलाई कडा सजाय हुने र साक्षीहरूको सुरक्षा, संरक्षणका लागि पीडित तथा साक्षीलाई क्षतिपूर्ति, सुविधा, सुरक्षा आदिका लागि पीडित राहत कोष सहितको कानूनी व्यवस्था गर्न पहल गर्ने ।
- 10= महिला, दलित र बालबालिकाको आधारभूत हक अधिकारको हनन वा हित विरुद्धमा हुने अपराधिक घटनाहरूको अनुसन्धान, अभियोजन र न्याय निरोपण गराउने क्रममा सरकारी वकीलले विशेष चनाखो हुनु पर्ने आवश्यकता महसुस गर्दै महिला, दलित र बालबालिकाको हित विरुद्धमा हुने अपराध सम्बन्धी मुद्दाको हकमा त्यस्ता वर्गको उचित प्रतिनिधित्व गर्नु सरकारी वकीलको लागि प्राथमिकता प्राप्त दायित्वका रूपमा लिई काम गर्ने प्रतिबद्धता प्रकट गरियो ।
- 11= कानूनमा रहेका अस्पष्टता र द्विविधाका कारण अंगभंग कुटपिट र ज्यान मार्ने उद्योगको कसूरलाई अदालतबाट साधारण कुटपिटमा परिणत गर्ने गरिएको कारणले अपराधीलाई कानूनी दायरामा ल्याई सजाय गर्न असहज भैरहेको हुँदा अंगभंग कुटपिटलाई पुनः परिभाषित गर्ने गरी कानूनमा संशोधन गर्नु पर्ने ।

४. समापन सत्र

मोरङ जिल्लाको विराटनगरमा दुई दिनसम्म सञ्चालित क्षेत्रीय वार्षिक कार्य समीक्षा तथा अनुशिक्षण कार्यक्रमलाई समापन गर्ने क्रममा सहभागी तथा पर्यवेक्षकहरूको तर्फबाट **प्रहरी निरीक्षक श्री दिलबहादुर सुवेदी**ले सरकारी वकीलको यस प्रकृतिको क्षेत्रीय सम्मेलनमा पर्यवेक्षकको रूपमा सहभागी हुन पाएकोमा गौरान्वित भएको छ । कार्यक्रममा सैद्धान्तिक कुराहरू राम्रा आएका छन् । तर ती कुराहरूलाई व्यावहारिक रूपमा लागू गर्न त्यति सजिलो छैन । भौतिक पूर्वाधार, संरचनाका कारण कार्यान्वयनको चरणमा बाधा, कठिनाई आउने हुन्छ । पोष्टमार्टम गर्न डाक्टरको अभाव रहेको छ । घटनास्थलसम्म डाक्टर जानु पर्ने आवश्यकता छ । सरकारी वकील हाम्रो हात, मुटु हो । सरकारी वकीलको निर्देशन बिना काम गरिएको छैन । हामी बीच नड मासुको सम्बन्ध रहेको छ । सामाजिक संरचना, राजनीतिक परिवेश अनुसार पनि काम गर्नु पर्ने वाध्यता रहेको छ । सरकारी वकील बिदा जादा अख्तियारी दिई जाने व्यवस्था भए काम गर्न सहज हुने थियो । अभियोजनकर्ता र अनुसन्धानकर्ताको भूमिकालाई राज्यले विशेष व्यवस्था गर्नु पर्दछ । कार्यक्रममा सहभागिता र मन्तव्य राख्न समेत अवसर प्राप्त भएकोमा धन्यवाद व्यक्त गर्नु भयो ।

यसैगरी पर्यवेक्षकको रूपमा नै पुनरावेदन अदालत विराटनगरका शाखा अधिकृत **श्री प्रेमप्रसाद न्यौपाने**ले कार्यक्रममा पेश भएका कार्यपत्रहरू अत्यन्तै सान्दर्भिक रहेका छन् । यस प्रकृतिको कार्यक्रमलाई भेटघाटको रूपमा मात्र लिनु हुँदैन । कार्यक्रममा पारित भएका प्रस्तावहरू सशक्त रूपमा कार्यान्वयन हुने नै छु भन्ने अपेक्षा गरेको छु । यसले संस्थागत विकास, योजना र सुदृढीकरणका लागि ठोस योगदान दिन सफल हुने अपेक्षा गर्दै आफ्नो मन्तव्य व्यक्त गर्नु भएको थियो ।

पर्यवेक्षकको रूपमा नै जिल्ला अदालत वार इकाई मोरङ्गका तर्फबाट अधिवक्ता श्री प्रकाशनाथ उप्रेतीले यच्चभलकषत्र कअष्मलअभ सम्बन्धी विषय कार्यपत्रको रूपमा आएको भए सान्दर्भिक हुने थियो । दोषी पत्ता लगाउने र निर्दोषलाई सजाय नगर्न हामी सचेत र सजग हुनु पर्दछ । कानूनमा रहेका त्रुटिबाट निर्दोष व्यक्तिले सजाय पाउनु हुँदैन । सकारात्मक र सिर्जनात्मक रूपमा आफ्नो काम, व्यवसाय अगाडि बढाउनु पर्दछ । सरकारी वकीलको दरबन्दी न्यून रहेको देखिन्छ । कार्यबोझ अनुरूप दरबन्दी थप हुन नसकेका कारण काममा गुणस्तरीयता र प्रभावकारिता आउन नसकेको महसुस भएको छ । हामी न्यायको लागि सहकार्य गर्दै अगाडि बढौं भन्दै आफ्नो मन्तव्य व्यक्त गर्नु भएको थियो ।

सहभागीको तर्फबाट मन्तव्य व्यक्त गर्नु हुँदै सहन्यायाधिवक्ता श्री विनोदकुमार पोखरेलले यस क्षेत्रीय सम्मेलन विगतको भन्दा केही नवीन रहेको छ । सबै सरकारी वकीललाई सहभागी हुने गरी कार्यक्रम तय गरिएको छ । कार्य प्रगति, कार्यालयहरूको अवस्थाको चित्रण सहितको प्रस्तुति र छलफलको कार्यक्रम अत्यन्तै प्रशंसनीय रहेको छ । छलफलबाट आगामी दिनमा कार्य गर्न सरल, सहज हुने नै छ भन्दै आफ्नो मन्तव्य व्यक्त गर्नु भएको थियो ।

कार्यक्रममा प्रमुख अतिथि महान्यायाधिवक्ता श्री मुक्तिनारायण प्रधानले दुई दिनसम्म संचालन भएको यस कार्यक्रमले आचभकज मात्र होइन, आगामी दिनमा कसरी अगाडि बढ्ने भन्ने मार्ग निर्देशन गर्नेछ, भन्ने महसुस गरेको छु । यस्ता कार्यक्रमको गुणात्मक विधि र प्रकृत्यामा सुधार गर्दै लानु पर्ने अवस्था छ । कार्यक्रममा सहभागिता सक्रियतापूर्वक रहेको छ । अझै खुलेर बोल्ने परिपाटी विकास गर्नु पर्दछ । संस्थागत सुदृढीकरणको सवालमा महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय कमजोर अवस्थामा छ । संस्थागत सुदृढीकरणका लागि हामी सबैले सोच्नु पर्दछ । साझा समस्यालाई साझा ढंगले नै सोच्नु र हल गर्नु पर्दछ । सबुद प्रमाणका आधारमा मुद्दाको अभियोजन गर्नु पर्दछ । झुठ्ठा मुद्दा चलाउनु हुँदैन । जागरुक, चनाखो, दिलचस्वी भएर कार्यक्रममा सहभागी हुनु भएकोमा सबै सरकारी वकील, पर्यवेक्षकलाई धन्यावाद ज्ञापन गर्नु भयो ।

समापनसत्रको अध्यक्षता गर्नु भएका नायब महान्यायाधिवक्ता श्री सूर्यप्रसाद कोइरालाले समापन मन्तव्य व्यक्त गर्नु हुँदै न्याय सम्पादनमा सम्लग्न निकायहरू प्रहरी, वार, अदालत र सरकारी वकील छुट्टाछुट्टै रहेर काम गर्न सकिदैन । सहकार्य र समन्वयमा रहेर काम गर्नु पर्दछ । व्यक्तिगत लाभ हानिलाई लिएर काम गरिएन भने हामी बीच धेरै समस्या रहदैनन् । समाज र जनताको हितमा काम गर्न र कसैप्रति पूर्वाग्रही नरही इमान्दारीपूर्वक काम गर्ने संस्कार विकास गर्न सकेमा धेरै सहजता हुन्छ । दबाव, प्रभावलाई पनि यसैबाट चिर्न सकिन्छ । हामीले एक अर्कालाई दोषारोपण गर्ने भन्दा हामी बीचमा रहेका त्रुटि कमजोरी पहिल्याई सुधार गर्दै लानु पर्दछ । कार्यक्रममा आएका सुभावहरूलाई कार्यान्वयन गर्ने प्रयत्न गरिनेछ । छोटो समयमा राम्रो व्यवस्थापन भएकोमा व्यवस्थापनमा सम्लग्न सबैलाई विशेष धन्वयाद व्यक्त गर्दै कार्यक्रम विसर्जन गर्नु भयो ।

भावी संविधानमा महान्यायाधिवक्ता कार्यालयको संरचना

कार्यक्रम स्थान: काठमाडौं

मिति: २०६९।०२।०५ गते

अध्यक्षता : महान्यायाधिवक्ता श्री मुक्तिनारायण प्रधान

कार्यक्रम संचालन : नायब महान्यायाधिवक्ता श्री प्रेमराज कार्की

स्वागत मन्तव्य : नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पुष्पराज कोइराला

न्यापोटर : उपन्यायाधिवक्ता द्वय श्री रेवतीराज त्रिपाठी, श्री मदनबहादुर धामी

संविधान बन्ने अन्तिम अवसरमा आयोजित यस कार्यक्रमले महान्यायाधिवक्ताको संरचना सम्बन्धमा महत्वपूर्ण योगदान दिनेछ । हामीले सामना गर्नु परेका समस्या समाधान गर्ने सम्बन्धमा यहाँबाट आएका सुझावले सहयोग गर्नेछन् । आउने संविधानले हाम्रो चुनौती सामना गर्ने सम्बन्धमा महत्वपूर्ण सुझावहरू आउने आशाका साथ कार्यक्रम गरिएको हो । २०४७ को संविधान अगाडि न्यायाधीश पनि निजामती कर्मचारीको रूपमा रहेका सो संविधानले स्वतन्त्र बनाएको तर महान्यायाधिवक्ताको अवस्था दयनीय भएको । सरकारी वकीलको कार्यको गहनता र महत्वपूर्ण जिम्मेवारी व्यावसायिकताको विकासको लागि निजामती कर्मचारीबाट बाहिर राख्नु पर्ने ।

कार्यक्रममा कार्यपत्र प्रस्तुति (कार्यपत्र अनुसूची ४ मा समावेश गरिएको छ) नायब महान्यायाधिवक्ता श्री सूर्यप्रसाद कोइराला र सहन्यायाधिवक्ता श्री किरण पौडेलले गर्नु भएको थियो ।

अध्यक्ष महान्यायाधिवक्ता श्री मुक्तिनारायण प्रधान

यो अवस्थामा यहाँहरूको सहयोग नभएमा उपेक्षित हुनेछ । यसलाई प्रभावकारी बनाउन चाभि या विध को च्मकउभअत गराउने मानव अधिकारको अनुगमन गर्ने भूमिका प्रभावकारी भएको छैन । न्यायपालिकाको महत्वपूर्ण अंग भए पनि उपेक्षित छ । व्यावसायिकता भएको छैन । यसलाई प्रभावकारी बनाउन के गर्नु पर्दछ । वकील, सरकारी वकील र विशेषज्ञको सक्षमता बिना न्यायपालिका सक्षम हुन सक्दैन । न्यायपालिका जन अनुमोदित, उत्तरदायित्व र पारदर्शी हुनु पर्दछ । महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयलाई सहयोग आवश्यक पर्दछ । न्याय परिषद्का सदस्य, पूर्व महान्यायाधिवक्ता, कानून व्यवसायी, सचिव समेतको सहयोग आवश्यक छ ।

महान्यायाधिवक्ता राज्यको प्रतिनिधि हुँदाहुँदै महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय र सरकारी वकीलको संस्था उपेक्षित भएको छ । अन्तर्राष्ट्रिय मापदण्ड अनुरूपको उभचायकबलअभ गर्नसक्ने बनाउनु पर्दछ । यसको लागि सर्वप्रथम निजामती सेवाबाट मुक्त गर्नु पर्दछ । सरकारी वकीललाई छुट्टै विशिष्टकृत सेवाको रूपमा विकास गर्न संविधानद्वारा व्यवस्थित गरिनु पर्दछ । महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको प्रभावकारिताको अभावमा न्याय सम्पादन प्रभावकारी हुन सक्दैन ।

वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ

महान्यायाधिवक्ता र सरकारी वकीलको अहिलेको संरचना परिवर्तन गर्न जरुरी छ । महान्यायाधिवक्ता राजनैतिक नियुक्ति र सरकारी वकील निजामती कर्मचारी हुने व्यवस्था छ । महान्यायाधिवक्ता राजनीतिक रूपमा स्वतन्त्र छैन कि भन्ने अनुभूति भई रहेको छ । मुद्दा चलाउने नचलाउने सम्बन्धमा

निर्णय गर्दा अभियोजनमा राजनीतिक प्रभावमा पर्ने गरेको पाइन्छ । महान्यायाधिवक्ता हुँदाहुँदै मन्त्रीहरूले अभिवक्ताको काम चलाउने गरेको अवस्था छ । सदनको अनुमति मागेर यो कुरा राख्नु पर्छ । महान्यायाधिवक्ता कानूनको विशेषज्ञ हो । उसलाई स्वतन्त्र बनाउनु आवश्यक छ ।

पूर्व महान्यायाधिवक्ता श्री पवनकुमार ओझा

संविधान निर्माणको प्रक्रियामा प्रजातन्त्रलाई संस्थागत गर्ने कार्य हामीले सोचे भन्दा धेरै जटिल भएको छ । राज्यको क्षमता कति छ भन्ने कुरा महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको सक्षमताले देखाउँछ । लोकतन्त्रमा महान्यायाधिवक्ता अत्यन्त सक्षम हुनु पर्ने । एचयाभककष्यलर्वा सरकारी वकीलको लागि आवश्यकता पर्ने र पहिले जस्तो परम्परागत रूपमा संस्था चलन सक्दैन । व्यवस्था नयाँ ल्याउने शैली परम्परागत भएमा शैलीले व्यवस्थालाई खान्छ । स्वतन्त्र र सक्षम महान्यायाधिवक्ताको आवश्यक छ । सरकारी वकील व्यावसायिक र सक्षम भएन भने न्याय प्रणाली प्रभावकारी हुँदैन । अनुसन्धान प्रणाली कमजोर भएर पनि सक्षमता देखिएन । अहिलेसम्मका महान्यायाधिवक्ताले राजनीतिक नेतृत्वलाई आँकन सकेन । महान्यायाधिवक्तालाई संसदमा प्रतिनिधित्व गर्न अहिलेसम्मको व्यवस्था प्रभावकारी भएन । महाअभियोजनकर्ताले कसरी कार्य गर्ने महान्यायाधिवक्तासँग ऋयलाष्वित हुनु भएन । सन्तुलित व्यवस्था गर्न कानून बन्नु पर्दछ । सरकारी वकील निजामतीबाट बाहिर ल्याउनु पर्ने ।

महान्यायाधिवक्ता चाभि या विध को नावचवलतयच हुनु पर्छ । कुनै पनि बेला राज्यको कुनै पनि निकायले कानूनको पालना गरेन भने सरकारी वकीलले त्यसलाई कानून पालन गर्न बाध्य गराउन सक्ने हैसियत आवश्यक छ । कानून व्यवसाय गरेको पाँच वर्ष पछि मात्र भलतचवलअभ दिनु पर्दछ । यसले परिपक्वता ल्याउँदछ । यसको छुट्टै कानूनी हैसियत हुनु पर्दछ । लोकतन्त्रको परिकल्पना गर्दा महान्यायाधिवक्ता र सरकारी वकीलहरूलाई ऋषीभम र सक्षम बनाउनु पर्दछ । पद्धति नयाँ ल्याउने हो भने महान्यायाधिवक्ता कार्यालयको सक्षमता जरुरी छ । कानून मन्त्री र महान्यायाधिवक्ता एउटै हुनु पर्दछ । अहिले महान्यायाधिवक्ताको सुझाव मन्त्री र प्रधानमन्त्रीले सुन्ने गरेका छैनन् । महान्यायाधिवक्ताको सामान्य निर्देशनमा महाअभियोजनकर्ता रहने व्यवस्था संविधान र कानूनमा गरिनु पर्दछ ।

पूर्व महान्यायाधिवक्ता डा. युवराज संग्रौला

समानुपातिक प्रणाली तर्फ गैरहेकोले अयष्वितष्यल अगतिगचभ को विकास भइरहेको छ । महान्यायाधिवक्तालाई कानून मन्त्रीको भूमिका दिनु पर्दछ । यसको लागि न्यूनतम योग्यता कानूनको स्नातक हुनु पर्दछ । अभियोजन भई सकेको मुद्दामा बहस गर्न, सरकारको प्रतिनिधित्व गर्न र कानूनी सल्लाह दिन अयगलकभयिच नभलभचर्वा र अभियोजन भन्दा अगाडिको कार्यको लागि कतवतभ उचयकभअगतभच नभलभचर्वा हुनु पर्दछ । जुन अवचभभच वाट आएको हुनु पर्दछ । प्रान्तको हकमा राज्यको महाअभियोजनकर्ता हुनु पर्दछ । जसले केन्द्रिय फौजदारी कानून अन्तर्गतको मुद्दामा पनि अभियोजन गर्दछ । किनकि फौजदारी न्याय प्रणाली एउटै हुन्छ केन्द्र र राज्यको अलग अलग हुँदैन । कतिपय अवस्थामा केन्द्रीय महान्यायाधिवक्तालाई निर्देशन दिने व्यवस्था हुनु पर्दछ । प्रान्तीय अदालतका मुद्दा भने केन्द्रीय महान्यायाधिवक्ताले हेर्नु पर्ने हुन्छ । कतिपय अवस्थामा केन्द्रीय महान्यायाधिवक्ताले

प्रान्तीय महान्यायाधिवक्तालाई निर्देशन गर्ने व्यवस्था पनि हुनु पर्दछ । महान्यायाधिवक्ताले नै आफ्नो कर्मचारीलाई सरुवा गर्न सक्ने व्यवस्था गर्नु पर्दछ । राज्यको प्रतिनिधित्व महान्यायाधिवक्ताले र सरकारको प्रतिनिधित्व महान्यायाधिवक्ताले गर्दछ । राज्य राज्य बीचको विवाद केन्द्रमा आएमा केन्द्रको महान्यायाधिवक्ताले कसरी मन्त्रवा गर्ने भन्ने कुरा संविधानमा नै स्पष्ट रूपमा प्रष्ट व्यवस्था हुनु पर्दछ । यसले भविष्यमा समस्या आउन सक्छ । देवानी कानून चाहिँ केही कानून प्रान्तले अलग बनाउन सक्छ ।

अधिवक्ता श्री विश्वप्रकाश भण्डारी

महान्यायाधिवक्ताको पदावधि तोक्नु पर्ने र साधन स्रोत सम्पन्न बनाउनु पर्ने ।

डा.श्री त्रिलोधन उप्रेती, सचिव, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रपरिषद्को कार्यालय

चाभि या विध को मुटु र आत्मा हो । फौजदारी न्याय प्रणाली जनताको विश्वास जित्न असफल भएको छ । महान्यायाधिवक्ता र कानून मन्त्री छुट्टाछुट्टै हुँदा समस्या हुने । अभियोजनको कार्य गर्नको निमित्त एचयकभअगतप्यल नभलभचर्वा छुट्टै हुनु पर्दछ । यहि संविधानलाई कार्यान्वयन गर्ने ऐन प्रष्ट भएन भने पछि समस्या हुन सक्छ । छुट्टै व्यवसायको रूपमा विकास गर्न संविधानले व्यवस्था गर्नु पर्ने

श्री रामनारायण बिडारी

महान्यायाधिवक्ताको नियुक्ति राष्ट्रपतिले नियुक्ति गर्ने व्यवस्था हुनु पर्ने । मुद्दा फिर्तामा महान्यायाधिवक्ताको भूमिका हुनु पर्ने । सरकारी वकीललाई निजामतीमा राख्न नहुने । राज्यको मुद्दा नचलाउने निर्णय अखण्ड गर्नु पर्दछ । मुद्दाको आधारमा थप प्लअभलतप्लभ दिनु पर्ने र ए छुट्टाछुट्टै हुनु पर्दछ ।

पूर्व महान्यायाधिवक्ता श्री बद्दीबहादुर कार्की

राजनीतिक व्यवस्था अनुसार महान्यायाधिवक्ताको भूमिका हुन्छ । फ्रान्समा व्युरोक्रेडिक मोडल छ । त्यहाँ महान्यायाधिवक्ताको भूमिका कम छ । हामी कहाँ महान्यायाधिवक्ता शब्द मात्र आयो तर अयलअभउत आएन । एउटा मात्र कार्यकारिणी हुँदा त के हुने हो भन्ने अवस्था रहेको छ भने दुई वटा कार्यकारिणी हुँदा के हुने भन्ने भन द्विविधा हुने देखिन्छ । सस्थाहरू सम्बन्धमा कुनै अध्ययन बिना अरु अरुले नै निर्णय गर्ने अवस्था रहेको । कमन ल मा बमखयअवअथ र चाभि या विध को भूमिका बढी हुने हुँदा महान्यायाधिवक्ताको भूमिका बढी हुन्छ । उ त वारको भिवमभच हो । सरकारको अखण्ड र उचयकभअगतयच एउटै हुन्छ । तर हाम्रोमा ऋजुभा बमखण्डभच वततयचलभय नभलभचर्वा हुँदा हुँदै राय कानून मन्त्रालयले दिने गरेको छ । जसको कानून व्यवसायीको प्लअभलकभ छैन त्यसले कानूनी राय कसरी दिने ? त्यो कसरी कानूनी सल्लाहकार हुन सक्छ । महान्यायाधिवक्ता नै कानून मन्त्री भएमा यो समस्या रहदैन र पदावधिको समस्या पनि पर्दैन । तर अभियोजनको लागि अवचभभच बाट आउनु पर्ने ।

पूर्व महान्यायाधिवक्ता श्री यज्ञमूर्ति बन्जाडे

हामीले भनेका कुरा पुग्छन पुग्दैनन ? प्रान्तलाई कति अधिकार दिने भन्ने कुराले कस्तो संरचना रहने भन्ने कुरालाई निर्धारण गर्दछ । प्रान्तले पनि अचण्डर्वा विध बनाउने हो भने दुवैमा अभियोजनको अधिकार रहन्छ । नभए अखयअवतभ नभलचर्वा को कार्य सल्लाहकारी हुन्छ । संघ र राज्यका बीचको मुद्दा

परेमा कसले हेर्ने ? कयिअप्तयचरएचयकभअगतप्यल न्मलभचर्वा किन एउटा काम गर्ने दुई वटा व्यक्ति आवश्यक छैन ।

पूर्व महान्यायाधिवक्ता श्री राघवलाल वैद्य

दुई पदको आवश्यकता रहेको छ । एचयकभअगतप्यल को विषय, मुद्दा फिर्ता लिने विषयमा स्वतन्त्र निकायको व्यवस्था गर्नु पर्ने । नाम मात्रको होइन कयिअधि मुद्दा चलाउने नचलाउने अधिकार दिनु पर्दछ । व्ततयचलभथ न्मलभचर्वा ले सरकारलाई नीतिगत विषय र कानूनी विषयमा राय सल्लाह दिने अधिकार दिने । अपवादात्मक विषयमा क्लअयलकष्कतभलअथ भएको अवस्थामा व्ततयचलभथ न्मलभचर्वा ले अखण्मध गर्न पाउने अधिकार हुनु पर्दछ । व्ततयचलभथ न्मलभचर्वा ले राष्ट्रिय मुद्दाहरूमा महत्वपूर्ण आयोजनाहरूमा महान्यायाधिवक्ताको राय सल्लाह लिनु पर्ने व्यवस्था हुनु पर्दछ । अब महान्यायाधिवक्ता न्याय सेवा आयोगमा जानु पर्दैन । एचवअतअभ गरेको मानिसलाई भित्र आउने कुराको व्यवस्था गर्नु पर्दछ । मुद्दा फिर्ता लिने कार्य महान्यायाधिवक्ताको राय बिना गर्नु हुँदैन । एउटाले चलाउने सरकारले फिर्ता लिने व्यवस्था ठीक छैन ।

वार अध्यक्ष श्री प्रेम खड्का

महान्यायाधिवक्ता न्याय परिषद्मा रहनु पर्दछ । सरकारी वकीललाई न्यायाधीश सरह सुबिधा दिनु पर्ने ।

६. बहस नोट

श्री सर्वोच्च अदालतमा चढाएको बहस नोट

सम्बत् २०६७ सालको रिट नं.०६७-६३-००३४

विशेष इजलास

माननीय न्यायाधीश श्री दामोदरप्रसाद शर्मा

माननीय न्यायाधीश श्री सुशीला कार्की

माननीय न्यायाधीश श्री कमलनारायण दास

नेपाल सरकार, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेतका तर्फबाट

बहसनोट

महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय, नेपाल

प्रस्तुतकर्ता

विरुद्ध

भक्तपुर जिल्ला, भक्तपुर नगरपालिका वडा नं. ३ बस्ने अधिवक्ता हरिराम लवजु समेत

निवेदक

विपक्षी

मुद्दा:- उत्प्रेषणयुक्त परमादेश समेत (रिट नं.०६७-६३-००३४)

उल्लिखित निवेदक समेतले दायर गर्नु भएको उक्त रिट निवेदनका सन्दर्भमा सम्मानित अदालतका विशेष इजलास समक्ष मिति २०६८।९।७ का दिन सुनुवाइ भई बहस गर्ने क्रम समाप्त भएको र मिति २०६८।९।०।१९ मा निर्णय सुनाउने गरी तोकिएकोमा प्रस्तुत रिट निवेदनका सम्बन्धमा निवेदकको माग बमोजिमको आदेश जारी गर्न नपर्ने हुँदा रिट निवेदन खारेज गरिपाउन प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, कानून तथा न्याय मन्त्रालय, नेपाल कानून आयोग समेतका सरकारी निकायहरूको तर्फबाट सम्मानित इजलासका आदेश बमोजिम सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०४९ को नियम ६६ को उपनियम (३) बमोजिम निम्नलिखित व्यहोराको बहस नोट सादर प्रस्तुत गर्दछु :

१. निवेदकको माग सम्बन्धी विस्तृत विवरण रिट निवेदनबाटै अवगत हुने हुँदा यहाँ विस्तृत रूपमा उल्लेख नगरी सङ्क्षेपमा उल्लेख गरिएको छ ।

२. निवेदनको छोटकरी व्यहोरा:- मुलुकी ऐन अंश वण्डाको महलको १९ नं. मा भएको व्यवस्थामा अंश नलिएका स्वास्नी, छोरा, अविवाहित छोरी वा विधवा बुहारी हुने मानिसको चल अचल सम्पत्तिमध्ये सोही १९ नं. को देहाय १ मा पिता पुर्खाका पालाको चल अचल गैर सम्पत्तिको हकमा चलमा सबै र अचलमा आधीसम्म व्यवहार चलाउनलाई स्वास्नी, छोरा, अविवाहित छोरी वा विधवा बुहारीको मञ्जुरी नभए पनि आफू खुशी गर्न पाउने, अचलमा आधी भन्दा बढी व्यवहार चलाउनै परे पनि एक्काइस वर्ष नाघेका स्वास्नी, छोरा, अविवाहिता छोरी र विधवा बुहारीको मञ्जुरी लिईमात्र खर्च गर्न हुन्छ । मञ्जुरी नलिई गरेको सादर हुँदैन भन्ने

व्यवस्था छ । यो कानूनी व्यवस्थाले घरको मुलीले पिता पुर्खाका पालाको पैतृक सम्पत्तिको उपभोग गर्दा मञ्जुरी लिन नपर्ने गरी १६ वर्ष माथिका र २१ वर्ष मुनीका नेपाली वालिग नागरिकहरूको पैतृक सम्पत्ति माथिको नैसर्गिक हकमा रोक लगाउने प्रकृतिको भेदभावपूर्ण र लैङ्गिक विभेदपूर्ण रहेको छ । संविधान देशको मूल कानून भएकोले नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ को धारा १ ले संविधानसँग बाकिने कानून बाकिएको हदसम्म अमान्य हुन्छ । संविधानको धारा १३ ले सबै नागरिक कानूनको दृष्टिमा समान हुने, कसैलाई पनि कानूनको समान संरक्षणबाट वञ्चित नगरिने, सामान्य कानूनको प्रयोगमा कुनै पनि नागरिकमाथि धर्म, वर्ष, लिङ्ग, जातजाति, उत्पत्ति, भाषा, वैचारिक आस्था वा तीमध्ये कुनै कुराका आधारमा भेदभाव नगरिने तर महिला बालबालिका समेतका लागि कानूनद्वारा विशेष व्यवस्था गर्न रोक लगाएको नमानिने समानताको व्यवस्था छ । धारा १९ ले नेपाली नागरिकलाई कानूनको अधीनमा रही सम्पत्ति आर्जन गर्ने, भोग गर्ने र सम्पत्तिको अन्य कारोवार गर्ने हक प्रदान गरेको छ । धारा २० ले महिला भएकै कारण कुनै पनि किसिमको भेदभाव नगरिने प्रत्याभूति रहेको छ । धारा २२ ले बालबालिकाको हक सम्बन्धी व्यवस्था गरेको छ । बालबालिका सम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा २ ले १६ वर्ष मुनीका मानिसलाई बालबालिकाको रूपमा परिभाषित गरेको र नेपाल नागरिकता ऐन, २०६३ को दफा २(क) ले नाबालक भन्नाले १६ वर्ष उमेर पूरा नभएको व्यक्ति सम्झनु पर्ने व्यवस्था भएको तथा १६ वर्षको उमेर पुगेपछि नागरिकता पाउने व्यवस्था गरेको छ । मतदाता नामावली सम्बन्धी ऐन, २०६३ को दफा ५ (१) (ख) मा १८ वर्ष उमेर पुगेको व्यक्ति मतदाता हुने स्पष्ट व्यवस्था छ ।

नेपाल पक्ष राष्ट्र रहेका बाल अधिकार महासन्धि, १९८९ ले १८ वर्ष मुनीकालाई बालबालिका मानेको छ । महिला विरुद्ध हुने सबै प्रकारका भेदभाव उन्मूलन गर्ने महासन्धि, १९७९ ले लैङ्गिक विभेदमा रोक लगाएको छ । संविधानले प्रत्याभूत गरेका मौलिक हकको विपरीत हुने गरी मुलुकी ऐन अंशवण्डाको महलको १९ नं. को देहाय १ मा रहेको व्यवस्थाले १६ वर्ष पुगेका र २१ वर्ष नपुगेका नागरिकको मौलिक हकमा आघात पुऱ्याएको छ । नेपालले अनुमोदन गरेका अन्तर्राष्ट्रिय सन्धि सम्झौतामा भएको व्यवस्था नेपाल सन्धि ऐन, २०४७ को दफा ९ ले नेपाल कानून सरह लागू हुने र नेपाल कानून बाकिएको हदसम्म अमान्य र बदर हुने व्यवस्था भएकोले अंशवण्डाको महलको १९ नं. को देहाय १ मा उल्लेखित “एक्काइस वर्ष नाघेका” भन्ने शब्दावलीले २१ वर्ष मुनीका र १६ वर्ष माथिका नेपाली नागरिकलाई समेत नाबालक सरह हुने कानूनी व्यवस्था रहेकोले “एक्काइस वर्ष नाघेका” भन्ने प्रावधान उत्प्रेषणको आदेशद्वारा अमान्य र बदर घोषित गरी सो पदावलीको ठाउँमा वालिग नेपाली नागरिकको उमेरको हद १६ वर्ष कायम हुने गरी कानूनी व्यवस्था गर्नु गराउनु भनी परमादेश समेत जारी गरिपाउँ भन्ने समेतको निवेदन जिकिर रहेको देखिन्छ ।

३. लिखित जवाफको सार सङ्क्षेप:-

३.१. अन्य निवेदकले प्रत्यक्षी बनाएका निकायहरूले लिखित जवाफ प्रस्तुत गर्दा निवेदकको के कस्तो संवैधानिक तथा कानूनी हक अधिकारमा आघात परेको हो भन्ने बारेमा स्पष्ट उल्लेख नभएकोले केवल दाबी लिदैमा वा विपक्षी बनाउँदैमा दाबी प्रमाणित हुँदैन । मुलुकी ऐन अंशवण्डाको महलको १९ नं. को देहाय १ मा रहेको व्यवस्था कसरी असमान भयो स्पष्ट उल्लेख भएको पाइँदैन । विवेकपूर्ण वर्गीकरणको सिद्धान्त अन्तर्गत कानून निर्माण गर्ने अधिकार रहेको व्यवस्थापिकाले बनाएको कानून संविधानसम्मत छैन भनी दाबी लिने निवेदकले नै प्रमाणित गर्नु पर्ने हुन्छ । अन्यथा विधायिकाले बनाएको कानून संविधानसम्मत छ भन्ने अनुमान गरिन्छ । मुलुकी ऐनलाई विस्थापित गरी परिवर्तित सन्दर्भ अनुरूप नयाँ कानून बनाउने उद्देश्यले कानून तथा न्याय मन्त्रालयबाट मिति २०६७/१०/१८ मा देवानी कानूनको संशोधन र एकीकरण गर्न बनेको विधेयक समेत व्यवस्थापिका-संसदमा दर्ता भइसकेको छ । यस्तो अवस्थामा निवेदकको माग बमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था नहुँदा रिट खारेज गरिपाउँ भन्ने व्यहोराको **प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रपरिषद्को कार्यालयको तर्फबाट लिखित जवाफ प्रस्तुत भएको छ ।**

३.२. बालबालिका सम्बन्धी ऐन, २०४८ ले १६ वर्ष नपुगेको व्यक्ति नाबालक माने तापनि अन्य प्रचलित कानूनले विषय र सन्दर्भ अनुसार छुट्टाछुट्टै उमेरलाई सो प्रयोजनको लागि वालिग मानिने व्यवस्था गरेको छ । मतदाता हुन १८ वर्ष, विहावरी गर्न २० वर्ष, संविधानसभा सदस्य निर्वाचनमा उम्मेदवार हुन २५ वर्ष उमेर पुगेको हुनुपर्ने कानूनी व्यवस्था छ । अचल सम्पत्ति खर्च गर्न मञ्जुरी लिने प्रयोजनका लागि अंशवण्डाको १९ नं. ले २१ वर्ष पूरा गरेको व्यक्तिले मात्र सगोलको सम्पत्ति बिक्री गर्ने सन्दर्भमा मञ्जुरी दिनु पर्ने गरी योग्य मानेको हुँदा १६ वर्ष पूरा गरेको सबै व्यक्ति जुनसुकै प्रयोजनका लागि योग्य हुँदैन । २१ वर्ष नाघेकाको मञ्जुरी लिनु पर्ने व्यवस्था हुनु नै सम्पत्ति व्यवस्थापन गर्ने प्रयोजनका लागि २१ वर्ष उमेर पूरा गरेको व्यक्ति परिपक्व हुने भएकोले त्यस्ता व्यक्तिको मञ्जुरी लिनु पर्ने व्यवस्था गरिएको हो । अंशवण्डाको १९ नं. को व्यवस्था संविधानको धारा १९(१) बमोजिमको कानूनी व्यवस्था भएकोले सो कानूनी व्यवस्था संविधानसँग बाझिएको छैन । रिट निवेदन जिकिर निराधार छ भन्ने व्यहोराको **कानून तथा न्याय मन्त्रालयको तर्फबाट लिखित जवाफ प्रस्तुत भएको छ ।**

३.३. कुन कुन उमेर समूहलाई वालिग मान्ने र कुन उमेर समूहलाई नाबालिग मान्ने तथा कुन उमेर समूहका व्यक्ति कस्तो कामका लागि योग्य हुन्छन् भनी उमेर समूह निर्धारण गर्ने कार्य भिन्न ठाउँमा भिन्न रूपमा रहेको छ । नेपाली व्यक्ति कुन उमेर अवस्थामा आफ्नो कर्तव्य र दायित्वबोध गर्न सक्छन् भन्ने दृष्टिकोणबाट उमेर निर्धारण गरिएको देखिन्छ । १६ वर्ष उमेर नपुगेको बालबालिका हुने, १६ वर्ष उमेर पुगेपछि नागरिकता प्रमाणपत्र पाउने, १८ वर्ष उमेर पुगेपछि मतदाता हुने समेतका व्यवस्था गरेको पाइन्छ । भिन्न उमेर उल्लेख हुनु नै विषयवस्तुको गम्भीरता समेतलाई विचार गरी विधायिकाले सो कानूनी व्यवस्था गरेको हो । वस्तुनिष्ठ आधारको अभावमा निवेदकको जिकिर अनुसार परिवर्तन र संशोधन गर्न उचित

देखिदैन तसर्थ रिट निवेदन खारेज गरिपाउँ भन्ने समेत व्यहोराको **संघीय मामिला, संविधानसभा, संसदीय व्यवस्था तथा संस्कृति मन्त्रालय**को लिखित जवाफ रहेको छ ।

३.४. मुलुकी ऐन अंशवण्डाको महलको १ नं. ले परिवारका सबै सदस्यको समान अंश हकको सुनिश्चितता गरेको छ । १० नं. ले लोग्ने वा बाबु आमाले स्वास्नी वा छोराछोरीलाई इज्जत आमद अनुसार खान लाउन र आवश्यकता अनुसार उचित शिक्षा, दीक्षा र स्वास्थ्य उपचारको व्यवस्था गर्नुपर्ने, सो नगरे अंश दिनु पर्ने वाध्यात्मक व्यवस्था गरेको छ, यसबाट कुनै उमेर वा अवस्थाको शर्त वेगर सबैलाई समान अंश हकको प्रत्याभूति रहेको छ । अंशवण्डाको १९ नं.को देहाय १ को व्यवस्था अंश हक प्राप्त गर्ने व्यवस्थासँग नभई अंशको प्रयोग गर्ने विषयसँग सम्बन्धित छ । कुनै परिवारमा १६ वर्ष माथिका र २१ वर्ष मुनीका अशियारहरू रहेछन् भने उनीहरूको मञ्जुरी नलिदैमा अंश हक समाप्त हुने अवस्था पनि होइन । अंशवण्डाको १० नं. ले कुनै पनि बखतमा अशियारले आफ्नो अंश हक दावी गरी लिन पाउने व्यवस्था रहेकै छ । अंशवण्डाको १९ नं. को देहाय १ मा रहेको कानूनी व्यवस्थाबाट कसैको कानूनी हक समाप्त नहुने तथा कसैलाई विभेद र असमानताको सृजना नहुने भएकोले संविधानसम्मत कानून बदर गर्नुपर्ने अवस्था छैन रिट निवेदन खारेज गरिपाउँ भन्ने समेत **व्यवस्थापिका-संसद सचिवालय**को लिखित जवाफ प्रस्तुत भएको छ ।

३.५. राज्यले सुव्यवस्था कायम गर्ने सन्दर्भमा फरक फरक प्रयोजनका लागि फरक फरक उमेरको हद कायम गर्न सक्ने र सो कुरालाई मात्र आधार मानी विभेद भयो भन्नु कानून एवं न्यायसंगत हुँदैन । कानून बनाउने सन्दर्भमा कुन विषयमा कति उमेरको हद निर्धारण गर्ने भन्ने प्रश्न नीतिगत विषय हो यसमा विधायिकी बुद्धिमता प्रयोग भएको हुन्छ । समाजको आवश्यकता विधायिकाले बुझ्ने र सम्बोधन गरी कानून बनाउने हुनाले बौद्धिक विलासका लागि मात्र विधायिकी कानून बदर घोषित नगरिने मान्यता रहेको छ । अंशवण्डाको १९ नं. मा रहेको एक्काइस वर्ष नाघेका भन्ने वाक्यांशले सम्पत्ति सम्बन्धी हकमा अनुचित बन्देज लगाएको भन्न सकिने अवस्था छैन । प्रचलित कानूनको अधीनमा रहेर मात्र सम्पत्ति आर्जन गर्ने, उपयोग गर्ने र भोगचलन गर्ने अधिकार प्राप्त हुन्छ । मनासिव शर्त तोक्न संविधानले रोकेको छैन । अंशवण्डाको १९ नं. को व्यवस्था महिला र पुरुष वा छोरी छोरा बीच विभेदयुक्त छैन । व्यवहार चलाउनलाई मञ्जुरी दिन कति उमेर समूहका मानिसलाई सक्षम मान्ने भन्ने विषय विधायिकाको अधिकार क्षेत्रभित्रको विषय हो । १६ वर्ष उमेर पुगेपछि नागरिकता प्राप्त हुने भएपनि नागरिकताको प्रमाण पत्र प्राप्त गर्दैमा राज्यले प्रदान गरेका सबै हक र सुविधा स्वतः प्राप्त हुँदैनन् । मतदाता हुन १८ वर्ष, स्वेच्छाले विहावरी गर्न २० वर्ष, निजामती सेवामा प्रवेश गर्न १८ वर्षको उमेर निर्धारण गरिएको छ । उमेरका आधारमा दायित्व निर्धारण हुने व्यवस्था मुलुकी ऐन जवर्जस्ती करणीका महलको ३ नं. मा छ तसर्थ राज्यले उमेरका आधारमा मनासिव वर्गीकरण गरी अधिकार र दायित्व निर्धारण गर्न सक्छ उचित र तर्क संगत वर्गीकरणले भेदभाव सृजना गरेको

मान्न सकिदैन । अंशवण्डाको १९ नं. को कानूनी व्यवस्था संविधानसम्मत छ रिट खारेज गरिपाउँ भन्ने समेत नेपाल कानून आयोगको तर्फबाट लिखित जवाफ प्रस्तुत भएको छ ।

४. निर्णायक प्रश्नहरू:- माथिका प्रकरणहरूमा उल्लेख भएका निवेदनको तथ्यगत व्यहोरा, प्रत्यर्थीहरूबाट पेश भएका लिखित जवाफको सङ्क्षेपीकृत व्यहोरा, विद्यमान संवैधानिक र कानूनी व्यवस्था एवं सम्मानित सर्वोच्च अदालतबाट विधायिकी कानूनको न्यायिक पुनरावलोकनका क्रममा प्रतिपादित कानूनी सिद्धान्त समेतका आधारबाट प्रस्तुत रिट निवेदनको सन्दर्भमा सम्मानित इजलासबाट निरूपण हुनुपर्ने मुलभूत प्रश्नहरू देहाय बमोजिम रहेका छन्-

(क) मुलुकी ऐन अंशवण्डाको महलको १९ नं. को देहाय १ मा रहेको व्यवस्था सोह्र वर्ष माथि र एक्काइस वर्ष मुनीका व्यक्तिको पैतृक सम्पत्ति माथिको हकमा नागरिकबीचको समानता र लैङ्गिक दृष्टिले संविधानसम्मत छ, छैन ? कानूनले निर्धारण गरेको उमेरको व्यवस्था विधायिकी विवेक र सक्षमताको अनुकूल हुन्छ, हुँदैन ?

(ख) नेपालले अनुमोदन समेत गरी पक्ष राष्ट्र रहेका अन्तर्राष्ट्रिय सन्धि सम्झौताले उमेरका सम्बन्धमा गरेको व्यवस्थासँग निवेदकले उल्लेख गरेको अंशवण्डाको महलको १९ नं. को देहाय १ को व्यवस्था बाभिएको र विभेदकारी छ, छैन ?

(ग) निवेदकको माग बमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने हो, होइन ?

५. उपर्युक्त निर्णायक प्रश्नहरूको समाधानका क्रममा सम्मानित इजलासको सहयोगका लागि प्रत्येक प्रश्नमा आधारित रही संवैधानिक विधिशास्त्रका स्थापित सिद्धान्त, हाम्रो कानून प्रणालीले अवलम्बन र स्वीकार गरेको मान्यता, संवैधानिक एवं कानूनी व्यवस्था र न्यायिक सिद्धान्त समेतका आधारमा विवेचना सहितको बहस नोट^१ सादर प्रस्तुत गरिएको छ ।

५.१. सैद्धान्तिक पक्ष:- पहिलो प्रश्नका सन्दर्भमा हेर्दा लिखित संविधान भएको देशमा कानूनको तहगत श्रृङ्खला अनुसार संविधानको सर्वोच्चता संविधानले नै आत्मसात गरेको हुन्छ । संविधान मूल कानून भएकोले संविधानसँग बाभिने कानून बाभिएको हदसम्म अमान्य र बदर घोषित गर्ने असाधारण अधिकार संविधानले नै सर्वोच्च अदालतलाई प्रदान गरेको छ । विधायिकाद्वारा निर्मित कानूनले संविधानको मर्म, भावना र सीमालाई नाघेको खण्डमा नागरिकका अधिकारहरू कुण्ठित हुन सक्ने भएकोले स्वतन्त्र र सक्षम न्याय प्रणालीको अवधारणा अनुरूप कानूनको शासन, संविधानको सर्वोच्चता, नागरिक एवं मौलिक अधिकारको संरक्षणका लागि न्यायिक भूमिका निर्वाह गर्दै सर्वोच्च अदालतले संविधान प्रदत्त न्यायिक पुनरावलोकनको अधिकार मार्फत त्यस्तो कानूनलाई संविधानको कसीमा परीक्षण गरी सीमा तोक्न सक्ने र संविधानको सर्वोच्चतालाई जीवन्त राख्ने गहनतम् जिम्मेवारी सम्मानित सर्वोच्च अदालतलाई प्राप्त भएको हुँदा त्यसमा कुनै विमति छैन । कानूनको

^१ बहसनोट तयार गर्दा आधार लिइएका सन्दर्भ सामग्रीलाई इजलासको सहयोगका लागि स्रोत सहित फुटनोटमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

शासन कायम राख्न संवैधानिक सर्वोच्चतालाई आत्मसात गरी अवस्था र सन्दर्भ अनुसार सरोकारवाला पक्षले न्यायिक प्रक्रियामा सरोकार देखाई प्रवेश गरेको विषयमा संविधान र कानूनको व्याख्या गर्ने अन्तिम जिम्मेवारी रहेको सम्मानित अदालतले समय समयमा न्यायिक सक्रियता ११मअध्याय बअतखण्ड० अनुरूप व्याख्या गर्दै आदेश जारी गरेको छ । अर्को तर्फ, मौलिक हकमा अनुचित बन्देज लगाएको वा संविधानसँग बाझिएको छ भन्नु मात्र न्यायिक पुनरावलोकनका लागि पर्याप्त नहुने, कारण र आधार समेत स्पष्ट उल्लेख भएमा सम्बन्धित कानूनको संवैधानिक परीक्षण हुने हो । वस्तुगत आधारबाट निवेदन जिकिर पुष्टि नभएको अवस्थामा भैरहेको कानूनी व्यवस्थालाई अमान्य र बदर घोषित गरिरहनु परेन भन्दै न्यायपालिका स्वयं पनि संविधानको उपज भएकोले विधायिकी कानूनले संविधानको सीमा ननाघेसम्म विधायिकी कानूनलाई अमान्य गर्न नमिल्ने र यसबाट न्यायिक आत्मसंयम ११मअध्याय कर्माचक्रकतचवप्लत० को उपादेयता रही विधायिकी कानूनमा शंकाको सुविधा विधायिकाले नै पाउने गरी सम्मानित अदालतबाट न्यायिक आत्मसंयम अपनाइएको दृष्टान्त समेत पर्याप्त रहेका छन् । तसर्थ कुनै कानूनी व्यवस्था संविधानसँग बाझियो भनी दावी लिने निवेदकले नै त्यसको पुष्टि गरी प्रमाणित गर्नुपर्ने प्रमाणको भार निवेदकमाथि नै रहन्छ । त्यसरी प्रमाणित नभएको खण्डमा विधायिकी कानून संविधानसम्मत छ भनी वैधानिक अपेक्षाको सिद्धान्त अनुसार ग्रहण गरिन्छ । विधायिकाले जनताको इच्छा आकांक्षालाई राम्ररी बुझेको हुन्छ र कुनै कानून किन आवश्यक प्यो भन्ने विषय विधायिकी विवेक अन्तर्गतको विषय हो ११त गकत दभ उचभकगभम तजवत ब भिनष्कवितगचभ गलमभककतवलमक बलम अयचभअतथि बउउचभअष्वतभक तजभ लभभमक या प्तक उभयउभि तजवत प्तक विधक बचभ मष्चभअतभम तय तजभ उचयदभिक नवमभ नवलषभकत दथ भहउभचष्मलअभ बलम तजवत प्तक मष्कअचष्लवतप्यल बचभ दवकभम गउयल बमभत्रगवतभ नचयगलमक०^२ भनी व्याख्या भएको पाइन्छ । निवेदकले बदर घोषित गर्न समेत माग गर्नु भएको कानूनी व्यवस्था कायम रहँदा के कस्तो समस्या देखा परेको छ र सो व्यवस्थालाई बदर घोषित गर्दा देखा पर्ने रिक्तता र त्यसलाई पूर्ति गर्ने वैकल्पिक उपाय सुझाइएको पाइँदैन । वि.सं. २०२० सालमा मुलुकी ऐन जारी भएदेखि नै कायम रहेको र एघारौँ संशोधन पछि मिति २०५१।६।१० देखि अविवाहित छोरी समेतको मञ्जुरी लिनु पर्ने गरी थप भई लामो समयदेखि चलिआएको स्थापित विधि, प्रक्रिया र प्रचलनले पारेको बोधगम्य समस्या के हो निवेदकले स्पष्ट पार्न सक्नु भएको छैन । त्यसैले नेपालको कानून प्रणालीले लामो समयदेखि स्वीकारी अभ्यास गरी आएको कानूनी व्यवस्थालाई बदर घोषित गर्न र .

- ५.२. अंशको विषय कानून बमोजिम स्थापित कुनै खास परिवारमा जन्मकै आधारमा प्राप्त हुने नैसर्गिक अधिकारको विषय हो । मुलुकी ऐन अंशवण्डाका महलको १ नं. ले सो नम्बर प्रारम्भ भएपछि अंशवण्डा गर्दा अन्य नम्बरहरूको अधीनमा रही बाबु, आमा, लोग्ने, स्वार्नी, छोरा,

² *Middleton v. Texas Power Co.* (1919), 249 US 152 उद्धृत ने.का.प. २०६४, नि.नं. ७८५५, पृष्ठ ७१४

छोरीहरूको जीयजीयैको अंश गर्नुपर्ने, १ क.नं.ले विवाह गरिसकेकी छोरीको अंशवण्डा गर्नु नपर्ने व्यवस्था छ । १ क.नं. को व्यवस्था संविधानसँग बाभियो भनी परेको रिट खारेज भै बदर घोषित गर्नु नपर्ने ठहरी सम्मानित अदालतबाट आदेश भैसकेको छ ।^३ अंशवण्डाको १० नं. ले बाबु आमाको जीउ छउन्जेल अंश दिन छोरा छोरीले बाबु आमालाई बाध्य गराउन नसक्ने, अहिले छुट्टिन् भन्ने छोराछोरीलाई बाबु आमाले कर लगाई छुट्याउन पनि नहुने, पत्नीले पतिको जीउ छउन्जेल लोग्नेको मन्जुरी बिना अंश लिई छुट्टिन नपाउने लोग्ने वा बाबु आमाले स्वास्नी वा छोरा छोरीलाई इज्जत आमद अनुसार खान, लाउन र आवश्यकता अनुसार उचित शिक्षा दीक्षा र स्वास्थ्य उपचारको व्यवस्था गर्नुपर्ने नगरे अंश दिनु पर्ने बाध्यात्मक व्यवस्था गरेको छ । अंशवण्डाको १९ नं.को देहाय १ नं. को व्यवस्था अनुसार २९ वर्ष नपुगी अशियारले अंश नै नपाउने भन्ने होइन । यो व्यवस्थाले कसैलाई पनि लैङ्गिक रूपमा विभेद ९न्मलमभच मष्कअचकप्लवतप्यल० गरेको छैन । यो कानूनी व्यवस्था घरको मुख्य भई व्यवहार गर्नको लागि घर व्यवहार चलाउनलाई राखिएको व्यवस्था हो । यो व्यवस्थाको दुरुपयोग गरी कसैले व्यवहार गरेमा १६ वर्ष पुगेका र २९ वर्ष ननाघेका अशियारले कुनै पनि बखत कानून बमोजिम आफ्नो अंश हक दावी गरी लिन अंशवण्डाको १० नं. को व्यवस्थाले कुनै बन्देज लगाउँदैन । कुनै पनि अशियारको अंश हक प्राप्त गर्ने विषय कुनै परिवारमा जन्म भएको कारणबाट सृजना हुने नैसर्गिक अधिकारको विषय भएको र अंशवण्डाको १९ नं. को देहाय १ अंशको प्रयोग गर्ने विषयसँग सम्बन्धित हो । कुनै पनि प्राकृतिक व्यक्तिमा निश्चित उमेर पुगेपछि व्यवहारमा परिपक्वता, निर्णय गर्ने क्षमता, विचारमा दृढता र सम्पत्ति सदुपयोगमा निश्चितता आउँछ, भन्ने विधायिकी सद्विवेकको प्रयोग गरी एक्काइस वर्ष उमेरको मापदण्ड राखिएको देखिन्छ ।

५.३ . सम्पत्ति सम्बन्धी कानून तथा न्यायको मान्य सिद्धान्त अनुसार व्यक्तिले आफ्नो सम्पत्तिको दुरुपयोग गर्दैन भन्ने राज्यले अनुमान गर्दछ, ९क्षत अयलअभचलक तजभ कतवतभ तजवत तजभ उभचकयलक मय लयत ण्कगकभ तजभष्च उचयउभचतथ० । प्रत्येक व्यक्तिले आफ्नो सम्पत्ति कानून बमोजिम र ठीक तरिकाले उपयोग गर्दछ, ९क्षत ष्क तजभ अयलअभचल या तजभ कतवतभ तजवत भखभचथयलभ गकभक जष्क उचयउभचतथ भिनर्वाथि बलम उचयउभचथि० आफूले आर्जेको सम्पत्ति आर्जन गर्ने व्यक्तिका उत्तराधिकारीको लागि पनि हो त्यसैले जसले आफ्नो लागि आर्जन गर्दछ, उत्तराधिकारीले त्यसको अपेक्षा राख्दछ, भन्ने समेतका कानूनी सिद्धान्त प्रचलनमा रहेको पाइन्छ । त्यसैले अंशवण्डाको १९ नं. को देहाय १ मा रहेको एक्काइस वर्ष नाघेका स्वास्नी, छोरा, अविवाहित छोरी र विधवा बुहारीको मन्जुरी नलिए आधाभन्दा बढीको अचल सम्पत्तिको विक्री सदर नहुने व्यवस्था घरको मुख्य भै व्यवहार चलाउने व्यक्तिलाई कानूनले तोकेको शर्त सहितको सुविधासम्म हो । यो व्यवस्थाबाट वालिग नागरिकको अंश हक समाप्त नहुने तथा अंश हकको रूपमा प्राप्त गर्ने सम्पत्ति उपयोग सम्बन्धी मौलिक हकबाट

^३ ने.का.प. २०६५, अंक ११, नि.नं. ८०३१, पृ. १३०१

वञ्चित नहुने हुँदा बदर गर्नु पर्ने अवस्था छैन । कुनै पनि नागरिकलाई सम्पत्ति आर्जन गर्ने, भोग गर्ने, बेचबिखन गर्ने र सम्पत्तिको अन्य कारोबार गर्ने हक संविधानको धारा १९(१) बमोजिम प्रचलित कानूनको अधीनमा रही प्राप्त हुने हक हो । अंशवण्डाको १९ नं. को देहाय १ मा रहेको कानूनी व्यवस्था संविधानको धारा १९(१) अनुरूपको कानून भएकोले संविधानको धारा १६४(२) बमोजिम अमान्य नभई हालसम्म सञ्चालनमा रहेको कानूनी व्यवस्था हुँदा बदर घोषित हुने अवस्था छैन ।

- ५.४. निवेदकले घर मुलीले पिता पुर्खाका पालाको पैतृक सम्पत्तिको उपभोग गर्दा मञ्जुरी लिन नपर्ने गरी १६ वर्ष माथिको र २१ वर्ष मुनीका नेपाली वालिग नागरिकहरूको पैतृक सम्पत्ति माथिको नैसर्गिक हकमा रोक लगाएकोले भेदभावपूर्ण र लैङ्गिक विभेदीकरण भएको भन्ने जिकिर लिन भएको छ । मूलतः कुनै व्यक्तिलाई सम्पत्ति प्राप्त हुने विभिन्न तरिका हुन्छन् । कुनै व्यक्तिको कुनै वस्तुमाथि वास्तविक वा कानूनी स्वामित्व भएमा त्यो व्यक्तिको सो वस्तुमाथि पूर्ण हक हुन्छ । भौतिक वस्तुमाथिको कब्जाले स्वामित्वको हक उत्पन्न हुन्छ । त्यस्तो कब्जा कानून बमोजिम गरिएको रीयलन उयककभककयचथ यधलभचकजण्ड० हुनु पर्छ । सम्पत्तिको प्राप्ति चिरभोग १एचभकअचण्डतण्यल० का आधारमा पनि गरिन्छ । समयवाधि वितेको कारण कुनै व्यक्तिलाई सम्पत्तिमाथि कुनै अधिकार प्राप्त हुने तरिका नै भोगाधिकार हो । व्यक्तिले आफ्नो सम्पत्तिको कब्जा एवं स्वामित्वप्रति सदा जागरुक हुनु पर्छ, अन्यथा विलम्ब हुन गएमा अधिकारको समाप्ति हुन्छ, रीयलन उयककभककयचथ अचभबतभक तजभ चणजत बलम यिलन धवलत या उयककभककयचथ मभकतचयथक तजभ० भन्ने समेत मान्यता रहेको पाइन्छ । कानूनद्वारा निर्दिष्ट सम्भौता वा करारको माध्यमबाट पनि सम्पत्ति प्राप्त हुने सिद्धान्तलाई स्वीकार गरिएको छ । सम्पत्तिको प्राप्ति अपुताली वा उत्तराधिकार १क्षजभचण्टवलअभ० का माध्यमबाट पनि हुन्छ । कुनै व्यक्तिको शेषपछि सम्पत्ति अपुताली वा उत्तराधिकारीका रूपमा कानूनी प्रतिनिधिहरूमा सन्ने व्यवस्थासँगै मृतकको इच्छापत्र १धर्षी० अनुसार पनि सम्पत्ति कार्यान्वयन गर्ने प्रचलन विभिन्न देशमा रहेको पाइन्छ । मृतकले आफ्नो जीवनकालमै इच्छा पत्र गरी उत्तराधिकारीको नाम उल्लेख गरेकोमा त्यही व्यक्तिले सम्पत्ति प्राप्त गर्ने १त्मकतकभलतवचथ कगअभककयचथ० अधिकार सृजना हुन्छ । सम्पत्ति प्राप्तिमा यी कानूनी मान्यता र सिद्धान्त रहेकोमा कानून बमोजिम स्थापित परिवारमा जन्मेको व्यक्तिले अंश पाउने नैसर्गिक अधिकारलाई अंशवण्डाको १९ नं. को देहाय १ ले समाप्त गर्ने स्थिति रहदैन । तसर्थ यो कानूनी व्यवस्थाले मौलिक हकको प्रयोगमा कुनै बन्देज लगाउने देखिदैन । प्रत्येक नागरिकलाई प्रचलित कानूनको अधीनमा रही सम्पत्ति आर्जन गर्ने, भोग गर्ने, बेचबिखन गर्ने र सम्पत्तिको अन्य कारोबार गर्ने हकलाई अंशवण्डाको १९ नं. को देहाय १ ले गरेको मञ्जुरीको व्यवस्थाले संकुचित गर्दैन साथै मुलुकी ऐन अ.व.४० नं. र अ.व.८३ नं.ले गरेको कानूनी मार्ग अवलम्बन गरी उपचार प्राप्त गर्ने हक सुरक्षित रहकै देखिन्छ । यो अवस्थापछि पनि कानूनी बाटो अपनाई हक संरक्षण गर्न सक्ने कानूनी व्यवस्था खुला रहेकै छ ।

६. उमेरका आधारमा अधिकार र दायित्व सृजना गर्ने कानून विभेदकारी हुँदैन:-

६.१. सम्मानित इजलासबाट निरूपण हुनुपर्ने प्रकरण ४ (क) मा उल्लेखित पहिलो प्रश्नका सन्दर्भमा थप हेर्दा विधायिकाले कानून निर्माण गर्दा विधायिकी विवेक र सक्षमता शिभनष्कवितष्वभ धष्कमक बलम अकउभतभलअथ० को प्रयोग गरी निश्चित उमेरका आधारमा सो उमेर अवस्थाका व्यक्तिलाई अधिकार र दायित्व सृजना हुने व्यवस्था गरेको हुन्छ । उमेरका आधारमा गरिने वर्गीकरण मनासिव ९चभकयलवदभि अविक्कषअवतष्यल० मानिने हुँदा त्यस्तो वर्गीकरण असमान हुँदैन । समानताको सिद्धान्त निरपेक्ष नभई सापेक्ष हुन्छ । समानता समानहरूका बीचमा मात्र लागू हुन्छ । समान र असमानबीच समान व्यवहार गरिएमा समानता नभई असमानता नै हुन पुग्छ अर्थात् समान र असमान वर्गबीच असमान व्यवहार गरी समानता कायम गर्ने विधायिकी प्रयास नै सकारात्मक विभेद ९एयकषतष्वभ मष्कअचषप्लवतष्यल० हो । राज्यले कानून बनाई कुनै उद्देश्य प्राप्तिका लागि समझपूर्ण भिन्नताबोध ९क्षलतभाष्निष्दभि मषाभचभलतष्व० का आधारमा वर्गीकरण ९अविक्कषअवतष्यल० गर्न सक्छ । निरपेक्ष समानता सम्भव मानिँदैन त्यसैले उमेर समेतका आधारमा अधिकार र दायित्वको वर्गीकरण गर्नु असमान व्यवहार होइन । समानताको सिद्धान्तको मर्म कानूनले गर्ने वर्गीकरण पनि एक हो त्यसैले समाजको सर्वोत्तम हितका लागि वर्गीकरण गरी कानून बनाउनु संवैधानिकताको कसीमा अनुचित होइन । वर्गीकरण कानूनी, औचित्यपूर्ण र मनासिव भएमा पृथक व्यवहार गर्न छुट्टयाइएका र अन्य व्यक्तिबीचको भिन्नता स्पष्ट चित्रण हुन्छ । उमेर समेतका आधारमा गरिने वर्गीकरणको उद्देश्य विवेकसम्मत रूपले अन्योन्याश्रित ९चतष्यलवर्वा लभहगक धप्तज तजभ यदवभअत० भएमा र सो वर्गीकरण कानून सम्मत शिबधार्गा अविक्कषअवतष्यल० भएमा न्यायिक पुनरावलोकनका माध्यमबाट गरिने परीक्षणमा कानूनको संवैधानिकता पुष्टि हुन्छ । संवैधानिकताको परीक्षणका सन्दर्भमा वर्गीकरण प्रतिको विधायिकाको चाहना र त्यसबाट असमान व्यवहार नभएको भनी विश्वास गर्ने आधारका बीच न्यायिक सन्तुलन ९वामअध्यगक दवविलअभ० कायम भै रहेको अवस्था विद्यमान हुँदा उमेरका आधारमा अधिकार र दायित्व सृजना गर्ने कानूनी व्यवस्था संविधानसम्मत छ र असंवैधानिक भयो भन्ने निवेदकको भनाई निरर्थक छ । यसै सन्दर्भमा प्रचलित नेपाल कानूनले उमेरका आधारमा अधिकार र दायित्व सृजना गर्नका लागि गरेका केही व्यवस्था देहाय बमोजिम रहेको देखिन्छ -

सि.नं.	ऐनको नाम	दफा	अधिकार वा दायित्वको विषय	कैफियत
१-	आयुर्वेद चिकित्सा परिषद ऐन, २०४५	५.१.१ख.	आयुर्वेद चिकित्सा व्यवसाय गर्न अनुभवी र ५० वर्ष उमेर पुगेको	
२-	नेपाल मेडिकल काउन्सिल ऐन, २०२०	६(घ)	आवश्यक उपाधि प्राप्त गरेको मितिले ५ वर्ष पूरा नभएको भए सदस्य हुन अयोग्य हुने	
३-	नेपाल स्वास्थ्य सेवा ऐन, २०५३	१२	नियुक्तिका लागि सहायक पद - १८ वर्ष नियुक्तिका लागि अधिकृत तह - २१ वर्ष र	

			४५ वर्ष पूरा भएको भए अयोग्य हुने	
4-	मानव शरीरको अङ्ग प्रत्यारोपण (नियमित तथा निषेध) ऐन, २०५५	१५	स्वेच्छाले अङ्ग दान गर्न मंजुरी दिने दाता १८ वर्ष उमेर पुगेको हुनु पर्ने	
5-	बालबालिका सम्बन्धी ऐन, २०४८	११	१६ वर्ष नपुगेको बालक र आपराधिक दायित्व	
6-	ज्येष्ठ नागरिक सम्बन्धी ऐन, २०६३	दफा २(क) दफा १२	६० वर्ष उमेर पुगेको नेपाली नागरिक कैद सजायमा छुट दिन सकिने	
7-	राष्ट्रिय महिला आयोग ऐन, २०६३	६	अध्यक्षको लागि - ४० वर्ष उमेर पुगेको सदस्यको लागि - ३५ वर्ष उमेर पुगेको	
8-	विवाह दर्ता ऐन, २०२८	४	विवाह योग्य पुरुष र स्त्रीको उमेर २० वर्ष पूरा भएको हुनुपर्ने	
9-	गुठी संस्थान ऐन, २०३३	११	समिति वा विद्वत् समितिको सदस्य हुन एककाइस वर्ष पूरा भएको हुनुपर्ने	
10-	स्थानीय निकाय (निर्वाचन कार्यविधि) ऐन, २०४८	१७	उम्मेदवार हुन २१ वर्ष उमेर पूरा गरेको हुनु पर्ने	
11-	मतदाता नामावली सम्बन्धी ऐन, २०६३	५	मतदाता हुन १८ वर्ष उमेर पुगेको	
12-	संविधानसभा सदस्य निर्वाचन ऐन, २०६४	१८(ख)	उम्मेदवार हुन २५ वर्ष उमेर पूरा भएको	
13-	निजामती सेवा ऐन, २०४९	१०	राजपत्र अनंकित पदमा नियुक्त हुन १८ वर्ष राजपत्रांकित पदमा नियुक्त हुन - २१ वर्ष रा.प.प्रथम, द्वितीय खुलाको लागि ४५ वर्ष ननाघेको	
14-	व्यवस्थापिका-संसद सचिवालय सम्बन्धी ऐन, ०६४	२० ४५	राजपत्र अनंकित पदमा नियुक्ति - १८ वर्ष राजपत्रांकित पदमा नियुक्ति - २१ वर्ष ६० वर्ष पुगेपछि सेवाबाट अवकास	
15-	नेपाल नगरिकता ऐन, २०६३	८	वशजको नाताले नागरिकता प्रमाणपत्र प्राप्त गर्न १६ वर्ष उमेर पुगेको	
16-	मुलुकी ऐन विहावरीको महल	२ नं.	संरक्षकको मञ्जुरी भए - १८ वर्ष मञ्जुरी नभए - २० वर्ष	
17-	मुलुकी ऐन अंशवण्डाको महल	१९ नं. को देहाय १	अंश नलिएको अवस्थामा अचल सम्पत्तिमा व्यवहार चलाउन मञ्जुरी दिन - २१ वर्ष पुगेको	
18-	मुलुकी ऐन जवर्जस्ती करणीको महल	३ नं.	पीडितको उमेर अनुसार कसूरदारलाई कैद सजाय हुने	
19-	बालश्रम (निषेध र नियमित गर्ने) ऐन, २०५६	३, १९	१४ वर्ष उमेर पूरा नगरेका श्रमिकलाई काममा लगाए सजाय हुने	

निवेदकले माथि उल्लेख भएका केही कानूनी व्यवस्थामध्ये विधायिकाले कानून बनाउँदा उमेरका आधारमा अधिकार र दायित्व सृजना हुने गरी निर्माण गरेको मुलुकी ऐन अंशवण्डाको महलको १९ नं.को देहाय १ मा रहेको अचलमा आधी भन्दा बढी भने व्यवहार चलाउने परे पनि एक्काइस वर्ष नाघेका स्वास्नी, छोरा, अविवाहित छोरी र विधवा बुहारीहरूको मञ्जुरी लिई मात्र खर्च गर्न हुन्छ। मञ्जुरी नलिई खर्च गरेको सदर हुँदैन भन्ने कानूनी व्यवस्थामा रहेको एक्काइस वर्ष नाघेका भन्ने शब्दावलीले सोह्र वर्ष माथि र एक्काइस वर्ष मुनीको उमेर समूहका नेपाली नागरिकलाई समेत नाबालक सरहको व्यवस्था गरेको हुँदा सो को सट्टा सोह्र वर्ष कायम गरिपाउन माग गरेको देखिन्छ। एकाघर सगोलमा रहेको अवस्थामा घरको मुख्य भई व्यवहार चलाउनका लागि संगोल परिवारका सदस्यको पालन पोषण, शिक्षादीक्षा, औषधि उपचार, रेखदेख आदि कार्य गर्नु घरको मुख्य व्यक्तिको अभिभावकीय दायित्व समेत भएकोले सो दायित्व पूरा गर्न पैतृक सम्पत्तिको अचलमा आधीभन्दा बढी खर्च गर्नुपर्ने अवस्थामा मञ्जुरी लिनु पर्ने वाध्यात्मक व्यवस्था विधायिकाले गरेको हो। सोह्र वर्ष उमेर पुग्नासाथ सम्पूर्ण नागरिक तथा राजनीतिक अधिकार सृजना हुने र सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक दायित्व पूरा गर्न सकिन्छ भन्ने विधायिकी मनसाय नभई एक्काइस वर्ष नाघेपछि मानिसमा आउने परिपक्वता, निर्णय गर्न सक्ने क्षमता, सम्पत्तिको सदुपयोग गर्न सक्ने विवेकशीलतालाई विचार गरी सो उमेरको वर्गीकरण गरेको हो। यो व्यवस्थाले मुनासिव वर्गीकरणको सिद्धान्त ९अभयकयलवर्दभि ऋविककषषवतप्यल त्जभयचथ० लाई उल्लङ्घन गरेको नभई माथि उल्लेख भएका कानूनी व्यवस्थाका केही दृष्टान्तले समेत विधायिकी विवेकको प्रतिनिधित्व गरेको हुँदा अधिकार र दायित्व सृजना गर्ने समान स्थितिका ऐन ९एयधभच बलम ष्विदरषप्तथ अयलाभचचप्लन ब्यतक या भत्रगर्वा िययतप्लन० वाट अंशवण्डाको १९ नं. को देहाय १ मा रहेको “एक्काइस वर्ष” शब्दलाई न्यायिक पुनरावलोकनमा प्रयुक्त हुने काटकुटको सिद्धान्त ९म्यअतचप्लभ या कभखभचवदरषप्तथ० का आधारमा बदर घोषित गर्नुपर्ने अवस्था विद्यमान नहुँदा रिट निवेदन खारेजभागी छ। साथै मुलुकी ऐनमा भएको एघारौँ संशोधनपछि एक्काइस वर्ष नाघेकी अविवाहित छोरी समेतको मञ्जुरी लिनु पर्ने व्यवस्थाको अतिरिक्त विधवा बुहारीको समेत मञ्जुरी लिनु पर्ने हुँदा लैङ्गिक न्यायको दृष्टिले समेत सो कानूनी व्यवस्थाले लैङ्गिक समानता र न्यायको अवधारणालाई समेत आत्मसात गरेको देखिन्छ।

७. नेपालले अनुमोदन समेत गरी पक्ष राष्ट्र रहेका अन्तर्राष्ट्रिय सन्धि सम्झौताले उमेरका सम्बन्धमा गरेको व्यवस्थासँग अंशवण्डाको महलको १९ नं. को देहाय १ को व्यवस्था विभेदकारी र बाभिएको छ, छैन ? भन्ने दोस्रो प्रश्नको सन्दर्भमा हेर्दा नेपालले नागरिक तथा राजनीतिक अधिकार सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिज्ञापत्र, १९६६ मा १४ मे १९९१ मा अनुमोदन/सम्मिलन गरेको छ। त्यसै गरी आर्थिक, सामाजिक तथा साँस्कृतिक अधिकार सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिज्ञापत्र, १९६६ मा पनि १४ मे १९९१ मा नेपालले अनुमोदन/सम्मिलन गरी पक्ष राष्ट्रको रूपमा रहेकोमा विवाद छैन। बाल

अधिकार सम्बन्धी महासन्धि, १९८९ मा नेपालले १४ सेप्टेम्बर १९९० मा अनुमोदन गरेको र महिला विरुद्धका सबै प्रकारका भेदभाव उन्मूलन गर्ने सम्बन्धी महासन्धि, १९७९ मा नेपालले २२ अप्रिल १९९१ मा अनुमोदन गरी सकेको देखिन्छ। नेपाल पक्ष राष्ट्र रहेका यी प्रतिज्ञापत्र र महासन्धिमा भएका व्यवस्था नेपाल सन्धि ऐन, २०४७ को दफा ९ बमोजिम नेपाल कानून सरह लागू हुने उल्लेख भएकोमा नेपाल कानूनमा भएको अंशवण्डाको १९ नं. को देहाय १ को व्यवस्था अशियारको अंश सम्बन्धी नैसर्गिक अधिकारबाट वञ्चित गर्ने प्रकृतिको नभई अंशमा हक प्रदान गर्ने र सम्पत्तिको व्यवस्थापन र परिचालनसँग सम्बन्धित कानूनी व्यवस्था हो। नेपाल पक्ष राष्ट्र रहेको अन्तर्राष्ट्रिय सन्धि सम्झौताको व्यवस्था नेपाल कानून सरह लागू हुने गरी भएको व्यवस्थाले जुनसुकै सन्धि र त्यसको कुनै व्यवस्थालाई सोझै नेपाल कानून सरह सम्मानित अदालतबाट लागू गराउन सकिने अवस्था हुँदैन। कानून हुनु र कानून सरह लागू हुनु दुई पृथक कुरा हुन्।^४ कुनै कुरा कानून सरह लागू हुन्छ भन्दैमा सबै सन्दर्भमा सबै प्रयोजनका निमित्त त्यसलाई वैधानिक प्रक्रियाद्वारा निर्मित कानूनको रूपमा ग्रहण गर्न मिल्दैन। सन्धि सम्झौताको अनुमोदन वा सम्मिलनबाट पक्ष राष्ट्रमा सृजना हुने जिम्मेवारी पूरा गर्नुपर्ने अन्तर्राष्ट्रिय दायित्व राष्ट्रमाथि पर्ने र अवस्था अनुसार सन्धिको व्यवस्था विधायिकी प्रक्रियाबाट कानून बनाएर पूरा गर्न सकिने अवस्था रहन्छ। विधायिकी कानूनले समानताको सिद्धान्त अन्तर्गत औपचारिक समानता ^१यकर्वा भत्रगवपित्थ० र सारवान समानता ^१मादकतवलतष्वभ भत्रगवपित्थ० का सिद्धान्तको साथै लैङ्गिक विभेद ^१न्मलमभच मष्कअचष्लवतष्यल० गरेको देखिदैन भने सो कानून अन्तर्राष्ट्रिय सन्धि सम्झौतासँग बाभिएको र विभेदकारी रहेको अर्थ गर्न मिल्दैन।

७.१. बाल अधिकार सम्बन्धी महासन्धि, १९८९ को धारा १ ले सो महासन्धिको प्रयोजनका लागि बालबालिका भन्नाले बालबालिका सम्बन्धी कानूनले पहिले नै साबालक हुन्छ भनी तोकेकोमा बाहेक १८ वर्षभन्दा कम उमेरका मानिसलाई सम्झनु पर्ने^५ भनी परिभाषा गरेको छ। बालबालिकाको सम्बन्धमा राष्ट्रिय कानूनले गर्ने व्यवस्थालाई यो महासन्धिले अन्यथा उल्लेख गरेको छैन। उमेरका सम्बन्धमा विधायिकाले वर्गीकरण गरी कानून बनाई अधिकार र दायित्व निर्धारण गर्न सक्ने व्यवस्था खुला राखेको छ। विवाह पश्चात पारिवारिक दायित्व थपिने र विवाहयोग्य उमेर राष्ट्रिय कानूनबाट निर्धारण गरिन्छ। उदाहरणार्थ हङ्कङ, इण्डोनेशिया, मलेशिया र सिङ्गापुरमा विवाह योग्य उमेर २१ वर्ष निर्धारण गरिएको छ। जापान र थाइल्याण्डमा विवाहयोग्य उमेर २० वर्ष निर्धारण गरी संरक्षकको सहमति भए थाइल्याण्डमा १७ वर्ष, जापानमा महिला र पुरुषका हकमा १६ र १८ वर्ष निर्धारण गरिएको पाइन्छ। अष्ट्रेलिया र न्यूजिल्याण्डमा १८ वर्षको उमेरलाई विवाहयोग्य उमेर निश्चित गरेको छ। नेपालको सन्दर्भमा मुलुकी ऐन विहावरीका महलको २ नं.ले गरेको विवाहयोग्य उमेरले

^४ ज्ञानराज राई वि. कानून तथा न्याय मन्त्रालय समेत, सम्वत २०५७ सालको रिट नं. २६५१ आदेश मिति २०५८।१२।८, स.अ.वु. वर्ष ११, अंक २, पूर्णाङ्क २३६, पृष्ठ १

^५ For the purpose of the present convention, a child means every human being below the age of eighteen years unless, under the law applicable to the child, majority is attained earlier. CRC Article 1.

समानताको हक हनन नगरेकोले सो व्यवस्था संविधानसँग नबाभिएको ठहर सम्मानित अदालतबाट भैसकेको छ।^६ अर्को तर्फ बालबालिका सम्बन्धी उमेरको निर्धारण पनि विभिन्न देशमा फरक रहेको छ, जापानमा २० वर्ष, थाइल्याण्डमा १८ वर्ष, फिलिपिन्स, इजिप्ट र लेवनानमा १५ वर्ष, बेलायत, अमेरिकामा र नेपालमा १६ वर्ष नपुगेको मानिसलाई बालबालिका मानिएको छ। त्यसैले विधायिकाले कानून बनाई उमेरका आधारमा अधिकार र दायित्व सृजना हुने विवेकसम्मत वर्गीकरण ९८भकयलबदभि अविक्कषअवतप्यल० गरेको व्यवस्था संविधान तथा अन्तर्राष्ट्रिय सन्धि सम्झौता विपरीत हुँदैन।

७.२. अन्तर्राष्ट्रिय सन्धि सम्झौतामा भएको व्यवस्थासँग अंशवण्डाको १९ नं. को देहाय १ को व्यवस्था समानता वा अविभेदको सिद्धान्त विपरीत रहेको स्थिति समेत देखिदैन। कुनै कानून संविधानसँग बाभिएको देखिएमा सो कानूनलाई प्रारम्भदेखि नै वा निर्णय भएको मितिदेखि अमान्य र बदर घोषित गर्ने असाधारण अधिकार संविधानको धारा १०७(१) ले सम्मानित अदालतलाई प्राप्त छ। नेपालले हस्ताक्षर गरी पक्ष राष्ट्रको हैसियत प्राप्त गरेको अन्तर्राष्ट्रिय सन्धि वा महासन्धि नेपाल कानून सरह हुन् तथापि संविधानको धारा १०७(१) अनुसार सन्धि र राष्ट्रिय कानून बाभिए नबाभिएको भन्ने प्रश्नको निराकरण हुन सक्ने अवस्था रहदैन। वर्तमान संविधान भन्दा अधि प्रचलनमा रहेको संविधानको धारा ८८(१) मा विधायिकी कानूनको न्यायिक पुनरावलोकनको व्यवस्था रहेकोमा सन्धि र राष्ट्रिय कानून बाभिएको भन्ने प्रश्नको निरूपण संविधानको धारा ८८(१) अन्तर्गत हुन नसक्ने सम्मानित अदालतबाट ठहर भएको छ।^७ यसैगरी उमेरका आधारमा पेशा व्यवसाय गर्न पाउने गरी कानूनले तोकेको व्यवस्थाले मौलिक हकमा बन्देज नलगाएको र मूल ऐनमा ३० वर्ष उमेर पुगेको परम्परागत रूपमा आयुर्वेद चिकित्सा पेशा अपनाई आएका व्यक्तिले आफूले चलाई आएको पेशा चलाउन पाइने भनी विधायिकाले शर्त तोकेकोमा जनस्वास्थ्यको हितका लागि शैक्षिक योग्यता प्राप्त नगरेका तर अनुभवद्वारा सो पेशा गरी आई ५० वर्ष उमेर पुगेको व्यक्तिले मात्र आफूले गरी आएको पेशा गर्न पाउने भनी गरेको व्यवस्थालाई गलत भन्न मिल्ने अवस्था देखिदैन^८ भनी रिट खारेज भएको देखिन्छ। यसबाट उमेर निर्धारणको व्यवस्थालाई अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धिले विधायिकाद्वारा निर्मित राष्ट्रिय कानूनलाई खुला राखेको र राष्ट्रिय कानूनमा विधायिकी विवेक र सक्षमता ९भनष्कवितष्वभ धष्कमक बलम अकउभतभलअथ० प्रयोग गरी विधायिकाले अधिकार र दायित्व सृजना गर्न सक्ने नै भएकोले संविधानपूर्व नै जारी भएको कानून ९एचभ अयलकतप्तगतप्यलर्वा विध० संविधानको धारा १६४(२) को व्यवस्थाबाट समेत संविधानसँग बाभिएको अवस्था नदेखिदा रिट निवेदन माग बमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने देखिदैन।

^६ ने.का.प. २०६८, अंक ६, नि.नं. ८६२८, पृष्ठ ९०० (विशेष इजलास).

^७ ने.का.प. २०६४, अंक १, नि.नं. ७८०३, पृष्ठ १७ (विशेष इजलास).

^८ ने.का.प. २०६१, अंक १०, नि.नं. ७४४३, पृष्ठ १२३५ (विशेष इजलास).

७.३. घरको मुख्य भई व्यवहार चलाउने व्यक्तिले अचलमा आधा भन्दा बढी सम्पत्ति खर्च गर्दा २१ वर्ष नाघेका स्वास्नी, छोरा, अविवाहित छोरी र विधवा बुहारीको मञ्जुरी लिनु पर्ने व्यवस्था हुनु नै २१ वर्ष मुनीका र १६ वर्ष पुगेका व्यक्तिको अंश हकमा वञ्चित गर्ने प्रयोजन नभई यसको मुख्य अभिप्राय सम्पत्ति व्यवस्थापनका लागि २१ वर्ष उमेर पुगेका व्यक्ति व्यावहारिक रूपले परिपक्व हुने भएकोले त्यस्ता व्यक्तिको मञ्जुरी लिई घर व्यवहारको लागि अचल सम्पत्ति खर्च गर्न सक्ने शर्त राखिएको हो । लामो समयदेखि नेपालको कानून प्रणालीले स्वीकार गरी प्रचलनमा रहेको कानूनी व्यवस्थालाई समयको गतिशीलतासँगै परिवर्तन गर्ने उद्देश्यले कानून तथा न्याय मन्त्रालयबाट व्यवस्थापिका-संसदमा मिति २०६७।१०।१८ मा देवानी संहिता, देवानी कार्यविधि संहिताको विधेयक प्रस्तुत भई हाल संसदमा विचाराधीन अवस्थामा छ । देवानी संहिताको भाग ३ परिच्छेद ४ को दफा ११९ मा छोरा छोरी कम्तीमा २२ वर्ष उमेर पुगेपछि आमा बाबुबाट भिन्न बस्न सक्ने व्यवस्था प्रस्ताव गरी भिन्न बस्ने उमेरको वर्गीकरण र निर्धारण गरिएको छ । यसैगरी सोही संहिताको परिच्छेद १० मा अंशवण्डा सम्बन्धी व्यवस्था प्रस्ताव गरी दफा २०८ ले अंशियारको व्यवस्था, दफा २१८ ले अंश छोडपत्र गर्न सक्ने व्यवस्था र दफा २२२ ले अंशवण्डा नगरी सम्पत्ति दिन नपाउने व्यवस्था अन्तर्गत सबै अंशियारको मञ्जुरी लिई कुनै सम्पत्ति कुनै अंशियारलाई दिन सक्ने र आफ्नो अंशभागमा पर्ने हदसम्मको सम्पत्ति अन्य अंशियारको मञ्जुरी नभएपनि कुनै अंशियारलाई दिन सक्ने व्यवस्था प्रस्ताव गरिएको छ ।^९ विधेयक प्रस्तुत रूपमा नै पारित भएमा समयको परिवर्तन सापेक्ष कानूनी व्यवस्था हुने स्पष्ट छ । मुलुकी ऐन अंशवण्डाको १९ नं. को देहाय १ को व्यवस्था बदर गर्दा कानून प्रचलनमा रहेको अवस्थामा भएको व्यवहारमा समेत रिक्तता आउन सक्ने अवस्था रहन्छ । देवानी संहिता र देवानी कार्यविधि संहिता पारित भई लागू भएमा कानूनले नै कार्यान्वयन र बचाउको व्यवस्था समेत गरी ऋगत या मबतभ निर्धारण गर्ने भएकोले यस्तो अवस्थामा सम्मानित अदालतबाट विधायिकी कानूनको न्यायिक पुनरावलोकनको अधिकार प्रयोग गर्दा त्यसले सृजना गर्न सक्ने कानूनी रिक्तता र सो को पूर्ति गर्ने उपाय समेतको मूल्याङ्कन गर्नु पर्ने^{१०} हुँदा निवेदकको माग बमोजिमको आदेश जारी भएमा कानूनी रिक्तता आउने र समकक्षी व्यवस्थापिका-संसदको विवेक र सक्षमता माथि प्रश्न उठ्ने हुँदा परमादेश समेत जारी गर्नु पर्ने अवस्था छैन ।

८. निवेदकको माग बमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने हो, होइन ? भन्ने तेश्रो तथा अन्तिम प्रश्नका सम्बन्धमा हेर्दा चुनौती दिइएको कानूनी व्यवस्था २०२० सालदेखि हालसम्म कायम रहँदा के कस्तो समस्या देखा परेको छ र सो व्यवस्थालाई बदर घोषित गर्दा देखा पर्ने रिक्तता र त्यसलाई पूर्ति गर्ने वैकल्पिक उपाय सुभाइएको समाधान सहितको निचोड निवेदकले प्रस्तुत गर्नु भएको छैन । लामो समयदेखि नेपालको कानून प्रणालीले स्वीकार गरेको कानूनी

^९ कानून तथा न्याय मन्त्रालय, देवानी संहिता तथा देवानी कार्यविधि संहिताको मसौदा तथा प्रतिवेदन २०६७, पृष्ठ ७५, १०८ र १११

^{१०} ने.का.प. २०६५, अंक ८, नि.नं. ७९९७, पृष्ठ ९१७ (विशेष इजलास)

व्यवस्थाको संवैधानिक परीक्षण गर्दा सम्मानित अदालतले वैधानिक अपेक्षा शीभनप्लबतभ भउभअतबतष्यल० राख्ने विषय नै विधायिकाले जनताको इच्छा बुझेको हुन्छ, र कुनै कानूनले उमेरको वर्गीकरण किन आवश्यक ठान्यो भन्ने विषय विधायिकी विवेक र सक्षमता अन्तर्गतको विषय हो भनी वैधानिक अपेक्षाको सिद्धान्त अन्तर्गत न्याय निरूपण हुँदै आएको छ । कानूनी व्यवस्था संविधान अनुकूलको र विधायिकाले आफ्नो विधायिकी बुद्धिमत्ता शीभनप्लबतष्यभ धष्कमफ० को प्रयोग गरी विधायिकी अधिकार अन्तर्गत बनाएको कानून अमान्य घोषित गरिपाउँ भन्ने निवेदन जिकिर पुग्ने अवस्था रहदैन ।^{११} यस अतिरिक्त सम्मानित सर्वोच्च अदालतबाट विधायिकी कानूनको न्यायिक पुनरावलोकन सम्बन्धी विभिन्न रिट निवेदनका सन्दर्भमा कायम भएका सिद्धान्तमध्ये देहायका न्यायिक सिद्धान्त समेत सान्दर्भिक देखिएकोले सादर प्रस्तुत गरिएको छ ।

(१) **अधिवक्ता अच्युतप्रसाद खरेल विरुद्ध प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत^{१२}**

विधायिकाले बनाएको कानूनलाई अदालतले न्यायिक पुनरावलोकन गर्ने सम्बन्धमा केही मान्य सिद्धान्तमा रहेर गरिन्छ । जनताले आफूमा भएको सार्वभौम अधिकार प्रयोग गरी आफूले चुनेर पठाएका प्रतिनिधिहरूको समूह जसलाई विधायिका भनिन्छ, त्यस्तो निकायले बनाएको कानूनलाई अदालतले आफूमा न्यायिक पुनरावलोकन गर्ने असाधारण अधिकार छ भन्दैमा विना आधार त्यस्तो कानूनलाई अमान्य गर्दैन । समाजमा के कस्तो कानूनको अभाव छ भन्ने कुरा अदालतलाई जानकारी हुँदैन त्यस्तो कुराको जानकारी विधायिकालाई मात्र हुन्छ । विधायिकाले जहिले पनि समाजलाई खाँचो भएको र आवश्यक भएकोले कानून बनाउँछ । त्यसैले विधायिकाले शीभनप्लबतष्यभ एयधभच अन्तर्गत बनाएको कानून ऋयलकतप्लगभलत एयधभच अन्तर्गत बनाएको संविधानसँग बाभिएको भनी कसैले जिकिर गर्दछ भने त्यस्तो जिकिर प्रमाणित गर्ने भार जिकिर कर्तामा रहन्छ । विधायिकी कानूनलाई संविधानसँग बाभिएको भन्ने विवादमा अदालतले जहिले पनि आफूलाई ख्यालितबचथ कभीचभकतचवप्लत मा राख्नु पर्छ । यतिसम्म कि कुनै कानून संविधानसँग बाभिएको भन्ने विवादमा यदि विवादित कानूनको दुई बेग्लाबेग्लै व्याख्या गर्न सकिने ठाउँ भएपनि अदालतले त्यस्तो कानून संविधान अनुकूल छ भन्ने पट्टि व्याख्या गर्नु पर्छ ।

(२) **गजबहादुर बम्म विरुद्ध प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत^{१३}**

फौजदारी अपराधमा दण्डभलाप्त या मयगदत नयभक तय तजभ बअअगकभम भने जस्तै कानूनलाई असंवैधानिक घोषणा गर्ने सम्बन्धमा दण्डभलाप्त या मयगदत नयभक तय तजभ एबचष्कभलत मानिन्छ, जसले कानून संविधानसँग बाभिएको भन्ने दावी गर्छ सो कुरा उसैले प्रमाणित गर्न

^{११} ने.का.प. २०६७, अंक १०, नि.नं. ८४७३, पृष्ठ १६४१ (विशेष इजलास)

^{१२} ने.का.प. २०६६, अंक १२, नि.नं. ८२७५, पृष्ठ १९४०

^{१३} ने.का.प. २०६४, अंक ६, नि.नं. ७८५५, पृष्ठ ७१४

सक्नु पर्ने यसैगरी यस्तै प्रकृतिको सिद्धान्त कविराज पौडेल समेत विरुद्ध प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत भएको उत्प्रेषण विषयको रिटमा समेत* सम्मानित सर्वोच्च अदालतबाट प्रतिपादन भएको छ।

(३) **राजेश्विर सिंह तुलाधर विरुद्ध अर्थ मन्त्रालय समेत****

कुन ऐन के कस्तो बनाउने, के कति संशोधन वा खारेज गर्ने भन्ने विषय विधायिकाको अधिकारको कुरा हो। संविधान मूल कानून भई संवैधानिक सर्वोच्चताको सिद्धान्तलाई राज्यले अंगीकार गरेको हुँदा संविधानले नै निषेध गरेको अवस्थामा बाहेक संविधानका प्रावधानहरूसँग नबाभिने गरी विधायिकाले आवश्यक र उपयुक्त कानून बनाउनु, संशोधन गर्न वा खारेज गर्न सक्ने नै हुन्छ। यो संसदको विशेषाधिकारको कुरा हो। संसदीय शासन प्रणाली अपनाउने मुलुकहरूमा यसलाई अहिलेसम्म यस रूपमा अभ्यास गरिदै आएको पाइन्छ।

तसर्थ माथि विवेचना गरिए बमोजिम कुनै परिवारमा जन्म भएको आधारमा पैतृक सम्पत्तिमा अंश प्राप्त गर्ने हक प्रत्येक अंशियारको रहने, एकाघर सगोलमा रहेका अवस्था परिवारका सदस्य एवं अंशियारको रेखदेख, पालन पोषण, शिक्षा दीक्षा र औषधोपचारको अविभारा घरको मुख्य भई व्यवहार चलाउने व्यक्तिको पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्व भएकोले यो दायित्व पूरा गर्न पैतृक सम्पत्तिको अचल समेत परिचालन गर्नुपर्ने अवस्था आइपरेमा एक्काइस वर्ष नाघेका स्वास्नी, छोरा, अविवाहित छोरी र विधवा बहारी समेतको मञ्जुरी लिनु पर्ने गरी विधायिकाले बनाएको कानूनबाट समानताको हक कायमै रहेको र लैङ्गिक विभेदलाई समेत नियन्त्रण गरेको देखिन्छ। विधायिकाले आफ्नो अधिकारक्षेत्र अन्तर्गत रही मनासिव वर्गीकरणको सिद्धान्त अनुरूप विधायिकी बुद्धिमता प्रयोग गरी बनाएको कानूनले उमेर अनुसार अधिकार र दायित्व सृजना हुने गरी गरेको वर्गीकरणबाट बृहत्तर सामाजिक हितमा कुनै नकारात्मक असर पारेको अवस्था नहुँदा मुलुकी ऐन अंशवण्डाको महलको १९ नं को देहाय १ ले गरेको कानूनी व्यवस्था संविधानसम्मत छ। निवेदकको माग बमोजिमको आदेश जारी गरी उक्त कानूनी व्यवस्था बदर घोषित गर्न र माग बमोजिम परमादेश समेत जारी गर्नुपर्ने अवस्था छैन। तसर्थ रिट निवेदन खारेज गरिपाउन सम्मानित अदालत समक्ष सादर निवेदन गर्दछु।

बहसनोट प्रस्तुतकर्ता

नेपाल सरकार, प्रधानमन्त्री तथा
मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, कानून
तथा न्याय मन्त्रालय समेतका
सरकारी निकायको तर्फबाट,

* ने.का.प. २०६५, अंक ७, नि.नं. ७९८४, पृष्ठ ७९१

** सर्वोच्च अदालत बुलेटिन, वर्ष १२ अंक २१, पूर्णाङ्क २७९, पृष्ठ १

(धर्मराज पौडेल)
उप-न्यायाधिवक्ता
महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय,
नेपाल

इति सम्बत् २०६८ साल माघ १५ गते रोज १ शुभम्

अनुसूची १

सरकारी वकीलहरूको क्षेत्रीय वार्षिक कार्य समीक्षा तथा अनुशिक्षण कार्यक्रममा सहभागी, पर्यवेक्षक तथा व्यवस्थापकहरूको नामावली

सि.नं.	पद	नाम	कार्यालय	कैफियत
१-	महान्यायाधिवक्ता	श्री मुक्तिनारायण प्रधान	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	
२-	नायब महान्यायाधिवक्ता	श्री पुष्पराज कोइराला	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	
३-	नायब महान्यायाधिवक्ता	श्री सूर्यप्रसाद कोइराला	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	
४-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री शंकरराज बराल	पु.स.व.का., हेटौँडा	सहभागी
५-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री विनोदकुमार पोखरेल	पु.स.व.का., जनकपुर	सहभागी
६-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री खगराज पौडेल	पु.स.व.का, राजविराज	सहभागी
७-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री बलराम शर्मा	पु.स.व.का, धनकुटा	सहभागी
८-	सहान्यायाधिवक्ता	श्री राजनप्रसाद भट्टराई	पु.स.व.का, विराटनगर	सहभागी
९-	सहान्यायाधिवक्ता	डा. टेकबहादुर घिमिरे	पु.स.व.का, इलाम	सहभागी
१०-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री प्रकाश श्रेष्ठ	पु.स.व.का., जनकपुर	सहभागी
११-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री टेकबहादुर कार्की	पु.स.व.का., जनकपुर	सहभागी
१२-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री शिवबहादुर रानाभाट	पु.स.व.का., राजविराज	सहभागी
१३-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री पुण्यप्रसाद पाठक	पु.स.व.का., धनकुटा	सहभागी
१४-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री हिमालयकुमार त्रिताल	पु.स.व.का., विराटनगर	सहभागी
१५-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री रमेशकुमार सुवेदी	पु.स.व.का., इलाम	सहभागी
१६-	शाखा अधिकृत	श्री सन्तोषप्रसाद भण्डारी	पु.स.व.का. जनकपुर	सहभागी
१७-	शाखा अधिकृत	श्री केशवप्रसाद पन्त	पु.स.व.का, विराटनगर	सहभागी
१८-	शाखा अधिकृत	श्री निर्मला योङ्या	पु.स.व.का, इलाम	सहभागी
१९-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री सञ्जीवराज रेग्मी	जि.स.व.का, चितवन	सहभागी
२०-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री चन्द्रबहादुर सापकोटा	जि.स.व.का, मकवानपुर	सहभागी
२१-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री ओमप्रसाद अर्याल	जि.स.व.का, पर्सा	सहभागी
२२-	सहायक जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री सत्यनारायण यादव	जि.स.व.का. पर्सा	सहभागी
२३-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री गोविन्दप्रसाद उपाध्याय	जि.स.व.का. वारा	सहभागी
२४-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री रोशन गजुरेल	जि.स.व.का, रौतहट	सहभागी
२५-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री मुकुन्दहरि अधिकारी	जि.स.व.का, सर्लाही	सहभागी
२६-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री नारायणबहादुर थापा	जि.स.व.का. सिन्धुली	सहभागी
२७-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री खडानन्द गौतम	जि.स.व.का. महोत्तरी	सहभागी
२८-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री परमेश्वर पराजुली	जि.स.व.का. धनुषा	सहभागी
२९-	सहायक जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री रामप्रसाद अधिकारी	जि.स.व.का. धनुषा	सहभागी
३०-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री विमल थापा	जि.स.व.का. रामेछाप	सहभागी
३१-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री टेकेन्द्रप्रसाद सुवेदी	जि.स.व.का. उदयपुर	सहभागी
३२-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री लोकराज पराजुली	जि.स.व.का, सप्तरी	सहभागी
३३-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री गोपिचन्द्र भट्टराई	जि.स.व.का. सिराहा	सहभागी
३४-	सहायक जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री एकराज अधिकारी	जि.स.व.का. ओखलढुंगा	सहभागी
३५-	का.मु.जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री मुकुन्दहरि पौडेल	जि.स.व.का. सोलुखुम्बु	सहभागी

36-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री चिरञ्जिवी पराजुली	जि.स.व.का. धनकुटा	सहभागी
37-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री रामबहादुर थापा	जि.स.व.का. तेह्रथुम	सहभागी
38-	सहायक जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री पुण्यप्रसाद सापकोटा	जि.स.व.का. भोजपुर	सहभागी
39-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री कृष्णवटु भण्डारी	जि.स.व.का. संखुवासभा	सहभागी
40-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री पुष्कर सापकोटा	जि.स.व.का. सुनसरी	सहभागी
41-	सहायक जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री हरिकुमार पोखरेल	जि.स.व.का. सुनसरी	सहभागी
42-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री कोषहरि निरौला	जि.स.व.का. मोरङ	सहभागी
43-	सहायक जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री गोकुलबहादुर निरौला	जि.स.व.का. मोरङ	सहभागी
44-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री भानुभक्त काफ्ले	जि.स.व.का. झापा	सहभागी
45-	सहायक जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री केशवप्रसाद रेग्मी	जि.स.व.का. झापा	सहभागी
46-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री मुक्तिनाथ ओझा	जि.स.व.का. इलाम	सहभागी
47-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री मनोजकुमार आचार्य	जि.स.व.का. पाँचथर	सहभागी
48-	जिल्ला न्यायाधिवक्ता	श्री भोलानाथ निरौला	जि.स.व.का. ताप्लेजुङ	सहभागी
49-	शाखा अधिकृत	श्री उर्मिला दाहाल	जि.प्रशासन कार्यालय, झापा	सहभागी
50-	शाखा अधिकृत	श्री रोमनाथ अधिकारी	जि.प्रशासन कार्यालय, मोरङ	सहभागी
51-	अधिवक्ता	श्री प्रशाशनाथ उप्रेती	जि.अ.वार इकाई, मोरङ	पर्यवेक्षक
52-	प्रहरी निरीक्षक	श्री अच्युत चापागाई	पु.क्षे.प्र.का. विराटनगर	पर्यवेक्षक
53-	शाखा अधिकृत	श्री प्रेमप्रसाद न्यौपाने	पुनरावेदन अदालत विराटनगर	पर्यवेक्षक
54-	प्रहरी निरीक्षक	श्री सुमादेवी कार्की	जि.प्र.का. मोरङ	पर्यवेक्षक
55-	प्रहरी निरीक्षक	श्री शुकदेव खनाल	जि.प्र.का. झापा	पर्यवेक्षक
56-	प्रहरी निरीक्षक	श्री दिलबहादुर सुवेदी	इलाका प्रहरी कार्यालय, चैनपुर	पर्यवेक्षक
57-	प्रहरी निरीक्षक	श्री पुष्पकमल श्रेष्ठ	जि.प्र.का. पर्सा	पर्यवेक्षक
58-	प्रहरी निरीक्षक	श्री मदनप्रसाद यादव	जि.प्र.का. सिन्धुली	पर्यवेक्षक
59-	सहायक संरक्षण अधिकृत	श्री चन्द्रशेखर चौधरी	कोशीटप्पु वन्य जन्तु आरक्ष	पर्यवेक्षक
60-	भन्सार अधिकृत	श्री भुपेन्द्रकुमार कार्की	विराटनगर भन्सार कार्यालय	पर्यवेक्षक
61-	शाखा अधिकृत	श्री सोमकान्त भण्डारी	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	न्यापोटर
62-	लेखापाल	श्री उमेश्वर काफ्ले	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	व्यवस्थापक
63-	टा.नायब सुब्बा	श्री गजेन्द्रकुमार के.सी.	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	व्यवस्थापक
64-	हलुका सवारी चालक	श्री अक्कले तामाङ	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	व्यवस्थापक
65-	कार्यालय सहयोगी	श्री दीपक पुडासैनी	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	व्यवस्थापक
66-	प्रहरी नायब निरीक्षक	श्री डम्बरबहादुर मल्ल	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	पि.एस.ओ.
67-	प्रहरी हवलदार	श्री श्याम कोइराला	जिल्ला प्रहरी कार्यालय, मोरङ	पि.एस.ओ.
68-	शाखा अधिकृत	श्री रामहरि भट्टराई	पु.स.व.का. विराटनगर	व्य. सहयोगी
69-	नायब सुब्बा	श्री देवबहादुर तामाङ	पु.स.व.का. विराटनगर	व्य. सहयोगी
70-	लेखापाल	श्री उमा आचार्य	पु.स.व.का. विराटनगर	व्य.सहयोगी
71-	लेखापाल	श्री प्रकाशकुमार निरौला	पु.स.व.का. धनकुटा	व्य.सहयोगी
72-	खरिदार	श्री गजेन्द्र कार्की	पु.स.व.का. विराटनगर	व्य.सहयोगी

अनुसूची २

भावी संविधानमा महान्यायाधिवक्ताको संरचना र स्वरूप सम्बन्धी कार्यक्रममा सहभागी तथा व्यवस्थापकहरूको नामावली

सि.नं.	पद	नाम	कार्यालय	कैफियत
१-	महान्यायाधिवक्ता	श्री मुक्तिनारायण प्रधान	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	
२-	नायब महान्यायाधिवक्ता	श्री पुष्पराज कोइराला	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	
३-	नायब महान्यायाधिवक्ता	श्री सूर्यप्रसाद कोइराला	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	
४-	नायब महान्यायाधिवक्ता	श्री प्रेमराज कार्की	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	
५-	सदस्य	श्री उपेन्द्रकेशरी न्यौपाने	न्याय परिषद्	सहभागी
६-	सदस्य	श्री खेमनारायण हुंगाना	न्याय परिषद्	सहभागी
७-	अध्यक्ष	श्री प्रेमबहादुर खड्का	नेपाल वार एशोसियसन	सहभागी
८-	उपाध्यक्ष	श्री सुरेन्द्रकुमार महतो	नेपाल वार एशोसियसन	सहभागी
९-	सचिव	श्री विजयप्रसाद मिश्र	नेपाल वार एशोसियसन	सहभागी
१०-	पूर्व महान्यायाधिवक्ता	डा. श्री युवराज संग्रौला	काठमाडौं स्कूल अफ ल	सहभागी
११-	पूर्व महान्यायाधिवक्ता	श्री प्रेमबहादुर विष्ट		सहभागी
१२-	पूर्व महान्यायाधिवक्ता	श्री पवनकुमार ओझा		सहभागी
१३-	पूर्व महान्यायाधिवक्ता	श्री बद्धीबहादुर कार्की		सहभागी
१४-	पूर्व महान्यायाधिवक्ता	श्री यज्ञमूर्ति बन्जाडे		सहभागी
१५-	पूर्व महान्यायाधिवक्ता	श्री राघवलाल वैद्य		सहभागी
१६-	वरिष्ठ अधिवक्ता	श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ		सहभागी
१७-	अधिवक्ता	श्री विश्वप्रकाश भण्डारी		सहभागी
१८-	अधिवक्ता	श्री चण्डेश्वर श्रेष्ठ		सहभागी
१९-	अधिवक्ता	श्री हरिकृष्ण कार्की		सहभागी
२०-	अधिवक्ता	श्री बोरुबहादुर कार्की		सहभागी
२१-	अधिवक्ता/पार्षद	श्री लभकुमार मैनाली	नेपाल कानून व्यवसायी परिषद्	सहभागी
२२-	अधिवक्ता	श्री रामनारायण बिडारी		सहभागी
२३-	अधिवक्ता	श्री रामसुन्दर श्रेष्ठ		सहभागी
२४-	सचिव	श्री जीवनहरि अधिकारी	न्याय परिषद् सचिवालय	सहभागी
२५-	सचिव	डा. श्री त्रिलोचन उप्रेती	प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय	सहभागी
२६-	सहान्यायाधिवक्ता	श्री ठोकप्रसाद शिवाकोटी	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	सहभागी
२७-	सहान्यायाधिवक्ता	श्री रमेशकुमार पोखरेल	पु.स.व.का., पाटन	सहभागी
२८-	सहान्यायाधिवक्ता	श्री दुर्गाबन्धु पोखरेल	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	सहभागी
२९-	सहान्यायाधिवक्ता	श्री सूर्यप्रसाद पोखरेल	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	सहभागी
३०-	सहान्यायाधिवक्ता	श्री विनोदकुमार पोखरेल	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	सहभागी

31-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री कृष्णजीवी घिमिरे	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	सहभागी
32-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री महेश थापा	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	सहभागी
33-	सहन्यायाधिवक्ता	श्री सरोजप्रसाद गौतम	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	सहभागी
34-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री तेजनारायण पौडेल	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	सहभागी
35-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री रेवतीराज त्रिपाठी	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	च्यापोटर
36-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री मदनबहादुर धामी	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	च्यापोटर
37-	उपन्यायाधिवक्ता	श्री उद्धवप्रसाद पुडासैनी	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	व्यवस्थापक
38-	शाखा अधिकृत	श्री सुमनकुमार न्यौपाने	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	व्यवस्थापक
39-	शाखा अधिकृत	श्री हरिप्रसाद ज्ञवाली	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	व्यवस्थापक
40-	नायब सुब्बा	श्री गजेन्द्रकुमार के.सी.	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	व्यवस्थापक
41-	कार्यालय सहयोगी	श्री दीपक पुडासैनी	महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय	व्यवस्थापक

अनुसूची ३

सरकारी वकीलहरूको क्षेत्रीय वार्षिक कार्य समीक्षा तथा अनुशिक्षण
कार्यक्रममा प्रस्तुत भएका कार्यपत्रहरू

(क) अपराध अनुसन्धान र अभियोजनमा देखिएका सैद्धान्तिक र व्यावहारिक
समस्या र समाधानका उपायहरू

- जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री संजीवराज
रेग्मी

जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, चितवन

१. विषय प्रवेश

फौजदारी न्याय प्रशासनको प्रमुख उद्देश्य समाजमा हुने अपराधिक क्रियाकलापहरू नियन्त्रण गर्ने तथा घटित अपराधहरूको प्रभावकारी अनुसन्धान गरी संकलित सबुद प्रमाणका आधारमा अपराधमा दोषी देखिएका व्यक्ति उपर कानून बमोजिम दण्ड सजाय दिलाउन अभियोजन गर्नु तथा पीडितलाई न्याय प्रदान गर्नु हो । फौजदारी न्याय प्रशासनको उद्देश्य प्रभावकारी, निष्पक्ष तथा वैज्ञानिक अनुसन्धान तथा अभियोजन प्रकृयाबाट मात्र हासिल हुन सक्दछ । प्रभावकारी अनुसन्धान र अभियोजनबाट नै समाजमा शान्ति सुव्यवस्था कायम हुने, पीडितले न्याय प्राप्त गर्ने, समाजमा दण्डहीनता अन्त्य हुने तथा कानूनको शासन स्थापना हुन सक्छ । समाजमा हुने अपराधिक घटनाहरूबाट बचाई सर्वसाधारणलाई सुरक्षा र न्यायको वातावरण दिने दायित्व राज्यको रहेको हुन्छ । यो दायित्व कार्यपालिकाको हुने भएतापनि विधायिकाले कानून मार्फत अपराधको परिभाषा गरी तिनको अनुसन्धान गर्ने, अभियोजन गर्ने र निर्णय कार्यान्वयन गर्ने जिम्मेवारी सुम्पेको पाइन्छ । यसै अनुरूप सरकारी मुद्दा सम्बन्धी ऐन, २०४९ ले मुलतः सरकारवादी हुने फौजदारी अपराधको अनुसन्धान प्रहरी सगठनको जवाफदेहीतामा छाडेको छ भने अभियोजनको अन्तिम दायित्व महान्यायाधिवक्तालाई सुम्पेको हुन्छ ।

२. अपराध अनुसन्धान सम्बन्धी विद्यमान कानूनी व्यवस्था

सरकारी मुद्दा सम्बन्धी ऐन, २०४९ को अनुसूची १ अन्तर्गतका अपराधको अनुसन्धान कम्तीमा प्रहरी सहायक निरीक्षक कर्मचारीबाट हुन्छ । यस ऐनले अनुसन्धान प्रकृया निम्न अनुसार उल्लेख गरेको छ ।

- अपराध सम्बन्धी सूचना प्राप्त भएपछि अपराध रोक्ने, अपराधसँग सम्बन्धित प्रमाण लोप वा नाश हुन नदिने, अपराधी भाग्न उम्कन नपाउने व्यवस्था गर्ने, अपराधमा संलग्न व्यक्तिलाई पक्राउ गर्ने ।
- अपराध भएको ठाउँको विवरण, वस्तुस्थिति तथा अपराध वा अपराधीसँग त्यसको सम्बन्ध, अपराध भएको ठाउँ वा त्यसको वरपर लेखिएको वा पाइएको अन्य उल्लेखनीय कुरा खुलाई मुचुल्का तयार गर्ने ।

- अपराध भएको स्थानको, सो ठाउँमा पाइएको औला, खुट्टाको पाइला वा अन्य महत्वपूर्ण कुराको फोटो लिनसक्ने ।
- अपराधसँग सम्बन्धित कागजात वा वस्तु फेला पारेमा कब्जा गर्ने ।
- अपराधसँग सम्बन्धित कुनै पनि मुचुल्का तयार गर्दा (घटनास्थल, वरामदी, खानतलासी, लाशजाँच, वस्तुस्थिति) कम्तीमा दुई जना व्यक्ति र गा.वि.स./न.पा. को एकजना सदस्य र त्यस्तो सदस्य नभए सरकारी कार्यालयको कर्मचारी रोहवरमा राख्ने ।
- शक्ति अभियुक्तको सरकारी वकील समक्ष बयान लिने ।
- रगत, वीर्य वा अन्य कुनै वस्तु वा अंग जाँच गराउन सक्ने ।
- हिरासतमा राखी अनुसन्धान गर्नुपर्ने भएमा मुद्दा हेर्ने अधिकारीबाट म्याद थप गरी हिरासतमा राख्ने ।
- विशेषज्ञको राय लिन सक्ने ।
- सनाखत गराउनु पर्ने भएमा प्रचलित कानून बमोजिम सनाखत गराउन सक्ने ।
- दशी वा चीज वस्तु सनाखत गराउने ।
- तहकिकात पूरा भएपछि रायसहित प्रतिवेदन सरकारी वकील समक्ष पठाउने ।
- परीक्षणका लागि साक्षी अदालतमा उपस्थित गराउने ।

अपराध अनुसन्धानले घटित वारदातको सत्यता पत्ता लगाउने, अपराधसँग अपराध गर्ने व्यक्तिको सम्बन्ध स्थापित गर्ने सबुद प्रमाणहरू संकलन गर्ने कार्यलाई जनाउँदछ । त्यस्ता सबुद प्रमाणहरू भनवार्थि बफफककवदभि हुनु पर्दछ । अनुसन्धानबाट संकलित सबुद प्रमाणको आधारमा फौजदारी मुद्दाको अभियोजन गरिने हुँदा अभियोजनको मूल आधार अपराधको अनुसन्धान हो ।

३. अभियोजन सम्बन्धी व्यवस्था

अनुसन्धानबाट संकलित सबुद प्रमाणका आधारमा कुनैपनि व्यक्ति उपर निजले गरेको कसूर अपराधको लागि प्रचलित कानून बमोजिम सजायको दाबी लिई अभियोग पत्र पेश गर्ने कार्य अभियोजन हो । अभियोजनलाई एचयअभकक या कगकप्ततप्लन ब ।यकवर्वा अजवचनभ कजभभत वनवप्लकत बल यााभलमभचक धप्तज कउभअषध्र बअअगकवतप्यल दभायचभ तजभ अकउभतभलत अयगचत यल दभजबी या तजभ कतवतभ यल तजभ नचयगलम या बफफककवदभि भखप्मभलअभक अर्याभिअतभम दथ तजभ अकउभतभलत दयमथ भनी परिभाषा गरिएको पाइन्छ । अभियोजन अन्तर्गत मुद्दा चल्ने नचल्ने निर्णय गर्ने, अभियोगपत्र दायर गर्ने, साक्षी प्रमाण प्रस्तुत गर्ने, बहस पैरवी गर्ने विषयहरू पर्दछन ।

वि.स. २०१७ सालको सरकारी मुद्दा सम्बन्धी ऐनले फौजदारी अपराधको अभियोजन राज्यको कार्यपालिकीय निकाय प्रहरी र सरकारी वकीलबाट संयुक्त रूपमा हुँदै आएकोमा २०४७ सालको संविधानले अभियोजनको अधिकार महान्यायाधिवक्तालाई सुम्पेको र वर्तमान अन्तरिम संविधान, २०६३ ले सोही व्यवस्थालाई निरन्तरता प्रदान गरेको छ । महान्यायाधिवक्ताबाट प्रत्यायोजित अधिकार अन्तर्गत सम्बन्धित सरकारी वकीलले अभियोजनको अधिकारको प्रयोग र पालना गर्ने व्यवस्था छ ।

सरकारी मुद्दा सम्बन्धी ऐन, २०४९ ले मिसिल अध्ययन गर्दा मुद्दा चल्ने देखिएमा मुद्दा चल्ने निर्णय गरी अभियोगपत्र तयार गरी अदालतमा दायर गर्नु पर्ने कानूनी व्यवस्था गरेको छ । मिसिल अध्ययन गर्दा मुद्दा चल्ने देखिएमा भन्ने कानूनी व्यवस्थाले मिसिलमा आएका सबुद प्रमाणको आधारमा मुद्दा चल्ने नचल्ने निर्णय गर्नु पर्ने कुरालाई इंगित गर्न खोजेको देखिन्छ । सो बाहेक अन्य कुरालाई मुद्दा चल्ने नचल्ने निर्णय गर्ने आधार मानेको देखिँदैन । साथै महान्यायाधिवक्ताबाट मुद्दा चल्ने नचल्ने निर्णय सम्बन्धमा सरकारी वकीललाई प्रत्यायोजित अधिकारको निर्णयमा समेत सबुद प्रमाणको मूल्याङ्कनबाट मुद्दा चलाउनु पर्ने देखिएमा मुद्दा चल्ने निर्णय गरी सम्बन्धित अदालतमा मुद्दा दायर गर्नु पर्ने व्यवस्था उल्लेख छ । वेलायत, स.रा.अमेरिका, जापान, जर्मनी, सिंगापुर लगायतका मुलुकमा अभियुक्तको अपराध पुष्टि गर्ने प्रमाणहरू (क्वाअभिलत भखप्पभलअभ) र सार्वजनिक हित (उगदधिअ प्लतभचभक्त) का आधारमा अभियोक्ताले एचयकभअगतप्यल प्लप्तप्वतभ गर्न सक्ने अधिकार प्रदान गरिएको छ । अन्य मुलुकमा जस्तो नेपालमा निजी अभियोजन, अभियोगपत्रमा संशोधन, पुनः अभियोजन र अभियोग पुष्टि हुन नसक्ने अवस्थामा फिर्ता लिन पाउने कानूनी व्यवस्था छैन ।

४. मुद्दा चल्ने नचल्ने निर्णयको तथ्यांक (स्रोत महान्यायाधिवक्ताको वार्षिक प्रतिवेदनहरू)

संख्या	एचयकभअगतप्यल प्लप्तप्वतभ	उभचअभलतवनभ	ल्यल उचयकभअगतप्यल	एभचअभलत		
अ	एछदर छछ	उघघज	ठददड	ढछाद्वज	घडघ	ढाछठ
इ	एछछर छट	टददछ	टटछठ	ढटाजघ	दृदद	घाडठ
घ	एछटर छठ	ठजदण	टदछट	ढटाटज	दृघद	घाघद
ढ	एछठर छड	टदडड	टजदद	ढटाठज	जदद	दृदद
छ	एछदर छद	छददछ	छजदद	ढठाणघ	जछठ	दृदठ
ट	एछदर टण	छठदठ	छटटठ	ढठाछछ	जघज	दृदछ
ठ	एदणर टज	टजददछ	टणदद	ढडाडज	ठघ	जाजड
ड	एदजर दद	टछटट	टछजघ	ढढाजद	छघ	णडज
ढ	एददर टघ	छछदद	छददठ	ढडाजठ	जणद	जाडद
जण	एदघर दद	डजददछ	ठठदद	ढदददट	दददट	छादद
जज	एददर दछ	डदददछ	डणदघ	ढठाछठ	दृणद	दृदघ
जद	एदछर दट	ढडणछ	ढटदद	ढढाद्वज	जछट	जाछद
जघ	इदटर दठ	जजदददठ	जजठदद	ढडाठघ	जछज	जादद

उल्लेखित तथ्यांकले मुद्दा नचल्ने निर्णय गर्ने अभ्यास ज्यादै कम रहेको देखाउँछ । अभियोजन गरिएका मुद्दाको सफलताको स्थिति हेर्दा उल्लेखित तथ्यांकले फौजदारी अपराधको अनुसन्धान र अभियोजनमा थुप्रै त्रुटिहरू एवं समस्याहरू रहेको देखाउँछ । यसबाट निर्दोष व्यक्तिलाई वा कसूर स्थापित गर्ने प्रमाणको अभावमा पनि सरकारी वकीलबाट मुद्दा चल्ने निर्णय गरेका देखिन्छ ।

५. फौजदारी मुद्दाको सफलता असफलताको अवस्था (स्रोत महान्यायाधिवक्ताको वार्षिक प्रतिवेदनहरू)

आ.व. कसूर ठहर अदालत तर्फ
 ०५७५८ ४७.४६ ५

०५८१५९	४७.७५ ५
०५९१६०	४६.९२ ५
०६४१६५	७०.८९ ५
०६५१६६	७२.२० ५
०६६१०६७	७०.५९ ५

आ.व. ०६४१६५ पछिको तथ्यांकमा कसूर ठहरको अवस्थामा सन्तोषजनक रहे पनि सो तथ्यांक अपराध भएको सम्म ठहर स्थापित गरिएको आधारमा कायम भएको अवस्था हो । आ.व. २०५७।०५८, २०५८।०५९, २०५९।०६० को तथ्यांकले अभियोजनको सफलता ५० प्रतिशत भन्दा कम रहेको देखिन्छ ।

६. सरकारवादी हुने मुद्दामा वैज्ञानिक प्रमाणको प्रयोग र विशेषज्ञको परीक्षण गर्ने कार्य ज्यादै न्यून रहेको साथै सरकारी वकीलले हदैसम्म सजाय माग गरेको प्रतिशत ७३ रहेको अध्ययनले देखाएको छ । (सेलर्ड, २००१, पृष्ठ-९९-१००)

७. आ.व. २०६७।६८ मा कुल २२.३९६ मुद्दा मध्ये ८७८ मुद्दामा अनुसन्धान गर्न सरकारी वकीलबाट प्रहरीलाई निर्देशन दिइएको प्रतिशत ३.९२ मात्र रहेको छ । (म.न्या.का.को आ.व. २०६७।०६८ को वार्षिक प्रतिवेदन पृष्ठ ७३)

८. अनुसन्धान र अभियोजन सम्बन्धामा न्यायिक दृष्टिकोण

- अनधिकृत व्यक्तिबाट भएको खानतलासी मुचुल्काले मान्यता नपाउने । कानूनले निदृष्ट गरिएको प्रकृया र कार्यविधि पूरा नगरी भएको मुचुल्कालाई प्रमाणमा लिन नमिल्ने । (गोपाल सुवेदी वि. नेपाल सरकार ने.का.प. ०४७, पृ.४९६)
- आपराधिक मनसाय भएपनि आपराधिक कार्य मानिने कसूर नभए अभियोग लगाउन र सजाय गर्न नमिल्ने । (ने.का.प. ०५४ पृ.७८२ नेपाल सरकार वि. कृष्ण लिम्बु)
- अपराध गर्न सुराएको कारण अपराध गर्ने व्यक्ति भन्दा सुराउने व्यक्तिलाई वढी सजाय हुने गरी भएको फैसला त्रुटिपूर्ण हुने (ने.का.प. ०४९- अंक ७ इमानसिंह गुरुङ्गको मुद्दा)
- अभियोजन सम्बन्धी निर्णयको न्यायिक पुनरालोकन हुन सक्ने, बमखभचकबचर्ष्वी उचयकभअगतष्यल कथकतभ मा अभियोजन गर्ने राज्यको दायित्व हो । किनकि पीडितले मुद्दा चलाउन पाउँदैन, पीडितको न्याय पाउने हकलाई त्यल उचयकभअगतष्यल को निर्णयले बन्देज गर्न सक्दैन, समान आधार र प्रमाणका आधारमा कसैमाथि मुद्दा चलाउने र कसैमाथि नचलाउने निर्णय त्रुटि पूर्ण हुने (सुन्तली धामी विरुद्ध मन्त्रिपरिषदको कार्यालय समेत ने.का.प. २०६८ अंक १)
- अनुसन्धान संकलित सम्पूर्ण प्रमाण कागजातहरू मिसिल संलग्न रहनु पर्ने । अभियोजनकर्ताले एषप बलम अजयकभ गर्ने नपाउने (राजु थापा वि. पु.स.व.का. नेपालगंज)
- अनुसन्धान कर्ताले फौजदारी अभियोग लगाउँदा त्यस्तो व्यक्तिको वारदातमा संलग्नता लगायतका वास्तविकता पहिचान हुनेसम्मको विवरणहरू, फोटो, ल्याप्चे सहिछाप, नागरिकता नं., मतवदाता

नामावलीको नं., शारिरिक वनावट, विशेष पहिचान हुन सक्ने हुलिया, नाम, उपनाम, बाबु बाजेको नामा लगायतका विवरण अभियोगपत्रमा उल्लेख गर्ने । फरार अभियुक्तको हकमा समेत त्यस्तो प्रष्ट विवरण उल्लेख गर्ने । (लेकमान महर्जन वि. नेपाल सरकार ने.का.प. ०६३ नि.नं. ७७८८)

- सावित्री बयानले मात्र अभियोग पुष्टि गर्ने आधार नहुने सावित्री बयान अन्य स्वतन्त्र प्रमाणबाट समर्थित र पुष्टि हुन पर्ने (ने.का.प. २०५४, पृ. २३७)
- अपराध सम्बन्धमा जाहेरी परी अनुसन्धान कारवाही अगाडी बढी थप अनुसन्धानको कारवाही हुन नसकेको अवस्थामा वारदातसँग सम्बन्धित सबुद प्रमाण नष्ट हुन सक्ने र अनुसन्धान प्रकृया समेत अवरुद्ध हुन जाने हुन्छ । प्रारम्भिक प्रतिवेदन प्राप्त भएपछि तहकिकातको कार्य अगाडि बढाउन प्रहरीलाई निर्देशन दिनु पर्ने कर्तव्य सरकारी वकीलको हुन्छ (गौमेश्वर शर्मा विरुद्ध नेपाल सरकार ने.का.प. २०६३ निर्णय नं. ७७३१) ।
- आधारहीन, हचुवा र अष्पष्ट ढंगले अभियोग दावी गर्दैमा सोही आधारमा कसूर प्रमाणित नहुने (नेपाल सरकार विरुद्ध चम्पादेवि अग्रवाल समेत निर्णय मिति २०६५/१०/२९) ।
- ऐन कानूनले कैद सजाय कसूरदार बीच दामासाही हुने भनी स्पष्ट नभनेकोमा दामासाही गर्नु न्यायपूर्ण नहुने, जनही कैद सजाय गर्नु न्यायोचित हुने (वैजनाथ शाह वि. नेपाल सरकार ने.का.प. ०६७ अंक ६ मुद्दा: अंगभंग एउटा मुख्य वारदातलाई लिएर एक पटक अभियोग लगाई सकेपछि सोसँग सम्बन्धित सहायक घटनाहरूको आधारमा पटक पटक गरी दोस्रो वा तेस्रो मुद्दामा अनुसन्धान गरी मुद्दा चलाउन अ.वं. ७३ नं. ले नमिल्ले । (गोविन्दबहादुर बटालाको हकमा सुनिता बटाला वि. म.प. कार्यालय समेत ने.का.प. ०६८ अंक ७ नि.नं. ८६३८)
- कसै उपर कुनै कसूरको आरोप लगाई पक्राउ गरी हिरासतमा राख्नु र बयान लेख्नुले मात्रै अनुसन्धान भरपर्दो र विश्वासिलो हुन सक्दैन । आरोप लगाएपछि त्यसको सत्यताको परीक्षण अनुसन्धानको क्रममा हुनु जरुरी हुन्छ । सरकारी वकीलले अनुसन्धानलाई बलियो, भरपर्दो र विश्वासिलो बनाउन सम्बन्धित प्रहरी कर्मचारीलाई निर्देशन दिनसक्ने अधिकारलाई बिर्सन नहुने (ने.का.प. ०६८ अंक ८ नि.नं. ८६६८)
- फौजदारी अपराधमा व्यक्तिका विरुद्ध ठोस र संकारहित प्रमाण संकलन हुनु पर्दछ । तबमात्र अभियोजन गर्न सकिन्छ । बिना प्रमाण राज्यले अभियोग लगाउँछ भने त्यो उभयकभअगतप्यल भएको मान्नु पर्ने हुन्छ । स.मु.स. ऐन २०४९को दफा ४,७ र १२ ले भ्रष्टाचारभ्रष्टाचार यच्चभ्रष्टाचार प्लखभ्रष्टाचार र भ्रष्टाचारभ्रष्टाचार यच्चभ्रष्टाचार उच्चभ्रष्टाचार गर्नु पर्छ भन्ने देखिन्छ । (नेपाल सरकार विरुद्ध मगरे खां समेत ने.का.प. २०६६ अंक १० नि.नं. ८२४३)

९. अपराध अनुसन्धानमा देखिएका समस्या

(क) सैद्धान्तिक समस्या

- अनुसन्धान गरी सबुद प्रमाण संकलन गर्ने कार्य प्रहरीले गर्ने र अभियोजनको कार्य सरकारी वकील ले गर्ने गरी भएको अलग अलग व्यवस्थाले जिम्मेवारी, उत्तरदायित्व र समन्वयमा समस्या रहेको ।
- निष्पक्षता, दक्षता र व्यावसायिकताको अभाव ।
- निर्दोषिताको अनुमान, पीडित, अभियुक्तको अधिकारको सम्मान, कानूनको उचित प्रकृयाको प्रयोग र पालनाको अभाव ।
- अनुसन्धान अधिकृतको योग्यता, क्षमता कस्तो हुनु पर्ने भन्ने कानूनी व्यवस्था छैन । अपराध अनुसन्धानलाई उच्च प्रहरी अधिकृतद्वारा पूरा गर्नु पर्ने व्यावसायिक दायित्व नमानिएको । प्र.स.नि. दर्जाको व्यक्ति अनुसन्धान अधिकृत हुने व्यवस्था ।
- अपराध अनुसन्धान विशेषज्ञताको कार्य भएकोले यो कार्य गर्ने छुट्टै विभाग वा निकायको व्यवस्था नहुनु र जनशक्तिको विशिष्टीकरण गर्ने कानूनी व्यवस्थाको अभाव ।
- अपराधका सूचना दर्ता गर्ने कार्य प्रहरीले गर्ने र सो आधारमा अनुसन्धान शुरु हुन्छ तर अपराध कुन कानूनसँग सम्बन्धित छ भन्ने कुरा सरकारी वकील ले एकिन गर्न सक्ने भएपनि अपराधको सूचना लिने विषयमा अभियोजनकर्तासँग परामर्श गर्नु नपर्ने ।
- भौतिक र वैज्ञानिक सबुद प्रमाण संकलन गर्नु पर्ने कानूनी व्यवस्था स्वविवेकीय छ । अनिवार्य व्यवस्था गरिएको छैन ।
- अनुसन्धान कमजोर भएमा त्यसको जिम्मेवारी अनुसन्धान अधिकृतको हुने र जवाफदेहिता लिनु पर्ने कानूनी व्यवस्थाको अभाव छ ।

(ख) व्यावहारिक समस्याहरू

- अनुसन्धानको जिम्मेवारी पन्छाउने, जुनिएर प्रहरीबाट गराउने परिपाटी रहेको छ ।
- अपराधको अनुसन्धानमा नयाँ सोच र प्रविधिको प्रयोग गर्ने परिपाटी ज्यादै न्युन र औपचारिक कार्य मात्र मान्ने प्रचलन ।
- अपराध अनुसन्धानलाई प्राथमिकताको साथ सम्पन्न गर्ने कार्य नमानिने ।
- भौतिक सबुद प्रमाण संकलन भन्दा बयान मुखी प्रमाणको संकलन गर्ने परिपाटी ।
- अनुसन्धान कार्य स्वतन्त्र र निष्पक्ष बन्न नसकि आन्तरिक र बाह्य हस्तक्षेपबाट ग्रसित हुनु ।
- क्यअय याअभच को प्रयोग ज्यादै न्युन रहनु ।
- सरकारी वकील सगको समन्वय र सहयोग प्रभावकारी बन्न नसक्नु । सरकारी वकीलबाट अनुसन्धानमा प्रभावकारी निर्देशन हुन नसक्नु ।
- अनुसन्धानको लागि आवश्यक पर्ने साधन, स्रोत, वैज्ञानिक प्रयोगशाला र प्रविधिको अभाव ।
- अनुसन्धान अधिकृतमा दक्षता, ज्ञान, सीपको अभावका अलावा अनुसन्धान कार्यलाई महत्वपूर्ण कार्य हो भन्ने स्वीकार्ने मानसिकताको अभाव ।

- प्रारम्भिक प्रतिवेदन पठाउने कार्य औपचारिकतामा सिमित रहेको र पठाइएकोमा पनि सरकारी वकील बाट सो सम्बन्धमा तत्काल निर्देशन दिने परिपाटी नभएको ।
- पक्राउ परेका र फरार रहेका अभियुक्तहरूको नाम, ठेगाना, बतन, हुलिया, नागरिकता नंबर जस्ता पहिचान खुल्ने विवरण खुलाउने तर्फ अनुसन्धान अधिकृत सकृय हुने नगरेको ।
- पटकै अपराध कायम हुने मुद्दाहरूमा त्यस सम्बन्धी विवरण अध्यावधिक राख्ने कार्य हुने नगरेको ।
- प्रमाण संकलनका क्रममा तयार गरिने विभिन्न मुचुल्काहरूमा पुऱ्याउनु पर्ने कानुनी प्रकृया र रीत नपुग्ने गरेको ।
- अपराध भएको धेरै समयपछि अनुसन्धान प्रकृया अगाडि बढाउने कार्यले प्रमाण लोप हुन सक्ने र बुझ्नु पर्ने मानिस फेला नपर्ने जस्ता समस्या रहेको ।
- परीक्षण प्रतिवेदनहरू समयमा प्राप्त नहुने गरेको ।

१० अभियोजनमा देखिएका समस्याहरू :-

(क) सैद्धान्तिक र कानूनी समस्या-

- फौजदारी कसूर र सजाय सम्बन्धी एकीकृत कानूनको अभाव ।
- एउटै अपराधिक कार्यका लागी विभिन्न कानूनहरू आकर्षित हुने अवस्थाको विद्यमानता जस्तै खोटाचलन, राष्ट्र बैंक ऐन, ठगी, कालो बजार, खाद्य र उपभोक्ता संरक्षण ।
- अभियोजनका सिद्धान्तहरूको पालना र प्रयोगमा कमी । एवं च्च उच्चतम अयलककतभलत मभअष्कष्यल , गर्नु पर्ने र च्चनजत उभचकयल ष्क उचयकभअगतभम ायच तजभ च्चनजत यााभलअभ भन्ने सिद्धान्तको पालना हुन नसकेको ।
- भुट्टा तथा विपरीत बकपत्र गर्ने साक्षीहरूलाई सजाय गर्ने र साक्षी संरक्षण तथा पीडित राहत सम्बन्धी कानूनी व्यवस्थाको अभाव ।
- अपराध अनुसन्धान र अभियोजनको अध्ययन एवं अनुसन्धान गरी प्रतिवेदन दिने अपराध शास्त्रीय अध्ययन अनुसन्धान केन्द्रको अभाव रहेको ।
- अभियोजन सम्बन्धी अधिकारको सीमितताका कारण स-साना मुद्दामा अभियोजन गर्नु पर्ने, सबुद प्रमाणका आधारमा अभियोजन गर्ने पर्ने, निजी अभियोजन, अभियोगमा संशोधन, पुनः अभियोजन र जिकिरको सौदाबाजी गर्न पाउने कानूनी व्यवस्थाको अभाव ।
- अभियोजन र अनुसन्धानकर्ता बीच समन्वय गर्ने संयन्त्रको कानूनी व्यवस्थाको कमी ।
- अभियोजनकर्ताको सेवा सुरक्षा र एवं काम कर्तव्य अधिकार सम्बन्धी छुट्टै कानूनको अभाव । अनुसन्धान र सबुद संकलन गर्ने कार्यमा सरकारी वकील प्रारम्भ देखि नै संलग्न गराउनु पर्ने कानूनी व्यवस्थाको अभाव ।
- अभियोजनको कार्यलाई व्यावसायिक, निष्पक्ष र दक्ष बनाउन छुट्टै महाअभियोक्ताको अभाव ।

(ख) व्यावहारिक समस्या :-

- अनुसन्धान अधिकृतलाई अपराधको अनुसन्धान सम्बन्धमा निर्देशन दिने व्यवस्थाको प्रयोगमा उदासीनता ।

- हचुवा र जथाभावी आधारमा अभियोजन गर्ने परीपाटी । अपराध र कसूर अनुसार सजायको मागदाबी लिने परीपाटीको अभाव ।
- अभियुक्तको कसूरको प्रमाणका आधारमा मूल्याङ्कन गरी प्रतिव्यक्ति सजाय मागदाबी गर्ने परीपाटीको बदलामा गोश्वारा रूपमा अभियोजन गर्ने प्रचलन ।
- अभियोजन कार्यको प्रभावकारी अनुगमन, मूल्याङ्कन तथा सुपरिवेक्षण गर्ने अभ्यासको कमी ।
- अभियोजन नगर्ने परीपाटीको कमी र जस्तोसुकै मुद्दामा पनि अभियोजन गर्ने र दायित्व पन्छाउने प्रवृत्ति ।
- बयान वकपत्र जस्ता अभियोजनसँग सम्बन्धित विषयमा प्रयाप्त ध्यान दिन नसकेको अवस्था ।
- नैतिक र आचरण सम्बन्धी व्यवहारमा शुद्धता नरहेको आरोप ।
- पीडित, साक्षी र अभियुक्तको अधिकारप्रति उचित सम्मान र संरक्षणमा संवेदनशील हुन नसकेको आरोप ।
- मुद्दा फिर्ता लिने विषयमा स्पष्ट मापदण्ड नभएको र मुद्दा चलाउने अन्तिम दायित्व रहेका महान्यायाधिवक्ता वा सरकारी वकीलको परामर्श लिनु पर्ने परीपाटीको विकास हुन नसकेको ।

११. समस्या समाधानका उपायहरू :-

(क) कानूनी र सैद्धान्तिक समस्या समाधान गर्ने उपायहरू :-

- एकीकृत फौजदारी कानून तथा अपराध संहिताको निर्माण र कार्यान्वयन ।
- एभचवगचथ कानून, साक्षी र पीडितको संरक्षण सम्बन्धी कानून र सौदावाजी सम्बन्धी कानूनको निर्माण ।
- भौतिक र वैज्ञानिक प्रमाण संकलन गर्ने कार्यलाई अनिवार्य बनाउने तथा विधिविज्ञान प्रयोगशालाको क्षमता र संख्या विस्तार गर्ने ।
- अनुसन्धान कार्यलाई प्रभावकारी बनाउन स्वतन्त्र र छुट्टै अनुसन्धान विभागको स्थापना गरी त्यसलाई व्यावसायिक, निष्पक्ष र दक्ष अनुसन्धान विभागको रूपमा विस्तार गर्ने ।
- अनुसन्धान र अभियोजनलाई समन्वयात्मक ढंगले अगाडि बढाउन संयन्त्रहरूको व्यवस्था गर्ने साथै प्रभावकारी अनुगमन प्रणालीको विकास गर्ने ।
- प्रमाणको पर्याप्तता र सार्वजनिक हित समेतका आधारमा अभियोक्ताले अभियोजनको निर्णय गर्न सक्ने कानूनी व्यवस्था गर्ने ।
- मुद्दा नचल्ने निर्णय भएकोमा वा आंशिक अभियोजन भएकोमा त्यस्तो निर्णयहरू पुनरावलोकन गर्न सक्ने र पुनः अभियोजन गर्न पाउने कानूनी व्यवस्था गर्ने ।
- महत्वपूर्ण तथ्य वा आधार फेला परेकोमा पुनः अभियोजन गर्न सक्ने, निजी अभियोजन गर्न पाउने, प्रमाणबाट अभियोग पुष्टि हुन नसक्ने अवस्थामा त्यस्तो अभियोग फिर्ता लिन सक्ने कानूनी व्यवस्था गर्ने ।
- अभियोजन र अनुसन्धानलाई व्यावसायिक, निष्पक्ष र प्रभावकारी बनाउन महाअभियोक्ताको स्थापना गर्ने ।

- मुद्दा फिर्ता सम्बन्धमा स्पष्ट मापदण्ड र नीति निर्धारण गर्ने ।
- (ख) **व्यावहारिक समस्या समाधानका उपायहरू :-**
 - विद्यमान प्रवृत्ति र मानसिकतामा परिवर्तन गरी प्रभावकारी तथा वस्तुगत अनुसन्धान एवं अभियोजनमा जोड दिने । यसका लागि भौतिक प्रमाणको संकलन र अपराध र त्यसको संलग्नताको आधारमा अभियोजन गर्ने परिपाटीको विकास गर्ने ।
 - अनुसन्धान र अभियोजनकर्तालाई हचुवा एवं गलत कार्य गरेको देखिएमा जिम्मेवार र उत्तरदायी बनाउन दण्ड सजायको व्यवस्था गर्ने ।
 - दुबै निकाय बीच समन्वय, पारस्परिक सहयोग विस्तार गर्न तल्लो तहसम्म संयन्त्र निर्माण गरी समन्वयको विस्तार गर्ने ।
 - कसूरका आधारमा सजायको मागदाबी लिने परिपाटीको विकास गर्ने ।
 - अनुसन्धानमा तोकिएको कानूनी प्रकृयाको पालना र अभियोजनकर्ताले समयमा नै निर्देशन दिई अनुसन्धानलाई प्रभावकारी बनाउने ।
 - महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयबाट जारी गरिएका परिपत्रहरू, कार्य निर्देशिका र विशेष निर्देशनहरूको प्रयोग र पालनामा अभियोजनकर्ता सजग रहने ।
 - अनुसन्धान र सबुद संकलन गर्ने कार्यमा सरकारी वकील प्रारम्भदेखिनै संलग्न हुने कानूनी व्यवस्था गर्नु पर्ने ।
 - निर्देशन पालना नगरेकोमा अनुसन्धान अधिकारीलाई विभागीय कारवाही गर्न सकिने कानूनी व्यावस्था गर्नु पर्ने ।
 - वस्तुनिष्ठ आधारमा प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी प्रतिव्यक्ति सजायको दाबी लिने ।
 - अपराध अनुसन्धान र अभियोजनलाई राजनीतिकरण बाट संक्रमित हुनबाट बचाउने अपराधको राजनीतिकरण र राजनीतिको अपराधीकरण गर्न रोकन अनुसन्धान र अभियोजन दक्ष, निष्पक्ष र स्वतन्त्र बनाउने ।

१२. निष्कर्ष :-

विभिन्न अध्ययन, अनुसन्धान, तथ्याङ्क र न्यायिक दृष्टिकोणका आधारमा फौजदारी अपराधको अनुसन्धान र अभियोजनमा थुप्रै सैद्धान्तिक, कानूनी र व्यावहारिक समस्याहरू रहेको छ । अपराधको अनुसन्धान वैज्ञानिक र सबुद प्रमाणमुखी बन्न नसकेको, हचुवा र जथाभावी अभियोजन हुने गरेको, कसूर पुष्टि हुने पर्याप्त प्रमाणको अभावमा पनि अभियोजन हुने गरेको, साक्षीहरू विपरीत हुने प्रवृत्तिले सरकारवादी मुद्दा कमजोर हुने गरेको, छरिएर रहेको परम्परागत फौजदारी कानूनी व्यवस्थाले विद्यमान अपराध र त्यसको अनुसन्धानमा समस्या सिर्जना गरेको जस्ता कारणले अभियोजनको सफलता कमजोर रहेको देखिन्छ । अभियोजनमा देखिएका उल्लेखित समस्याहरू समाधान हुन नसक्ने वा सम्बोधन हुन नसक्ने भन्ने होइनन् यसका लागि हालैका दिनहरूमा कानूनी र संरचनागत सुधारका प्रयासहरू अन्तर्गत एकीकृत अपराध सम्बन्धी कानून, फौजदारी कसूर सजाय निर्धारण ऐनका विधेयकहरू व्यवस्थापिका-संसदमा छलफलको क्रममा रहेका छन् । यसका साथै महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयले विभिन्न निर्देशन, कार्य निर्देशिका एवं विशेष निर्देशनहरू जारी गरी अनुसन्धान

अभियोजनमा देखिएका व्यावहारिक समस्याहरूलाई निराकरण गरी प्रभावकारी अभियोजन गर्न सुधारका प्रयास थालेको छ । सुधारका यी प्रयासहरू कानूनी व्यवस्था र निर्देशनको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्ने प्रतिबद्धता, अठोट र इमान्दारिताको प्रयास तथा अनुसन्धान र अभियोजन गर्ने निकायहरूको स्वतन्त्रता, दक्षता र समन्वयबाट मात्र सम्भव हुने देखिन्छ ।

(ख) रिट निवेदनको क्षेत्राधिकार विस्तारका सन्दर्भमा सरकारी वकीलको भूमिका, चुनौती र तत्सम्बन्धमा चाल्नु पर्ने कदमहरू

-सहन्यायाधिवक्ता श्री राजनप्रसाद भट्टराई
पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, विराटनगर

१. विषय परिचय

कुनै काम गर्न वा नगर्न जारी गरिने परमाधिकारयुक्त आदेशलाई रिट भनिन्छ। सार्वजनिक पदाधिकारीहरूले कानून बमोजिम आफूलाई तोकिएको कर्तव्य उचित ढङ्गमा निर्वाह गरेका छन् वा छैनन् तथा मातहत न्यायाधिकरणहरूले प्राप्त अधिकारक्षेत्र भित्र रहेर काम गरेका छन् या छैनन् भनेर सुनिश्चितताका लागि रिटलाई प्रयोग गर्ने गरेको पाइन्छ। यसबाट सबै अदालत, आयोग र पदाधिकारीहरूको कार्यमा प्रभावकारिता र गुणस्तरीयता ल्याउन रिट उपचार प्रचलनमा आएको हो। नेपालमा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिट सर्वप्रथम व्यक्तिगत स्वतन्त्रता ऐन, २००६ को दफा ४ मा व्यवस्था गरेको भएतापनि आधुनिक रूपमा प्रचलित बन्दीप्रत्यक्षीकरण, परमादेश, प्रतिषेध, अधिकारपृच्छा र उत्प्रेषण पाँचै प्रकारका रिट जारी हुन सक्ने व्यवस्था पहिलो पटक प्रधान न्यायालय ऐन, २००८ को दफा ३० मा भएको हो। यसपछि जारी भएको नागरिक अधिकार ऐन, २०१२ को दफा १६, सर्वोच्च अदालत ऐन, २०१३ को दफा ११, नेपाल अधिराज्यको संविधान, २०१५ ले धारा ९ तथा नेपालको संविधान, २०१९ को धारा ७१ मा रिट जारी गर्ने अधिकारका सम्बन्धमा व्यवस्था भएको पाइन्छ।

रिटसँग सान्दर्भिक विषयहरू

- ❖ मानव अधिकार सर्वोपरी अधिकार,
- ❖ नागरिकको मौलिक हक अधिकारको रक्षा गर्नु हरेक राज्यको पहिलो कर्तव्य,
- ❖ उपचार बिनाको अधिकार निरर्थक हुने,
- ❖ देवानी तथा फौजदारी कानूनद्वारा प्रदत्त हक अधिकारको प्रचलनका साथै रिट क्षेत्रबाट नागरिकको संवैधानिक तथा कानूनी हक अधिकारको प्रचलन अदालतबाट हुने,
- ❖ हाल नेपालका तीनै तहका अदालतलाई रिट निवेदन हेर्ने क्षेत्राधिकार प्रदान,

रिटका प्रकार

- क) बन्दीप्रत्यक्षीकरण
- ख) उत्प्रेषण
- ग) परमादेश
- घ) प्रतिषेध र
- ङ) अधिकारपृच्छा।

निषेधाज्ञाको निवेदन

२. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- नेपालमा सर्वप्रथम प्रधान न्यायालय ऐन, २००८ लागू भए पछि रिट निवेदनको सुनुवाइ हुने व्यवस्थाको प्रारम्भ,
- ऐनको दफा ३० मा प्रधान न्यायालयलाई नेपालभर मुलुकमा जहाँ सुकै पनि आफ्नो अधिकारक्षेत्र भित्र पर्ने सबै कुरामा विधानद्वारा प्रदत्त अधिकारको प्रचलनका लागि जुनसुकै व्यक्ति वा व्यक्तिहरू, कम्पनी, कर्पोरेशन, सरकारी अधिकारी वर्गलाई जो चाहिने आज्ञापत्र वा आदेश जारी गर्ने अधिकार प्रदान,
 - जसमा बन्दीप्रत्यक्षिकरण, परमादेश, प्रतिषेध, अधिकारपृच्छा, उत्प्रेषण लगायतका निवेदनमा आदेश जारी गर्ने व्यवस्था,
 - २०१२ साल मार्ग १३ गतेमा नागरिक अधिकार ऐन, २०१२ जारी गरी बन्दी प्रत्यक्षिकरण र निषेधाज्ञाको निवेदन सुन्ने र आदेश जारी गर्ने अधिकार तत्कालीन पुनरावेदन सुन्ने अपिल अदालतलाई दिइएको ,
 - सर्वोच्च अदालत ऐन २०१३ बमोजिम उक्त अदालतको स्थापना भएपछि सो ऐनले सर्वोच्च अदालतलाई रिट हेर्ने अधिकार प्रदान
 - सर्व प्रथम नेपाल अधिराज्यको संविधान २०१५ को धारा ९ मा सर्वोच्च अदालतको असाधारण अधिकार क्षेत्र अन्तरगत रिट हेर्ने संवैधानिक अधिकार
 - नेपालको संविधान २०१९ को धारा ७१ मा असाधारण अधिकार क्षेत्रको व्यवस्था गरि रिट हेर्ने संवैधानिक अधिकार प्रदान,
 - नेपाल अधिराज्यको संविधान २०४७ को धारा ८८ मा रिट हेर्ने असाधारण अधिकार क्षेत्र,
 - नेपालको आन्तरिम संविधान २०६३ को धारा १०७ मा सर्वोच्च अदालतलाई रिट सुन्ने असाधारण अधिकार क्षेत्र प्रदान,

सर्वोच्च अदालतको रिट सम्बन्धी असाधारण अधिकारक्षेत्र

नेपालको अन्तरिम संविधान २०६३ को धारा १०७ मा रिट निवेदन सुन्ने र आदेश जारी गर्ने सम्बन्धी व्यवस्था ।

- यस संविधानद्वारा प्रदत्त मौलिक हक उपर अनुचित बन्देज लगाएकोले वा अन्य कुनै कारणले कुनै कानून यो संविधानसँग बाझिएको हुँदा सो कानून वा त्यसको कुनै भाग बदर घोषित गरी पाउँ भनी कुनै पनि नेपाली नागरिकले सर्वोच्च अदालतमा निवेदन दिन सक्नेछ र सो अनुसार कुनै कानून संविधानसित बाझिएको देखिएमा सो कानूनलाई प्रारम्भ देखिनै वा निर्णय भएको मिति देखि अमान्य र बदर घोषित गर्ने असाधारण अधिकार सर्वोच्च अदालतलाई हुने छ ।
- यस संविधानद्वारा प्रदत्त मौलिक हकको प्रचलनको लागि वा अर्को उपचारको व्यवस्था नभएको वा अर्को उपचारको व्यवस्था भए पनि सो उपचार अपार्यप्त वा प्रभावहीन देखिएको अन्य कुनै कानूनी हकको प्रचलनको लागि वा सार्वजनिक हक वा सरोकारको कुनै विवादमा समावेश भएको कुनै संवैधानिक हकको वा कानूनी प्रश्नको निरूपणको लागि आवश्यक र उपयुक्त आदेश

जारी गरी त्यस्तो हकको प्रचलन गराउने वा विवाद टुङ्गे लगाउने असाधारण अधिकार सर्वोच्च अदालतलाई हुनेछ । सो प्रयोजनका लागि पूर्ण रूपमा न्याय गरी उचित उपचार प्रदान गर्न सर्वोच्च अदालतले बन्दीप्रत्यक्षीकरण, परमादेश, उत्प्रेषण, प्रतिषेध, अधिकारपृच्छा लगायत जुनसुकै उपयुक्त आदेश जारी गर्न सक्नेछ ।

- तर अधिकार क्षेत्रको अभाव भएकोमा बाहेक व्यवस्थापिका-संसदले चलाएको विशेषाधिकारको कारवाही र तत्सम्बन्धमा तोकेको सजायमा यस उपधारा अन्तर्गत सर्वोच्च अदालतले हस्तक्षेप गर्ने छैन ।

पुनरावेदन तथा जिल्ला अदालतबाट रिट निवेदन हेरिने कानूनी अधिकार सम्बन्धी व्यवस्था

- जनतालाई नागरिक अधिकार प्रदान गर्न र सो लागू गर्नको लागि कार्यविधि तयार गर्ने उद्देश्य लिएर नागरिक अधिकार ऐन, २०१२ को कानूनी व्यवस्था,
- प्रस्तुत ऐनले प्रदत्त गरेको अधिकार नेपाली नागरिकले मात्र उपभोग गर्न सक्ने ऐनको परिभाषाबाट स्पष्ट,
- नागरिक अधिकार ऐन, २०१२ मा देहायका नागरिक अधिकारको व्यवस्था,
- कानूनको दृष्टिमा समानता,
- धर्म, जात, जाति वा लिङ्गको आधारमा भेदभाव नगर्ने (कुनै विशेष वर्गको निमित्त विशेष व्यवस्था गर्ने नेपाल सरकारको अधिकार)
- वाक स्वतन्त्रता इत्यादि सम्बन्धी अधिकार,
- धर्म सम्बन्धी हक
- कानूनको अख्तियार विना कुनै कर नलगाउने
- सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार
- नागरिकको वासस्थानको रक्षा
- तत्काल प्रचलित कानूले सजाय नहुने कुनै काम गर्दा सजाय नहुने
- कसूर गर्दाको अवस्थामा प्रचलित कानूले तोकिए भन्दा बढि सजाय नहुने
- दोहोरो खतरामा राख्न नपाइने
- आफ्नो विरुद्ध साक्षी हुन कर नलाग्ने
- इच्छा विरुद्ध काम लगाउन मनाही
- नाबालकलाई फेक्टरी इत्यादिमा काम लगाउनमा निषेध
- गिरफ्तारीका सम्बन्धमा बचाउ
- बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदन सम्बन्धी अधिकार

- ऐनद्वारा प्रदत्त कुनै अधिकारमा कसैले आघात गर्ने शंका लागेमा निषेधाज्ञाको निवेदन दिन सक्ने अधिकार

३. सरकारी वकीलको भूमिका

- पुनरावेदन तहमा सबै प्रकारका रिट निवेदन सुनुवाइ हुने तथा जिल्ला तहमा बन्दीप्रत्यक्षिकरण तथा निषेधाज्ञाको निवेदनमा सुनुवाइ हुने व्यवस्था भएकाले कार्य बोझ बहन गर्न तयारी हुनु पर्ने,
- आफ्नो प्रादेशिक क्षेत्र भित्रका सरकारी कार्यालयका कार्यालय प्रमुख तथा अधिकृत कर्मचारीहसँग समन्वय गरी रिट निवेदनको सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक पक्षका बारेमा यथेष्ट जानकारी गराउने,
- सार्वजनिक पदमा वसेको व्यक्तिले गर्ने काम, कारवाही, निर्णय आदि गर्दा कानूनसम्मत गर्ने व्यवस्था गर्नका लागि कानूनी राय सल्लाह प्रदान गर्ने,
- लिखित जवाफ तयार गर्न तथा आफ्नो कार्यालयको विरुद्धमा परेका रिट निवेदनमा अन्तरिम आदेश जारी भई कार्यसम्पादनमा असर पर्न गएका अवस्थामा उक्त आदेश खारेज गरी पाउन निवेदन तयार गर्ने विषयमा सरोकारवाला निकायका प्रमुखहरूलाई सल्लाह तथा सहयोग गर्ने,
- सरकारी कार्यालयबाट कुनै व्यक्ति वा संस्थाका विरुद्धमा निवेदन गर्नु पर्ने भएमा सो गर्नका लागि सल्लाह सहयोग गर्ने,
- सम्बन्धित सरकारी कार्यालयको तर्फबाट अदालतमा उपस्थित भई बहस पैरवी प्रतिरक्षा गर्ने,
- नेपाल सरकारको हितलाई ध्यानमा राखी काम कारवाही सम्पन्न गर्ने गराउने,
- कुनै सरकारी कार्यालयले लिखित जवाफ पेश नगरेमा वा आवश्यकता अनुसार अन्तरिम आदेश खारेजीको निवेदन नगरेमा वा मिल्नुवा लिखित जवाफ दर्ता गरेमा सम्बन्धित सरकारी वकीलले उक्त कार्यालयको केन्द्रीय कार्यालयमा आवश्यक कारवाहीका लागि लेखी पठाउन सक्ने स्पष्ट कानूनी व्यवस्था हुनु पर्ने,
- सरकारी वकील कार्यालयले निवेदन, लिखित जवाफ तयार गर्नका लागि सरकारी वकील तथा अन्य विशेषज्ञसँग सेवा लिन सक्ने कानूनी व्यवस्था हुनु पर्ने,
- रिट निवेदनको सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान दिनका लागि खास गरी अर्ध न्यायिक निकायमा अधिकृत एवं कर्मचारीहरूलाई तालिमको व्यवस्था हुनु पर्ने,

४. चुनौती/समस्याहरू

- भरखर जस्तो जिल्लास्तरसम्म रिट निवेदनको सुनुवाइ हुने भएकाले रिट निवेदनका सम्बन्धमा सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक ज्ञानको सरकारी वकीलहरूमा समेत कमी रहन गएको,
- रिट क्षेत्रको कार्यबोझ बढेको अनुपातमा कर्मचारी/सरकारी वकीलहरूको दरबन्दी थप नहुँदा कार्यसम्पादनमा असर परी गुणस्तरयुक्त बहस पैरवी हुन सक्ने अवस्था रहेको,
- रिट निवेदनको सम्बन्धमा लिखित जवाफ पठाउन कार्यालयहरू उदासीन हुने गरेको पाइएको,
- अन्तरिम आदेशका सम्बन्धमा छलफल गर्न अदालतले सूचना गर्दा कार्यालयहरू उदासीन रही सरकारको तर्फबाट प्रतिनिधित्व हुन नसक्ने गरेको,

- लिखित जवाफ नफिराएको कारण प्रतिरक्षामा समस्या,
- लिखित जवाफ तयार गरी दिनका लागि सरकारी वकील कार्यालयहरूमा दबाव पर्ने गरेको,
- लिखित जवाफ कानूनी लिखत भएको कारण सवैले सजिलै तयार गर्न सक्ने नहुने हुँदा गुणस्तरीय लिखित जवाफ हुने नगरेको,
- कार्यबोझका कारण तथा कानूनी व्यवस्थाका कारण सरकारी वकीलबाट लिखित जवाफ मसौदा गरी दिन सकिने अवस्था नभएको,
- फरक कसूरमा म्याद थप गरी अनुसन्धान गर्ने गरेको,
- मिलुवा लिखित जवाफ पेश गर्ने गरेको,
- बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदनको सुनुवाइ हुने व्यवस्थाका कारण कम्तीमा एक जना सरकारी वकील कार्यालयमा अनिवार्य रूपमा रहनु पर्ने भएको,

५. समाधानका उपायहरू:-

- ❖ रिट निवेदनको सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक ज्ञान सम्पूर्ण सरकारी वकीलहरूमा पुऱ्याई दक्षता अभिवृद्धि गर्नका लागि तालिमको व्यवस्था हुनु पर्ने,
- ❖ रिट निवेदनको सुनुवाइ जिल्ला अदालतस्तरसम्म पुगेको परिप्रेक्ष्यमा सरकारी वकील कार्यालयहरूमा बढ्ने गएको कार्यबोझ समेतलाई मध्यनजर गरी कर्मचारी/सरकारी वकीलहरूको दरबन्दी तथा स्रोत साधन थप गर्ने,
- ❖ कुनै सरकारी कार्यालयले लिखित जवाफ पेश नगरेमा वा आवश्यकता अनुसार अन्तरिम आदेश खारेजीको निवेदन नगरेमा वा मिलुवा लिखित जवाफ दर्ता गरेमा सम्बन्धित सरकारी वकीलले उक्त कार्यालयको केन्द्रीय कार्यालयमा आवश्यक कारवाहीका लागि लेखी पठाउन सक्ने स्पष्ट कानूनी व्यवस्था हुनु पर्ने,
- ❖ सरकारी कार्यालयले निवेदन, लिखित जवाफ तयार गर्नका लागि सरकारी वकील तथा अन्य विशेषज्ञसँग सेवा लिन सक्ने कानूनी व्यवस्था हुनु पर्ने,

६. निष्कर्ष

- नागरिकको मौलिक हकको रक्षा गर्ने प्रभावकारी संयन्त्र रिट निवेदनको क्षेत्र विस्तार सकारात्मक,
- जिल्लास्तरबाट बन्दीप्रत्यक्षीकरण निवेदनको सुनुवाइ हुने भएकाले नागरिकको मौलिक हकको पूर्ण सुरक्षा,
- नागरिकलाई छिटो छरितो र कम खर्चमा उपचार प्राप्त हुने,
- न्यायमा नागरिकको सहज पहुँच,
- रिट निवेदनमा प्रभावकारी रूपमा बहस पैरवी र प्रतिरक्षा गर्नका लागि सरकारी वकीलहरूलाई अझ दक्ष बनाउन विभागको सक्रियताको अपेक्षा गरिन्छ,

(ग) महिला, दलित र बालबालिका सम्बन्धी कानून कार्यान्वयनमा देखा परेका समस्या र समाधानका उपायहरू

-सहन्यायाधिवक्ता डा.टेकबहादुर घिमिरे
पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय, इलाम

विषयवस्तु सम्बन्धी सैद्धान्तिक मान्यता

- समयको विकासक्रमसँगै मानव अधिकार सम्बन्धी मान्यतालाई विश्वव्यापी रूपमा स्वीकार गर्ने पर्ने भयो, अन्तर्राष्ट्रिय प्रयासहरू निरन्तर जारी रहे, मानव अधिकारको अहरणीयता, अखण्डनीयता र विश्वव्यापी रूपमा समानता अर्थात् सबै मानवहरूको हितका लागि बराबरी रूपमा लागू हुनु पर्ने मान्यतालाई मानव अधिकार सम्बन्धी अवधारणाका प्रमुख विशेषताको रूपमा स्वीकार गरियो ।
- सर्व पक्षीय र सन्तुलित विकासका लागि समावेशी राज्य व्यवस्थापन नीतिको आवश्यकता महसुस भयो, नीति निर्धारण र अभ्यास गरियो, अनुभवका आधारमा सुधार गर्दै दिगो व्यवस्थापनका लागि यस्तो नीतिको उच्चतम उपयोग गर्नमा मत्तैक्य रह्यो ।
- लिङ्गको आधारमा हुने भेदभाव र असमान व्यवहार, गरिबी र शिक्षाको अभाव, खासगरी बालबालिकाहरूको शिक्षा प्रतिको पहुँचमा कठिनाई, पितृसत्तात्मक अवधानाबाट प्रभावित सामाजिक मूल्य र मान्यता ९८६ ऋकृततभम च्मउयचत, दृण्ड० अनि मानिसको जात थर र कुल घराना उसैको पूर्व जन्मको कमाई हो भन्ने पूर्ण विश्वास सामाजिक एकता र सन्तुलित विकासका बाधक तत्वहरू हुन् ।

महिला, बालबालिका र दलितहरूको हित संरक्षण माफर्त सन्तुलित सामाजिक विकासको उद्देश्य भएका केही अन्तर्राष्ट्रिय कानूनहरू

- बाल अधिकार सम्बन्धी जेनेभा घोषणापत्र, १९२४
- मानव अधिकार सम्बन्धी विश्वव्यापी घोषणापत्र, १९४८
- संयुक्त राष्ट्र संघको महासभाद्वारा पारित बालबालिकाको अधिकार सम्बन्धी घोषणा पत्र, १९५९
- सबै खालका जातीय भेदभाव विरुद्धको अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धि, १९६५
- नागरिक तथा राजनीतिक अधिकार सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय अनुबन्ध, (६३३एच) १९९६
- आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अधिकार सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिज्ञापत्र, १९९६
- महिला विरुद्ध सबै किसिमका भेदभाव उन्मूलन गर्ने महा सन्धि, १९७९
- यातना तथा क्रुर, अमानवीय वा अपमानजनक व्यवहार वा दण्ड विरुद्धको महासन्धि,
- अन्तर्राष्ट्रिय श्रम संगठन सम्बन्धी महासन्धि, १९८४ (१३८ र १८२)
- बाल न्याय प्रशासन सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्रसंघीय न्यूनतम मापदण्डको नियमावली (वेइजिड नियमावली) १९८५
- बाल अधिकार सम्बन्धी महासन्धि, १९८९ स्वतन्त्रताबाट वञ्चित बाल बालिकाको संरक्षण सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्र संघीय नियमावली, (८३३०) १९९०

- बालबालिकाद्वारा हुने गरिने विज्याई रोकथामको लागि संयुक्त राष्ट्रसंघीय मार्ग दर्शन (रियाद मार्गदर्शन), १९९०
- दक्षिण एसियामा बाल कल्याण प्रवर्द्धनका लागि क्षेत्रीय व्यवस्था सम्बन्धी महासन्धि, १९९९
- शशस्त्र द्वन्द्वमा बालबालिकाको प्रयोग विरुद्ध बाल अधिकार सम्बन्धी महासन्धिको ऐच्छिक प्रलेख-२०००
- बालबालिकाको वेचविखन, वेश्यावृत्ति र अशिल चित्रण विरुद्ध बाल अधिकार सम्बन्धीको ऐच्छिक प्रलेख, २०००
- वेश्यावृत्तिका लागि महिला तथा बालबालिका जीउ मास्ने बेच्ने काम रोकथाम गर्ने र सो विरुद्ध संघर्ष गर्ने सम्बन्धमा व्यवस्था भएको सार्क महासन्धि, २००२

महिला, बालबालिका र दलितहरूको हित संरक्षण मार्फत सन्तुलित सामाजिक विकासको उद्देश्य राख्न राष्ट्रिय कानून आवश्यक पर्नाको कारणहरू

- अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा रहेका सबै दस्तावेजहरूले सबै मुलुकमा बराबरी बन्धनकारी हैसियत नराख्ने भएकाले
- महिला दलित र बाल अधिकार सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धिहरूलाई राष्ट्रको मूल कानून निर्दिष्ट परिधि भित्र राखी कामयावी बनाउन,
- महिला दलित र बाल अधिकारको संरक्षण मार्फत राष्ट्रहरूको अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धता पूरा गर्न,
- हरेक मुलुकका महिला, दलित र बालबालिका विरुद्धको अपराध, बाल विज्याई, महिला विरुद्ध हुने घरेलु हिंसा तथा जातीय विभाजनको आधारमा हुने छुवाछुत सम्बन्धी कसूरजन्य कार्यका पीडितलाई क्षतिपूर्ति भराउने सम्बन्धी विषयहरू फौजदारी कसूर कायम गर्ने, दण्ड गरिने विशुद्ध राष्ट्रिय कानूनले नियमित गर्ने विषय भएकाले अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा रहेका प्रावधानहरू जस्ताको तस्तै लागू गर्न सामाजिक, सांस्कृतिक र भौगोलिक दृष्टिले अनुकूल भई संभव नहुन सक्छ। यस्तो अवस्थामा आफ्नो आन्तरिक परवेश अनुकूल कानूनको तर्जुमा गरिनु आवश्यक हुन्छ।
- विवाद समाधान गर्ने क्रममा अनुसन्धान, अभियोजन र सुनुवाइ पद्धतिको विविधता भएका कारण अन्तर्राष्ट्रिय कानून मात्रको आधारमा न्याय सम्पादन गर्न असहज हुन सक्ने।
- आन्तरिक क्षमताको विकास र अन्तर्राष्ट्रिय प्रावधानहरूको क्षलखवतष्वभ उपयोग।
- नयदवा ऋकउवतष्वर्षतथ या लवतष्वलर्वाभिनर्वा कथकतभ ।यच नयदवा ऋययउभचवतष्वल।

महिला, बालबालिका र दलितहरूको हित संरक्षण मार्फत सन्तुलित सामाजिक विकासको उद्देश्य भएका केही राष्ट्रिय कानूनहरू

- नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ मा महिला बालबालिका र दलितहरूको संरक्षण स्वरूप मौलिक हकहरूको व्यवस्था (धारा ३,१३,१४, २० र २२)
- बालबालिका सम्बन्धी ऐन, २०४८
- बालबालिका (विकास तथा पुनर्स्थापना) कोष नियमावली, २०५३
- बालश्रम (निषेध र नियमित गर्ने) ऐन, २०५६
- कमैया श्रम (निषेध गर्ने) ऐन, २०५८

- बाल न्याय (कार्यविधि) नियमावली, २०६३
- घरेलु हिंसा (कसूर र सजाय) ऐन, २०६६
- जातीय भेदभाव तथा छुवाछुतको कसूर र सजायको सम्बन्धमा व्यवस्था गर्न वनेको ऐन, २०६८
- मुलुकी ऐनका केही महलमा रहेका प्रावधानहरू
 - मुलुकी ऐन गरिव कंगालको महल, अदलको महल (१० र १० क नं.)
 - मुलुकी ऐन अदालती बन्दोबस्तको महल, लोग्ने स्वास्नीको महल, चोरीको महल आदि ।

महिला, बालबालिका र दलितहरूको हित संरक्षण माफत सन्तुलित सामाजिक विकासको उद्देश्य भएका केही नेपाल कानूनहरूको प्रभाव मूल्याङ्कन संकेत

उल्लेखित राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय कानूनी परिवेशमा समावेशीकरणको माध्यमबाट सन्तुलित समाजको विकास गर्नमा नेपालमा भएका केही कानूनहरू कतिको सहायक सिद्ध हुन सकेका छन् अर्थात् भएका कानूनहरूको कार्यान्वयन माफत तिनको उद्देश्यात्मक प्रभाव कस्तो छ भनी मूल्याङ्कन गर्ने क्रममा केही अनुसन्धान प्रतिवेदनहरूले औल्याएका तथ्याङ्कहरू यहाँ साभार गरिएको छ ।

- सरदर १५ प्रतिशत दलित अपाङ्ग ९मक कगलवच, दृण्ठ०, छन् । अपाङ्गहरू मध्ये पुरुष ६४ प्रतिशत र महिला ३६ प्रतिशत ।
- सरदर घर घडेरी र ८ जनाको एक परिवार बराबर बढिमा ३ रोपनीसम्म जग्गा, केही सुकुम्बासी ।
- जीविकोपार्जनका लागि ज्यालादारी गर्नु पर्ने बाध्यता त्यस मध्ये पनि जोखिमपूर्ण काम मात्र उपलब्ध हुने भएकोले दुर्घटना समेतका कारणबाट अपाङ्गता ।
- हिन्दु संस्कारको नकारात्मक प्रभाव स्वरूप दलितहरूको काम हलो जोत्ने मात्र हो ९दान कजवचप, दृण्ठ०
- हली दलितहरूको आर्थिक अवस्था र सामाजिक हैसियत दयनीय रहेको सूचना राज्य व्यवस्थापनसम्म पुग्न बीचमा रहेका निश्चित तहहरू पार गर्नु पर्ने जुन काम महिला, बालबालिका र दलितहरूका लागि असंभव भएको पाइने ।
- म्वष्टिक वचभ उविअभम लयत यलथि बत तजभ दयततक या तजभ ल्मउर्वा'क कयअष्वा'जिष्मचवचअजथ दगत तजभथ वचभ बकिय भहअगिमभम ाचक तजभ कतवतभ नभअजवलष्कका त्जभष्च चभउचभकभलतवतप्यल ष्क दभयिध यलभ उभचअभलत प्ल कतवतभ नयखभचलवलअभ बलम कथदयष्ि प्ल लयल कतवतभ कभअतयच।
- ऋयलकतप्तगतप्यलर्वा बलम भिनर्वा उचयखष्कप्यलक ायच म्वष्टिक वचभ मभाष्अष्मलतस भ्दष्कतप्लन विधक चभवितभम तय म्वष्टि जवखभ यियउ जयभिक प्ल तभक या ङउभिभलतप्लन उचयअभकका
- ख्मचथ यिध प्लअगिकष्यल या म्वष्टिक प्ल तजभ नष्अचय ाप्लवलअभ अययउभचवतप्वभक ९:।द्या द्यष्कजधवपवचकव, दृण्ठ०
- म्मखभयिऊभलत उयष्िअष्मक बलम उचयनचकक बलम तजभष्च कतचगअतगचभ वचभ लयत प्लअगिकष्वभ दथ लवतगचभ ९द्या ल्मउर्वा, दृण्ठ०।

- त्यल म्वष्टि मयल'त कभभ तय वखयच तजभ उयकप्तखभ मष्कअचष्लवतप्यल यच म्वष्टि चभकभचखवतप्यल तजवत गभकि बलनभच बलम गलचभकत प्ल म्वष्टि धजषज अयलकभत्रगभलतथि नष्वभ दष्वतज तय म्वष्टि बलम लयल मवष्टि अयलाषित्ता
- त्जभ बअभभउतवलअभ या जथउयनभलयगक ँवचचष्वनभ दथ लय म्वष्टि कर्षिभक' कयअष्वतथ धवक कतर्षी खभचथ चवचभ भहअभउत गलमभच ककभ भहअभउतप्यलर्वा अष्वअगकतवलअभक कगअज बक विअप या कतचयलन पप्लकजषु लभतधयचप प्ल तजभ कर्षिथ, भहउयकगचभ तय यगतकष्वभ धयचमि, यच कतचयलन प्लागिभलतष्वी कर्षिथ तजवत अयगमि यखभच कजवमयध तजभ दचभवपमयधल या क्यअष्वी लयक ९५ प्लकवपवच ७ न न्जषष्वभ, दृण्ड०। कभह, ऋवकतभ बलम भ्तजलष्वतथ द्यकभम भ्हागिकष्यल प्लीवध
- वीवधक वषभम तय उचयतभअत उभयउभि कच मष्कअचष्लवतप्यल चभवप्ल धभवपथि षुभिभलतभमा
- ज्लमग अगतिगचभ बलम चभष्णिष्यल ष्क कय अयिकभथि प्लिपभम धप्तज उवतचष्वअजर्वा ष्मभययिनथ, उवतचर्षिप्लभर्वा विलम प्लजभचष्लवलअभ बलम धप्तज तजभ अयलअभउतक यच चप्तगर्वा उगचष्लथ बलम उर्यागितप्यल भ्दयमष्वम प्ल दयतज तजभ अवकतभ कथकतभ बलम प्ल नभलमभच चभवितप्यलक, ष्तक उचभमकष्लवलत खष्वध या तजभ धयचमि ष्क व खभचथ जष्वभचअजष्वर्वा यलभा १।।द्यभललभतत, ङढडड० कभह, ऋवकतभ बलम भ्तजलष्वतथ द्यकभम भ्हागिकष्यल प्लीवध बलम उचवअतष्वभ
- ध्यभल भहउभचष्लभलअभ गतिषुभि मष्कअचष्लवतप्यल धप्तजप्ल तजष्क भ्तजलष्व(अवकतभ(चभष्णिष्यगक(प्लिनगष्कतष्व कतचवतग, उवचतथि यल वअअयगलत या व यिलन जष्कतयचथ या यााष्वर्वा कथकतभष्व बलम प्लकतप्लगतप्यलवषिभम मष्कअचष्लवतप्यल ९।। ज्वगन, व व्वकविलम बलम म च म्वजर्वा, दृण्ड०।
- क्ष धभ तवपभ भमगअवतप्यल, धजषज ष्क व कप्ललषष्वबलत भहउविलवतयचथ खवचष्वदभि या प्लभत्रगवष्लथ नभलभचर्वाथि प्ल ल्भउर्वा ९.ग्लए, दृण्ड०, तजभ मषाभचभलअभक वचभ मचकवतष्व।
- ढडाड ५ या द्यचवकष्ल नभल बलम टडाट ५ या द्यचवकष्ल ध्यभल वचभ अविककष्वभम बक ष्लिभचवतभ, यलथि ढडाड५ या :वमजभकष म्वष्टि नभल बलम यलथि ङठाद् उभचअभलत या :वमजभकष मवष्टि ध्यभल अबल चभवम बलम धचष्लभ,
- विलमभिकक जयगकभजयमिक बलम कर्वाी कचभचक भहउभचष्लभलअभ तजभ जप्लजभकत भिखभकि या उयखभचतथ ९।।विलनायचम बलम वाःद्यजवततवचवष, दृण्ड०।
- इलभ कतवतभम वष या तजभ :वयष्कत वचभम प्लकगचनभलअथ धवक तय वममचभकक तजभ कयअष्वी बलम भअयलकष्व प्लवगकतष्वभक या र्वाी ँवचनप्लवषिभम उयउगवितप्यलक, वतिजयगनज तजष्क दचयवम भ्दवलअषुवतयच उवितायक यलथि भ्भचनभम मगचप्लन तजभ अयलाषित्ता बक तजभ :वयष्कतक कयगनजत र्वाष्विलअभक धप्तज अवकतभ(दवकभम, भ्तजलष्व बलम ध्यभल'क नचयगउक ९त एवकषुवलयमथव, दृण्ड०।
- त्जभ ङद् ष्वभच यिलन वचभम अयलाषित्ता धवक उचष्वचर्षिथ मचष्वभल दथ तजभकभ प्लभत्रगवष्लिष्वक ९व द्यचवथीीभष्व बलम :। गचकजभम, दृण्ड०
- क्षत जवक दभभल अविषभम तजवत वमवगमष्ववतयचक वचभ लयत प्लकतप्लगतप्यलर्वाथि कगप्लभम तय तजभ तवकप वक तजभथ विअप तजभ चभत्रगष्कतभ भहउभचतष्कभ बलम प्लायकवतप्यल बलम अबललयत चभकयखिभ तजभ अकउभतप्लन उयष्विथ अयलकष्वभचवतप्यल बलम अयलकभत्रगभलअभक तजवत धयगमि गियध कच तजभष्व मभअष्वकष्यलक।

मानव अधिकारको विश्वव्यापी तरङ्गसँगै नेपालमा पनि बनेका महिला, बालबालिका र दलितहरूको हित संरक्षण गर्न बनेका केही कानूनहरूको कार्यान्वयन पक्ष कमजोर छ, यी कानूनहरू उद्देश्यात्मक सफलता प्राप्त गर्नमा अत्यन्त न्यूनमात्र सफलताका साथ गुञ्जीरहेका छन् भन्ने कुरा उपरोक्त सांकेतिक तथ्याङ्कले देखाउँछ ।

महिला, दलित र बालबालिका सम्बन्धी नेपाल कानूनको प्रभावकारी कार्यान्वयनमा सरकारी वकीलको भूमिका

अनुसन्धान प्रतिवेदनमा आधारित उल्लेखित तथ्याङ्कहरूको संकेतबाट महिला, दलित र बालबालिका सम्बन्धी नेपाल कानूनहरूको उद्देश्यात्मक सफलताको प्रतिशत न्यून मात्र रहेको देखिन्छ । ती विषयसँग सम्बन्धित कानूनहरूले कतिपय विभेदजन्य र अमानवीय व्यवहारहरूलाई कसूरजन्य कार्यका रूपमा घोषणा गर्दै त्यस्ता कार्यका अन्यायकारी पक्षलाई दण्ड सजायको व्यवस्था समेत गरेको र त्यस्ता कसूरजन्य कार्यहरूको अनुसन्धान तथा अभियोजन र प्रतिरक्षा समेत सरकारका तर्फबाट गरिने घोषणा गरी राज्यका तर्फबाट गरिने कामका लागि सरकारी वकीलको जिम्मेवारी समेत तोकिइएको सन्दर्भमा विगत तीन वर्षमा उल्लेखित ती विषयसँग सम्बन्धित कसूरजन्य कार्यहरू कति अभिलेखमा आए र तिनको सफलताको प्रतिशत कस्तो रह्यो भनी देहायको तालिकाबाट विश्लेषण गर्ने जमर्को गरिएको छ ।

महिला, दलित र बालबालिकासँग सम्बन्धित मुद्दाहरूको स्थिति

मुद्दाको विषय	आ.ब. ०६५।६६				आ.ब. ०६६।६७				आ.ब. ०६७।६८			
	लगत	सफल	असफल	अन्य	लगत	सफल	असफल	अन्य	लगत	सफल	असफल	अन्य
अपहरण	१७९	३३	३८	..	४१४	४४	५६	३	५०८	८८	१२९	३
ज. करणी	४०९	२४९	१३२	..	८५३	२८२	१३०	१९	९२१	३३२	१३२	३१
ज.क.उद्योग	७६	४६	२९	..	१७७	३५	३४	३	२३३	५४	६१	१०
गर्भ पत्तन	१०	२	३	..	३७	७	११	..	३०	८	८	..
जी.मा.वे.	११०	८२	५६	..	२९९	७१	४७	१	३१७	७९	३९	..
बहु विवाह	१७२	८८	३२	..	३४५	१२१	४०	..	३६५	१४४	४६	२
बाल विवाह	९	४	३	..	१३	४	१	..	१८	५	४	..
छुवाछुत	१२	५	४	..	१२	२	४	..	१६	४	४	..
जम्मा	९७७	५०९	२९७	..	२१७७	५२६	३२३	२६	२४०८	७१४	४२३	४६

स्रोत : महान्यायाधिवक्ताको वार्षिक प्रतिवेदन २०६५।०६६, ०६६।०६७ र ०६७।६८, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय ।

स्पष्टीकरण र माथिको तालिकामा सफल र असफल देखाइएका दुवै मुद्दा संख्या जोडदा जम्मा लगतमा देखाइएको संख्या बराबर हुँदैन । तत् वर्षमा फैसला भए मध्येकाबाट सफल र असफल पनि लेखिएको, आंशिक सफल र मुद्दा छिन्न बाँकी रहेका संख्या अन्यमा राखिएको तर महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको वार्षिक प्रतिवेदनमा मुद्दा सम्बन्धी तथ्याङ्क राख्ने एक निश्चित मापदण्ड र सबै वर्षको तालिकाको ढाँचामा एकरूपता नभएको कारण कुनै वर्षको अन्य भन्ने महल पनि खाली नै रहेको अवस्था छ । पर्याप्त सूचना स्रोतको अभाव हुँदाहुँदै पनि उपलब्ध भएसम्मको स्रोत सामग्री उपयोग

गरी तुलानात्मक अध्ययन गर्ने जमर्को गरिएको प्रस्तुत तालिकालाई सामान्यतया महिला, बालबालिका र दलितसँग सम्बन्धित मुद्दाहरूको अनुपात कस्तो छ र तिनको न्यायिक निरोपणमा विद्यमान फौजदारी न्याय प्रणाली कतिको प्रभावकारी सावित हुन्छ अनि सरकारी वकीलको काम कारवाहीका क्रममा बढी ध्यान पुग्न पर्ने पाटो कुन हो भन्ने सामान्य अनुमान गर्ने आधारका रूपमा लिइएको छ ।

- समग्रमा महिला, दलित र बालबालिका सम्बन्धी मुद्दाहरूको संख्या एक पछि अर्को वर्ष दोब्बर भन्दा बढिको दरमा बढिरहेको देखिन्छ ।
- फैसला भएका अपहरण सम्बन्धी मुद्दाको सफलता भन्दा असफलता प्रतिशत बढिरहेको पाइन्छ ।
- जबरजस्ती करणी, जीउ मास्ने वेच्ने, बाल विवाह र बहु विवाह मुद्दामा सफलताको प्रतिशत थोरैको दरमा भएपनि बढी नै रहेको र आ.ब. २०६७/०६८ बाहेकका दुई वर्षहरूमा जबरजस्ती करणी उद्योग पनि सफलताको प्रतिशत बढिरहेको देखिन्छ ।
- छुवाछुत सम्बन्धी मुद्दाहरू अदालतसम्म आइपुगेको संख्या सातौँ न्यून मात्र देखिन्छ भने सफल र असफल बराबरीको संख्यामा रहेको पाइन्छ ।
- ती विषय सम्बन्धी मुद्दाहरूको संख्यात्मक वृद्धिको तुलनामा मुद्दामा प्राप्त सफलताको प्रतिशत न्यून मात्र रहेको पाइन्छ ।

विद्यमान समस्याहरू

समस्याहरूलाई भएका कानूनहरू आफैमा सामाजिक समस्याहरूलाई सम्बोधन गर्न पूर्ण र सक्षम छन् भन्ने र तिनको कार्यान्वयन प्रभावकारिता कस्तो छ भन्ने समेत दुई तहमा विभाजन गरी प्रस्तुत गरिएको छ ।

- **कानूनी प्रावधान**
 - कानून निर्माता निकाय तथा अधिकारीहरूमा विशेषज्ञताको कमी,
 - क्षमता अभिवृद्धि गर्ने एकीकृत कार्य योजनाको अभाव,
 - अनावश्यक राजनीतिक धुवीकरण,
 - ऋयउथ उबकतभ अर्गतगचभ ले अपरिवर्तनीय तत्वका रूपमा सामाजिक स्वीकृति पाएको अवस्था ।
 - सहभागितामूलक कानून निर्माण प्रकृया सम्बन्धी मान्यताको समुचित ढंगले स्थानीयकरण हुन नसकेको ।
- **कार्यान्वयन प्रभावकारिता**
 - न्याय प्रशासन आफैमा सबै राष्ट्र सेवकहरूमा कार्य उत्प्रेरणा जगाउन र जनउत्तरदायी भावनाको विकास गराउन असफल र असक्षम जस्तो सावित भएको अवस्था ।
 - कानून कार्यान्वयन निकाय सम्बद्ध प्रशासनको काम प्रति उदासीनता, तदर्थवादको निरन्तरता र व्यक्तिगत फाइदा हुने अवसरहरूको खोजीमा समय लगानी गर्ने संस्कार प्रथाको रूपमा स्वीकृत प्राप्त ।

- ी। अमललमतत, दृण्छ, अयलाभचमलअभ उवउभच यल ल्मध 'चयलतषभचक या क्यअष्वा एयषिअथ' उचभकमलतभम प्ल व्चगकजव ऋयलाभचमलअभ, " - म्मअभकदभच जद्(ज्जछ, दृण्छ
- :। ज्वगन, व व्वकविलम वलम म च म्बजर्वा, दृण्ढ, 'एवततभचलक या क्यअष्य(एयषिअष्वा एवचतषुवतप्यल प्ल ल्मउर्वा वलम क्कुअवतप्यलक यच क्यअष्वा क्षलअगिकष्यल, घटस्ज यचग यच म्मखभयिऊभलत क्तगमष्भक एए ज्जद्(ज्जघ
- ी। अमललमतत, ज्जडडद्, म्वलनभचयगक ष्वभक वलम क्वअचभम क्कतभचकस् त्जभ क्यअष्वा वलम क्कदयषिअ च्यभिक या ज्जलन ऋवकत ज्जलमग ध्कभल प्ल ल्मउर्वा, ऋयगिदष्व ग्लष्वभचकप्लथ एचभककस क्तभखभल एवचष्कज, ज्जडठठ, ज्जभचवचअजथ वलम प्तक म्कअयलतभलतकस् ऋगतिगचभ वलम तजभ एयषिअक या ऋयलकअष्यगकलभकक प्ल ऋवकतभ क्यअष्मतथ, इहायचम ग्लष्वभचकप्लथ एचभकका
- ग्ल्म, दृण्ढ, ल्मउर्वा ज्जवल म्मखभयिऊभलत अमउयचत, क्तवतभ तचवलकायकवतप्यल वलम ज्जवल म्मखभयिऊभलत, ल्मध थ्यचप, उ। घड
- :। विलनायचम वलम वः। अजवततवचवष, ऋयलकतप्लगतप्यलर्वा अजतक वलम क्यअष्वा भहअगिकष्यल प्ल ल्मउर्वा, क्षलतभचलवतप्यलर्वा वयगचलर्वा यल :प्लयचप्लथ वलम न्वयगउ अजतक, ज्जड, घडठ(द्वज्ज
- व अचवथी। भिष्व वलम :। गचकजभम, दृण्घ, 'ल्मउवर्सि भ्अयलकष्व म्चष्वभचक या तज :वयष्कत क्षलकगचनभलअथ' प्ल प अर्वाभिलतप्लभ वलम व क्जभकवल, एयषिअष्वा भ्अयलकथ या वकभम ऋयलाषिअतस् अमथयलम न्वभभम वलम न्वष्मखत्रलअभ, थिललभ अमललभच, अयगमिभच, ऋया
- त एवकषुवलयमथव, दृण्ढ, 'व म्मउभच वाकतषुअभस् भ्अयलकष्व वलम क्यअष्वा वाकतषुअभ वक त्चवलकप्लप्यलर्वा वाकतषुअभ प्ल ल्मउर्वा, त्जभ प्लतभचलवतप्यलर्वा वयगचलर्वा या तचवलकप्लप्यलर्वा वगकतषुअभ, उ। घठड।
- अष्कजर्वा अजवततवचवष, एचभकमलत क्तवतगक या ध्कभल प्ल ल्मउर्वा ऋयलकतचवप्लतक वलम एयषिअथ :भवकगचभक तय न्मलमभच भ्त्रगवप्लिथ वलम ध्कभल अउयधभकभलत, क्क्वरत्क्वरल्मउर्वा ९८०, वखवर्षवदिभि वत [जततउस्सरधध्यागलभकअवउायचनरकतवतरुभभतरचचनघरतधकव\(लभउर्वा वाउमा, वअअभककभम यल द्द, व्उचर्षि दृण्ज्जण](#)
- म्मभउभलमचव क्प्लनज कगलवच, ९दृण्ढ० शारीरिक अपांगदलितहरूको आवस्था, व्दकतचवअत या अमकभवचअजभक काउउयचतभम दथ क्यअष्वा क्षलअगिकष्यल अमकभवचअज गलम ९क्क्षँ०, वखवर्षवदिभि वत जततउस्सरधध्याअमायचनालउरलभधरचभकयगचअभकरक्क्षँ)व्दकतचवअत)अययपाउमा, वअअभककभम यल द्द व्उचर्षि, दृण्ज्जद्।
- एचकष्व त्जवउव, दृण्ढ, ख्यभिलअभ वनवप्लकत ध्कभलस् च्ययत ऋवगकभक वलम ऋयलकभत्रगभलअभक, क्यअष्वा प्लअगिकष्यल वलम लवतप्यल दगर्षिमप्लन प्ल ल्मउर्वा, व्दकतचवअत या अमकभवचअजभक काउउयचतभम दथ क्यअष्वा क्षलअगिकष्यल अमकभवचअज गलम ९क्क्षँ०, वखवर्षवदिभि वत जततउस्सरधध्याअमायचनालउरलभधरचभकयगचअभकरक्क्षँ)व्दकतचवअत)अययपाउमा, वअअभककभम यल द्द व्उचर्षि, दृण्ज्जद्।
- अजवचवत न्यतकभ क्जवचपष, दृण्ढ, ज्वषि कथकतभ कयलन म्वप्लिक, व क्तगमथ या ज्वलकवउगच ख्त्र या प्चकपष म्कतचप्लत,
- थ्क अजवमगच प्कवल, दृण्ढ, व क्तगमथ या म्वप्लिक क्षलअगिकष्यल प्ल ल्मउर्वा क्तवतभ न्यखभचलवलअभ

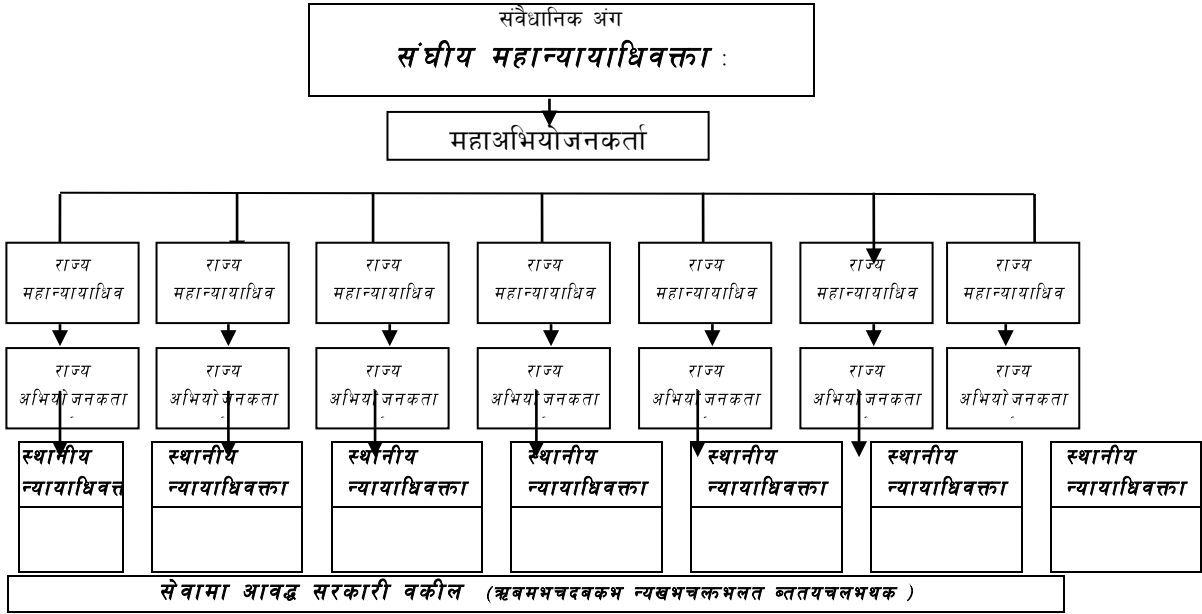
- चवभलमचव एचवकबम क्वज, दृण्ण, क्यअप्ययिनअर्वा कतगमथ या तजभ म्फ अकगलप्तथ, ष ऋवकभ कतगमथ या क्चवजव मष्कतचअत या ल्मउर्वा
- :वल अजवमगच अष्कधवपवचव, दृण्ण, क्षलअगिकप्यल या म्बपितक प्ल :अचयौप्लवलअभ ऋययउभचवतष्वभक प्ल ल्मउर्वा
- अजवचवत ल्मउवदि, दृण्ण, भककभलअभ वलम अजवर्वाभिलनभक या कउभअष्वा एयपिअथ एचयखष्कप्यलक यच म्बपित प्लअगिकप्यलस् ब्ल प्लकतप्तगतप्यलर्वा ब्लवधिकष्क या ख्वचप्यगक यचनवलषावतप्यलक
- प्मकजवचप प्लकवपवच वलम क्तव न्जषचभ, दृण्ण, क्षलतचअबअष्भक या क्षलतभच अबकतभ :वचचष्वनभ दभतधभभल म्बपितक वलम ल्यल(मवपितक प्ल ल्मउवसि ऋयगउभिक' एभचकउभअतष्वभक
- नेपालमा बालबालिकाको अवस्था, वार्षिक प्रतिवेदन, २००९, मानव अधिकार आयोग, नेपाल
- नेपालको संविधान र सम्बद्ध ऐन नियमहरू

(घ) भावी संविधानमा महान्यायाधिवक्ताको स्वरूप र ढाँचा

जिल्ला न्यायाधिवक्ता श्री पुष्कर

सापकोटा

जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय, सुनसरी



द्रष्टव्य : भावी संविधानमा ७ (सात) वटा प्रदेश रहन सक्ने अनुमान गरि ७ (सात) वटा राज्य महान्यायाधिवक्ता र हरेक राज्य अन्तर्गत आवश्यकता अनुसार २ वा सो भन्दा बढी स्थानीय न्यायाधिवक्ता रहने । स्थानाभावका कारण सबै राज्य अन्तर्गतका स्थानीय न्यायाधिवक्ताको व्यवस्था प्रस्तुत ऋजबचत मा नअटेको हुंदा केवल सांकेतिक रूपमा स्थानीय न्यायाधिवक्ताको व्यवस्था उल्लेख गरिएको ।

भाग १

संघीय महान्यायाधिवक्ता

(२) पृष्ठभूमी

- (क) संवैधानिक एवं कानूनी प्रश्नमा राष्ट्राध्यक्ष, सरकार (मन्त्रिपरिषद) व्यवस्थापिका लगायतलाई राय प्रदान गर्ने ।
- (ख) राज्य पक्ष हुने गंभीर प्रकृतिका संवैधानिक र कानूनी प्रश्नमा कानूनी सल्लाह प्रदान गर्ने ।
- (ग) सरकारको तर्फबाट कुनै मुद्दा चलाउने वा नचलाउने अन्तिम निर्णय गर्ने ।
- (घ) गंभीर प्रकृतिका फौजदारी मुद्दाहरूमा सक्रियता देखाई अपराधको रोकथाम गर्ने ।
- (ङ) अपराधको प्रभावकारी अनुसंधान गरी सफल अभियोजन गर्ने गराउने ।

- (च) अपराधीलाई दण्ड दिई समाजमा शान्ति सुरक्षा कायम गर्ने गराउने ।
(छ) फौजदारी न्याय प्रशासनको प्रभावकारिता बढाउने ।
(ज) हिरासतमा हुने मानव अधिकारको उलंघनको अनुगमन गर्ने ।
(झ) संघीय सर्वोच्च अदालतका व्याख्या तथा सिद्धान्त कार्यान्वयन भए/नभएको अनुगमन गर्ने ।

(३) नेपालमा महान्यायाधिवक्ताको इतिहास

- (क) प्राचीन नेपालमा राजाले न्यायिक अधिकार प्रयोग गर्दा शास्त्र-विज्ञ पण्डीतको सल्लाह लिन्थे, जुन आजको महान्यायाधिवक्ताको स्वरूपको देखिएको ।
(ख) नेपाल सरकार वैधानिक कानून २००४ को धारा १२ ले सरकारलाई राय सल्लाह दिन प्रधान कानूनी सल्लाहकारको व्यवस्था गरेको ।
(ग) कार्यकारिणीको आदेशवाट २००८ सालमा सर्व प्रथम एटर्नी जनरलको व्यवस्था गरिएको (काली प्रसाद प्रथम एटर्नी जनरलमा नियुक्त भएका) ।
(घ) सर्वोच्च अदालत ऐन, २०१३ को दफा २१ प्रयोग गरी गृह मन्त्रालयले राजपत्रमा २०१३ साल श्रावण १ गते सूचना प्रकाशित गरी न्यखभचकभलत व्तयचलभध को व्यवस्था गरेको ।
(ङ) २०१९ सालको संविधानले महान्यायाधिवक्ताको पदलाई संवैधानिक पदको रूपमा स्थापित गरेको ।
(च) नेपाल अधिराज्यको संविधान, २०४७ र नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ ले महान्यायाधिवक्तालाई सरकारको प्रमुख कानूनी सल्लाहकार अन्तिम अभियोजनकर्ता, मानव अधिकारको अनुगमनकर्ता समेतको गहन जिम्मेवारी प्रदान गरेको ।

(४) महान्यायाधिवक्ताको संगठनात्मक स्वरूप

- (क) **केन्द्रमा** :-संघीय महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय ।
(ख) **राज्यमा** :-राज्य महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय ।
(ग) **राज्य मातहतमा** :-स्थानीय न्यायाधिवक्ताको कार्यालय ।

- भावी संविधानमा अदालतको संरचना संग मेल खाने गरी महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको पनि स्वरूप निर्धारण गर्नुपर्छ ।
- संघीय महान्यायाधिवक्ताको मातहतमा महाअभियोजनकर्ता र विभिन्न तहका सरकारी वकीलहरूको व्यवस्था कानून द्वारा गर्न सकिन्छ ।
- राज्य महान्यायाधिवक्ता र निजको मातहतमा आवश्यकता अनुसार अभियोजनकर्ता र अन्य सरकारी वकीलहरूको व्यवस्था कानून द्वारा गर्न सकिन्छ ।

(५) संवैधानिक स्थिति

- (क) विगतको नेपालको संवैधानिक परम्परा अनुसार नै महान्यायाधिवक्तालाई संवैधानिक पदाधिकारीको रूपमा राखिनु पर्ने ।

- (ख) सर्वोच्च अदालतको न्यायाधीश हुन सक्ने व्यक्ति मात्र यो पदमा नियुक्ति हुन ग्राह्य हुने ।
- (ग) महान्यायाधिवक्तामा पेशागत स्वतन्त्रता र व्यवसायिक उन्मुक्ति रहने ।
- (घ) महान्यायाधिवक्ता विशेषज्ञताको हिसावले कानूनी राय सल्लाह दिने, संवैधानिक र कानूनी प्रश्नमा संघीय सर्वोच्च अदालत र राज्य अदालतहरूमा सरकारको तर्फबाट प्रतिनिधित्व, प्रतिरक्षा, सार्वजनिक हक, हितको प्रतिरक्षाको भूमिका संविधानमै उल्लेख गरिनु पर्ने ।

(६) संघीय महान्यायाधिवक्ताको नियुक्ति र योग्यता

- (क) नेपालमा एक संघीय महान्यायाधिवक्ता रहने ।
- (ख) निजको नियुक्ति कार्यकारी प्रमुखको सिफारिसमा राष्ट्रध्यक्ष बाट हुने ।
- (ग) राष्ट्रध्यक्ष नै कार्यकारी-प्रमुख भए राष्ट्रध्यक्ष बाटै निजको नियुक्ति हुने ।
- (घ) संघीय सर्वोच्च अदालतको न्यायाधीश हुने योग्य व्यक्ति महान्यायाधिवक्ता पदमा नियुक्ति हुन सक्ने ।
- (ङ) महान्यायाधिवक्ताको पारिश्रमिक र अन्य सुविधा संघीय सर्वोच्च अदालतको न्यायाधीशको सरह हुने ।
- (च) निजको पदावधी कार्यकारी प्रमुखको ईच्छा अनुसारको हुने ।

(७) संघीय महान्यायाधिवक्ताको काम, कर्तव्य र अधिकार

- (क) सरकारको मुख्य कानूनी सल्लाहकार हुने ।
- (ख) संवैधानिक र कानूनी प्रश्नमा सरकार र सरकारले तोकेको निकाय र अधिकारीलाई राय सल्लाह प्रदान गर्ने ।
- (ग) नेपाल सरकारको हित र सरोकार निहीत रहेको मुद्दामा सरकारको प्रतिनिधित्व गर्ने ।
- (घ) सरकारको तर्फबाट मुद्दा चलाउने वा नचलाउने अन्तिम निर्णय गर्ने ।
- (ङ) सरकारको तर्फबाट चलाईएका मुद्दा फिर्ता लिने तथा त्यस्ता मुद्दा मिलापत्र सम्बन्धी अन्तिम निर्णय गर्ने ।
- (च) संघीय सर्वोच्च अदालतले गरेका कानूनको व्याख्या र प्रतिपादित सिद्धान्त कार्यान्वयन भए नभएको अनुगमन गर्ने ।
- (छ) हिरासतमा रहेका व्यक्तिको मानव अधिकारको अनुगमन गर्ने ।
- (ज) मन्त्रपरिषद र संघीय व्यवस्थापिका सभामा उपस्थित हुने र विधि सम्मत निर्णय गर्न सहयोग पु-याउने ।
- (झ) संगठित अपराध, अन्तराष्ट्रीय प्रकृतिका अपराध (ऋचयकक दयवचमभच ऋचषभ) रोकथामको लागि गरिने सरकारी प्रयासमा सहयोग पु-याउने ।
- (ञ) अन्तर्राष्ट्रिय फौजदारी अपराध नियन्त्रणका लागि हुने अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलनमा भाग लिने र त्यस्ता अन्तर्राष्ट्रिय कानूनको कार्यान्वयनमा सहयोग पु-याउने ।

(८) महा अभियोजनकर्ताको नियुक्ति र योग्यता

- (क) संघीय महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयमा एक महाअभियोजनकर्ता रहने ।

- (ख) महाअभियोजनकर्ता राजनैतिक पद नभई विशुद्ध व्यवसायिक एवं योग्यता प्रणालीमा आधारित हुने ।
- (ग) नेपाल न्याय सेवाको विशिष्ट श्रेणीमा काम गरी सकेको व्यक्तिलाई सरकारले महाअभियोजनकर्ताको पदमा नियुक्ति गर्न सक्ने ।
- (घ) संघीय महान्यायाधिवक्ताको सामान्य निर्देशन र नियन्त्रणमा रही महाअभियोजनकर्ताले कार्य गर्ने ।
- (ङ) महाअभियोजनकर्ताको सेवा, शर्त, सुविधा, काम कर्तव्य र अधिकार कानूनमा व्यवस्था भए बमोजिम हुने ।

(९) संघीय महान्यायाधिवक्ता पद मुक्त हुने आधार

- (क) राजनिामा दिएमा,
- (ख) मृत्यु भएमा ।
- (ग) कार्यकारी प्रमुखले हटाउन राष्ट्रध्यक्ष समक्ष सिफारिस गरेमा ।
- (घ) कार्यकारी प्रमुख स्वयं नै राष्ट्रध्यक्ष भएकोमा निजले हटाएमा ।
- (ङ) कार्यकारी प्रमुखको सिफारिसमा निजको नियुक्ति भएकोमा कार्यकारी प्रमुख स्वयं पद मुक्त भएमा ।

(१०) कानून व्यवसायको सेवा लिन सक्ने

- (क) संघीय व्यवस्था अपनाएका केही मुलुकहरूमा सरकारको तर्फबाट प्रतिनिधित्व गर्न कानून व्यवसायीबाट समेत सेवा लिने गरिन्छ ।
- (ख) नेपालमा कानून व्यवसायिबाटै महान्यायाधिवक्ता नियुक्ति गरिने प्रचलनले गर्दा वहस, पैरवी, प्रतिरक्षा र कानूनी राय प्रदान गर्ने महान्यायाधिवक्ताको कार्यको लागि कानून व्यवसायिको सेवा लिने गरिएको छैन ।
- (ग) संविधान र कानूनको व्याख्या सम्बन्धी जटिल सार्वजनिक महत्वको प्रश्नमा सहयोग गर्न निश्चित अवधिको लागि कानून बमोजिम करार सेवा लिन सक्ने अधिकार महान्यायाधिवक्तालाई प्रदान गरिनु उपयुक्त हुन्छ ।

(११) वार्षिक प्रतिवेदन

- (क) संघीय महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको वार्षिक प्रतिवेदन राष्ट्रध्यक्ष समक्ष पेश गरिने ।
- (ख) राष्ट्रध्यक्षले कार्यकारी प्रमुख मार्फत उक्त वार्षिक प्रतिवेदन संघीय व्यवस्थापिका समक्ष पेश गर्ने ।
- (ग) उक्त प्रतिवेदन माथि छलफल हुंदा केही सुझाव दिन आवश्यक देखिएमा त्यस्तो सुझाव संघीय व्यवस्थापिकाले महान्यायाधिवक्तालाई दिने व्यवस्था गरेमा महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयमा उत्तरदायित्व सुनिश्चित हुन जान्छ ।

भाग-२

राज्य महान्यायाधिवक्ता

(१२) पृष्ठभूमि

- (क) हरेक राज्यमा एक राज्य महान्यायाधिवक्ता रहने ।
- (ख) संवैधानिक र कानूनी प्रश्नमा राज्य प्रमुख, राज्य सरकार र राज्य व्यवस्थापिकालाई राय सल्लाह प्रदान गर्ने ।
- (ग) राज्य सरकारको हक हित सरोकारमा रहेका मुद्दामा राज्य सरकारको तर्फबाट प्रतिनिधित्व गर्ने ।
- (घ) राज्य सरकारको तर्फबाट मुद्दा चलाउने/ नचलाउने विषयमा अन्तिम निर्णय गर्ने ।
- (ङ) हिरासतमा रहेका व्यक्तिको मानव अधिकारको अनुगमन गर्ने ।
- (च) राज्य महान्यायाधिवक्ताको सामान्य निर्देशन र नियन्त्रणमा राज्य अभियोजनकर्ता रहन ।

(१३) राज्य महान्यायाधिवक्ताको नियुक्ति र योग्यता

- (क) राज्यको कार्यकारी प्रमुखको सिफारिसमा राज्य प्रमुखबाट राज्य महान्यायाधिवक्ताको नियुक्ति हुने ।
- (ख) राज्य उच्च अदालतको न्यायाधीश हुन योग्य व्यक्ति राज्य महान्यायाधिवक्ताको पदमा नियुक्ति हुन सक्ने ।
- (ग) निजको पारिश्रमिक र अन्य सुविधा राज्य उच्च अदालतको न्यायाधीश सरह हुने ।
- (घ) निजको पदावधि राज्यको कार्यकारी प्रमुखको इच्छा अनुसारको हुने ।

(१४) पद मुक्त हुने आधार

- (क) लिखित राजनिामा दिएमा ।
- (ख) मृत्यु भएमा ।
- (ग) कार्यकारी प्रमुखले निजलाई हटाउन राज्य प्रमुखसँग सिफारिस गरेमा ।
- (घ) राज्य प्रमुख स्वयं नै कार्यकारी प्रमुख भएको राज्य प्रमुख स्वयंले हटाएमा ।
- (ङ) नियुक्ति दिने राज्य प्रमुख सरकारबाट हटेमा ।

(१५) काम, कर्तव्य र अधिकार

- (क) राज्य सरकार वा निजले तोकेको निकायलाई संवैधानिक वा कानूनी प्रश्नमा राय सुभावा प्रदान गर्ने ।
- (ख) राज्य कानून अन्तर्गतको विषयमा मुद्दा चलाउने वा नचलाउने कुराको अन्तिम निर्णय गर्ने ।
- (ग) राज्य सरकारको तर्फबाट मुद्दामा बहस, पैरवी, प्रतिनिधित्व गर्ने ।
- (घ) राज्य सरकारको बैठक तथा राज्य व्यवस्थापिका समक्ष उपस्थित भै वैधानिक निर्णय गराउन सहयोग पुऱ्याउने ।
- (ङ) राज्य उच्च अदालतबाट प्रतिपादीत सिद्धान्त वा व्याख्याको कार्यान्वयन भए/नभएको अनुमान गर्ने ।
- (च) हिरासतमा रहेका व्यक्तिको मानव अधिकार संरक्षण भए/ नभएको अनुगमन गर्ने ।

(१६) वार्षिक प्रतिवेदन

- (क) राज्य न्यायाधिवक्ताले वर्षभरिको आफ्ना कार्यहरूको प्रतिवेदन राज्य प्रमुख समक्ष पेश गर्ने ।
- (ख) उक्त प्रतिवेदन राज्य प्रमुखले राज्य व्यवस्थापिका सभा समक्ष पठाउने ।
- (ग) उक्त प्रतिवेदन उपर राज्य व्यवस्थापिकाले कुनै राय सुझाव दिन चाहेमा राज्य महान्यायाधिवक्तालाई दिन सक्ने ।

भाग ३ स्थानीय न्यायाधिवक्ता

(१७) पृष्ठभूमि

- (क) अपराधीलाई कानूनको दायरामा ल्याई दण्डहीनताको अन्त्य गर्न स्थानीय तहमा अभियोजनकर्ताको रूपमा स्थानीय न्यायाधिवक्ता रहने ।
- (ख) निजले स्थानीय सरकारको कानूनी सल्लाहकारको भूमिका निर्वाह गर्न सक्ने ।
- (ग) स्थानीय तहमा अपराधको अनुसन्धान र अभियोजन कार्यलाई प्रभावकारी बनाउने प्रमुख जिम्मेवारी स्थानीय न्यायाधिवक्तामा रहने ।
- (घ) स्थानीय न्यायाधिवक्ता राज्य महान्यायाधिवक्ताको मातहतमा रहने ।
- (ङ) स्थानीय न्यायाधीश हुन योग्यता पुगेको व्यक्ति स्थानीय न्यायाधिवक्तामा नियुक्त हुन सक्ने ।
- (च) स्थानीय न्यायाधिवक्ताले स्थानीय न्यायाधीश सरहको सेवा सुविधा पाउने ।

(१८) सरकारी वकीलहरूको सेवा शर्त सम्बन्धी व्यवस्था

- (क) सरकारी वकीलको सेवा सम्बन्धी विषय फौजदारी न्याय प्रशासनसंग प्रत्यक्ष सम्बन्धीत विषय भएको ।
- (ख) समाजमा दण्डहीनता हटाइ शान्ति सुरक्षा कायम गर्न फौजदारी न्याय प्रशासन सफल हुन आवश्यक हुन्छ ।
- (ग) सरकारी वकील सरकारको कानूनी सल्लाहकार हुनाका साथै सरकारी मुद्दा चल्ने वा नचल्ने निर्णय गर्ने, सरकारवादी भएको वा नेपाल सरकारको हकहित वा सरोकार निहित रहेको मुद्दामा प्रतिरक्षा गर्ने जस्ता व्यासायिक कार्य सरकारी वकीलले गर्छ ।
- (घ) सरकारी वकीलको व्यवसायिक दक्षता अभिवृद्धि गर्न, आफ्नो पेशा प्रति गौरवको अनुभूति दिलाउन र संस्थाप्रति जिम्मेवार बनाउन संघीय सर्वोच्च अदालत, राज्य उच्च अदालत र स्थानीय अदालतका न्यायाधीश सरहको नियुक्ति, योग्यता, अवकाशको उमेर, पारिश्रमिक, सेवा शर्त र सुविधा हुने गरी ऐन निर्माण गरिनु पर्छ ।

अनुसूची ४
भावी संविधानमा महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको संरचना र स्वरूप
(अवधारणा पत्र)

नायब महान्यायाधिवक्ता श्री सूर्यप्रसाद कोइराला
 सहन्यायाधिवक्ता श्री किरण पौडेल
 महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय, नेपाल

विषय प्रवेश

नेपालमा २००८ साल देखि सरकारलाई सरोकार पर्ने मुद्दामा सरकार वा सरकारी कर्मचारीको तर्फबाट अड्डा अदालतमा बहस पैरवी गर्ने पदाधिकारीका रूपमा महान्यायाधिवक्ताको व्यवस्था भएको हो। नेपालको संविधान, २०१९ ले महान्यायाधिवक्तालाई संवैधानिक पदाधिकारीका रूपमा स्थापित गरी निम्न काम तोकेको थियो:

- सरकारलाई संवैधानिक र कानूनी विषयमा राय सल्लाह दिने,
- अन्य कानूनले तोकेका काम गर्ने र यो काम गर्दा निजलाई नेपालका सबै अदालतमा उपस्थित हुने अधिकार हुने,

नेपाल अधिराज्यको संविधान, २०४७ ले महान्यायाधिवक्तालाई सरकारको मुख्य कानूनी सल्लाहकार भनेको थियो। यस अतिरिक्त निजलाई निम्न अधिकार दिएको थियो:

- सरकारका तर्फबाट मुद्दा चलाउने नचलाउने अन्तिम निर्णय गर्ने,
- सरकारको हक हित सरोकार रहेका मुद्दामा अदालतमा सरकारको प्रतिनिधित्व गर्ने,

नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ ले महान्यायाधिवक्ताले प्रयोग गर्दै आएका मुख्य कानूनी सल्लाहकारका रूपमा राय दिने काम, सरकारका तर्फबाट मुद्दा चलाउने नचलाउने अन्तिम निर्णय गर्ने काम र सरकारको हक हित सरोकार रहेका मुद्दामा अदालतमा सरकारको प्रतिनिधित्व गर्ने कामलाई यथास्थितिमा कायम राख्दै निम्न थप अधिकार दिएको छ:

- सर्वोच्च अदालतले गरेको कानूनको व्याख्या र प्रतिपादन गरेको कानूनी सिद्धान्तको कार्यान्वयन भए नभएको अनुगमन गर्ने,
- हिरासतमा रहेको व्यक्तिलाई मानवोचित व्यवहार गरे नगरेको वा आफन्त वा कानून व्यवसायीसँग भेटघाट गर्न नदिएको पाइए त्यस कुरा रोक्न आवश्यक निर्देशन दिने,

महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय र अन्तर्गतका कार्यालयहरू

सरकारी मुद्दा सम्बन्धी ऐन, २०४९ ले सरकारी वकीलको परिभाषामा महान्यायाधिवक्तालाई पनि राखेको छ। नेपालका सरकारी वकील कार्यालयहरू महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय मातहत रही कार्यरत रहेका छन्।

महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको वर्तमान अवस्था र समस्याहरू

महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको वर्तमान अवस्था र समस्याहरू निम्न अनुसार रहेका छन्:

- महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयलाई न्यायालयले कार्यकारी निकायको रूपमा लिई मुद्दाको एक पक्षको रूपमा मात्र व्यवहार गर्ने र कार्यकारी निकायहरूले न्यायपालिका अन्तर्गतको निकायको

रूपमा राख्ने भएकोले महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको सुदृढीकरण कसैको चासोको विषय नबनेको,

- अभियोजन र न्यायिक प्रतिरक्षा गर्ने कार्यमा हुने आर्थिक व्ययभारलाई अनुत्पादक क्षेत्रमा हुने लगानी ठानी अत्यन्त न्युन बजेट निकासा हुने गरेको,
- महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयका कार्यक्रम र योजनाहरू राष्ट्रिय कार्यक्रम र योजनाहरूमा समावेश नगरिएको,
- फौजदारी मुद्दाहरूको अनुसन्धान र अभियोजनको कार्यहरू सरकारले प्राथमिकतामा नराखेको,
- सरकार र सरकारी निकायहरूले गरेका निर्णयहरूको न्यायिक परीक्षण हुँदा प्रतिरक्षा गर्नुपर्ने कार्यमा पर्याप्त सहयोग र समन्वय हुने नगरेको,
- सरकारी निकायहरूले सार्वजनिक हक हित सरोकार भएको र कुनै व्यक्तिको अधिकारका सम्बन्धमा निर्णय गर्दा महान्यायाधिवक्ता वा सरकारी वकीलको राय लिने परिपाटिको विकास हुन नसकेको,
- स्वेच्छाचारीपूर्वक र व्यक्तिगत स्वार्थका आधारमा गरेका निर्णयहरूले अनावश्यक रूपमा मुद्दाको कार्यबोझ बढ्न गई प्रतिरक्षा गर्नुपर्ने कार्यमा अन्यौलता सिर्जना हुने गरेको,
- महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय र मातहतका कार्यालयहरूमा रहेको कार्यबोझको अनुपातमा जनशक्ति अत्यन्त न्युन रहेको,
- सरकारी वकीलको कार्य प्रकृति नितान्त व्यावसायिक, प्रतिस्पर्धात्मक र विशेषज्ञ प्रकृतिको हुने भए पनि निजामती सेवाको शर्त र सुविधा अन्तर्गत कार्य गर्नुपर्ने बाध्यता रहेको,
- सरकारी वकील कार्यालयहरूको भवन, आवास, सवारी साधन लगायत कार्यालयहरूका लागि आवश्यक पर्ने न्युनतम भौतिक साधनहरूको अभाव रहेको,
- महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय तथा मातहतका सरकारी वकील कार्यालयहरूमा सूचना प्रविधिको पूर्वाधारको अभाव,
- सरकारी वकील समूहमा प्रशिक्षित विशिष्टीकृत जनशक्तिको अभाव,
- फौजदारी अपराध सम्बन्धी अनुसन्धान वस्तुगत र वैज्ञानिक नभै बयानमुखी भएकाले अभियोजनमा अपेक्षित सफलता हाँसिल हुन नसकेको,
- नेपाल सरकार तथा सरकारी निकायहरूले गरेको निर्णय विरुद्ध परेका पचास प्रतिशत भन्दा बढी मुद्दाहरूमा निर्णय बदर हुने गरेको,
- फौजदारी न्याय प्रणालीले आम नागरिकको विश्वास प्राप्त गर्न नसकेको कारणले न्यायिक प्रक्रियामा उनीहरूको सहयोग प्राप्त गर्न कठिन हुने गरेको ।

वर्तमानमा अवस्थामा देखिएका यस कार्यालयका चुनौतीहरू

- सिमित स्रोत साधन र जनशक्तिको परिचालन गरि अभियोजन र प्रतिरक्षामा अधिकतम सफलता हाँसिल गर्नुपर्ने,

- प्रशिक्षण, अवलोकन र अध्ययनका अवसर नपाएका सरकारी वकीलहरूले व्यावसायिक, अनुभवी र बरिष्ठ निजी कानून व्यवसायीहरूको सामूहिक प्रतिनिधित्वसँग प्रतिस्पर्धा गरी मुद्दामा सफलता प्राप्त गर्नुपर्ने,
- सांगठनिक, वित्तीय र अन्तर्राष्ट्रिय प्रकृतिका जटिल एवं प्राविधिक मुद्दाहरूमा अनुसन्धानलाई सही रूपमा मार्गनिर्देश गरी सफल र प्रभावकारी अभियोजन गर्नुपर्ने,
- अन्तर्राष्ट्रिय फौजदारी महासन्धिहरूको दायित्व बहन गर्न सक्ने गरी संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गर्नुपर्ने,
- अन्तर्राष्ट्रिय अदालत, न्यायिक निकाय एवं अन्तर सरकारी निकायमा नेपालको विरुद्ध परेका मुद्दाहरूमा नेपालको प्रतिरक्षा गर्नुपर्ने ।

राज्यको पुनर्संरचनाले महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको संरचनामा पर्ने प्रभावको पूर्वानुमानसँग सम्बन्धित देखिने केही प्रश्नहरू

संसदीय प्रणालीको हालको राजनैतिक प्रणालीलाई परिवर्तन गरी संसदीय तथा अध्यक्ष्यात्मक प्रणालीको मिश्रित स्वरूपलाई अपनाउने भन्ने कुरा आएको सन्दर्भमा देशले आफ्नो राजनैतिक प्रणालीमा परिवर्तन गरेको कारणले कानून प्रणालीलाई परिवर्तन गर्नु पर्ला भन्ने प्रश्न स्वाभाविक रूपमा उठ्ने देखिन्छ । त्यसप्रकारको राजनीतिक प्रणाली भएको फ्रान्सको कानून प्रणाली संसदीय प्रणाली अपनाइ आएका बेलायत अमेरिकाको कानून प्रणालीभन्दा पूर्णरूपमा भिन्न छ । त्यहा महान्यायाधिवक्ता र सरकारी वकीलको जिम्मेवारी अहिले हामीले लिएको जिम्मेवारी भन्दा धेरै फरक छ । फ्रान्सका महान्यायाधिवक्ता र सरकारी वकीलको नियुक्ति राष्ट्रपतिबाट गरिन्छ ।

संविधान सभाको न्याय प्रणाली सम्बन्धी समितिको प्रारम्भिक मस्यौदा सम्बन्धी प्रतिवेदनको महान्यायाधिवक्ता सम्बन्धी व्यवस्था हेर्दा कानून प्रणालीलाई परिवर्तन गर्ने सोंच राखेको देखिदैन । हालैको राष्ट्रपति र प्रधानमन्त्रीको अधिकारको बाँफाँडमा महान्यायाधिवक्ताको नियुक्ति प्रधानमन्त्रीको अधिकारमा पर्ने भनिएको छ । यस आधारमा हेर्दा राज्य प्रचलित कानून प्रणालीलाई परिवर्तन गर्ने सोंचमा रहेको देखिदैन ।

राज्यको संरचनालाई एकात्मकबाट संघात्मक रूपमा परिवर्तन गरेको कारणले महान्यायाधिवक्ताको काम, कर्तव्य र अधिकारमा परिवर्तन गर्नु पर्ने हुन्छ । एकात्मक संरचनाको महान्यायाधिवक्ता र महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको काम, कर्तव्य र अधिकारले संघीय संरचनामा काम गर्ने संभावना हुँदैन ।

संविधान सभाको न्याय प्रणाली सम्बन्धी समितिको प्रारम्भिक मस्यौदा सम्बन्धी प्रतिवेदनको महान्यायाधिवक्ता सम्बन्धी व्यवस्था हेर्दा हालको महान्यायाधिवक्ताको स्थानमा निम्न निकायको प्रस्ताव भएको छः

- क. महान्यायाधिवक्ता (केन्द्रमा)
- ख. महाअभियोजनकर्ता (केन्द्रमा)
- ग. राज्य महान्यायाधिवक्ता

घ. राज्य महाअभियोजनकर्ता

ड. राज्य/स्थानीय न्यायाधिवक्ता

उक्त मस्यौदा प्रतिवेदन अनुसार केन्द्र र राज्य दुबै तहका महान्यायाधिवक्तालाई केन्द्र र आफ्नो राज्यका सन्दर्भमा हालको संविधानले दिएका सबै काम, कर्तव्य र अधिकार समान रूपमा दिने प्रस्ताव गरिएको छ । सम्बन्धित महान्यायाधिवक्ताका मातहतमा रहने गरी केन्द्र र राज्यमा महाअभियोजनकर्ताको प्रस्ताव गरिएको उक्त मस्यौदा प्रतिवेदनले दुबै तहमा रहने महाअभियोजनकर्ताको काम, कर्तव्य र अधिकार कानूनबाट तोकिएको भनेको छ ।

साथै, मस्यौदा प्रतिवेदनमा स्वतन्त्र हैसियतमा व्यवस्था भएका देखिने राज्य/स्थानीय न्यायाधिवक्ताका काम, कर्तव्य र अधिकार प्रादेशिक कानूनबाट तोकिएको भनिएको छ ।

मस्यौदा प्रतिवेदनमा महान्यायाधिवक्ताको हालको स्थितिमा परिवर्तन प्रस्तावित गरिएको छ । राज्य संरचना एकात्मकबाट संघात्मक स्वरूपमा परिवर्तन हुँदा महान्यायाधिवक्ताको स्थितिमा पनि परिवर्तन आवश्यक रहन्छ । तर, मस्यौदा प्रतिवेदनमा गरिएको प्रस्तावलाई निम्न सन्दर्भमा विवचार गर्नु आवश्यक देखिन्छ:

- अभियोजनको अन्तिम जिम्मेवारी केन्द्र र राज्य दुबै महान्यायाधिवक्तालाई दिनुको अर्थ देशको फौजदारी न्यायको विषय केन्द्र र राज्यको सन्दर्भमा फरक फरक हुनेछ भनेर बुझ्नु पर्ने हो ?
- अभियोजनको जिम्मेवारी दुबै महान्यायाधिवक्तालाई दिनुको अर्थ केन्द्र र राज्यमा फरक फरक फौजदारी कानून र कार्यविधि लागु हुने छन् भनेर बुझ्नु पर्ने हो ?
- केन्द्रका महान्यायाधिवक्ताले राज्यमा मुद्दा चलाउने वा नचलाउने भन्ने निर्णय गर्नु पर्ने अवस्था हुन्छ वा हुँदैन ?
- केन्द्र र राज्यमा प्रस्ताव गरिएका महाअभियोजनकर्ताले प्रयोग गर्ने अधिकार महान्यायाधिवक्ताबाट प्रत्यायोजित हुने हो ?
- अभियोजनको सम्बन्धमा अन्तिम निर्णय गर्ने अधिकार केन्द्र र राज्यमा महान्यायाधिवक्तालाई नै दिए पछि दुबै तहमा रहने महाअभियोजनकर्ताको मुख्य जिम्मेवारी के हुनु पर्ने होला ?
- महान्यायाधिवक्ता र महाअभियोजनकर्ताको कार्यक्षेत्र स्पष्ट किटान हुनु आवश्यक रहन्छ वा रहदैन ? यो आवश्यक छ भने यो कुरा संविधानबाट व्यवस्थित हुनु पर्ने हो वा होइन ?

उल्लिखित प्रश्नहरूका जवाफले भावी संविधानमा महान्यायाधिवक्ता र अन्य सरकारी वकील तथा तिनीहरूका कार्यालयको बारेमा स्पष्ट परिकल्पना गर्न सहयोग पुऱ्याउने देखिन्छ ।

हालको अनुभवका आधारमा महान्यायाधिवक्ता र अन्य सरकारी वकीलका सम्बन्धमा संविधानमा समावेश हुनुपर्ने विचारणीय कुराहरू निम्न देखिन्छन्

- न्यायाधीश नियुक्तिका लागि न्यायपरिषद्को अवधारणामा सहमति भएको सन्दर्भमा फौजदारी न्याय प्रशासनको जिम्मा पाएको महान्यायाधिवक्ताको उपस्थिति न्याय परिषद्मा आवश्यक छ ।

- महान्यायाधिवक्ताको परिवर्तन सरकार परिवर्तनसँगै भएकोले महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको काममा असहजता अनुभव गरिएको छ ।
- सरकारी वकीलका कार्यालयहरू अदालतको सांगठनिक संरचनाका आधारमा स्थापना हुने हुँदा अदालतको स्वरूपले महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको सांगठनिक संरचनालाई प्रभाव पार्ने हुन्छ ।
- सरकारी वकीललाई निजामती सेवाबाट अलग गरी छुट्टै विशेषज्ञ सेवाको हैसियत प्रदान गर्नु पर्ने देखिन्छ ।
- त्यसरी विशेषज्ञ सेवाको हैसियत दिदा सरकारी वकीलको सेवा, शर्त र सुविधा अदालतको तह अनुसारको न्यायाधीशकै सरह हुनु पर्छ ।

उपसंहार

राज्यको संघीय संरचनाको स्वरूप विभिन्न प्रकारका रहेका छन् । त्यस कुरालाई विचार गर्दा संघीय संरचनामा महान्यायाधिवक्ता र महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयको स्थितिको स्पष्ट स्वरूपको परिकल्पना गर्न लागि राज्यको संघीय संरचनाभित्र केन्द्र र राज्यका अधिकार क्षेत्रको स्वरूप पहिले स्पष्ट हुनु पर्ने आवश्यक हुन्छ, हालसम्म यसको स्पष्ट खाका आइसकेको छैन । महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय र यस मातहत रहेका सरकारी वकील कार्यालयको संरचना सामान्यतया अदालतको संरचनासँग जोडिने भएकोले यी कार्यालयहरूको संरचनाको कुरा गर्नका लागि संघीय प्रणालीभित्र अदालती संरचनाको स्वरूप स्पष्ट हुनु पनि आवश्यक छ ।

अनुसूची ५ बाल न्याय सम्बन्धी अध्ययन भ्रमण प्रतिवेदन

१. पृष्ठभूमि

बालबालिका कुनै पनि देशको भविष्यका आधार हुन् । फौजदारी न्यायबाट बाल न्यायलाई अलग रूपबाट हेर्ने प्रचलनको विकास सन् १९९० को दशकपछि प्रारम्भ भएको हो । बाल संरक्षण र बाल न्यायले अन्तर्राष्ट्रिय मानव अधिकार कानूनबाट राष्ट्रिय कानूनमा प्रवेश पाएपछि बाल न्यायको अवधारणाले न्याय प्रशासनको क्षेत्रमा पनि छुट्टै विधाको रूपमा स्थान पाएको छ । बालबालिकाको हक हितका विषयलाई निजका बाबु आमा वा संरक्षकसँग जोडेर हेर्ने अवधारणामा परिवर्तन आई राज्य नै नागरिक र अनाथ बालबालिकाका साथै अशक्त र असहायको संरक्षण *९उवचभलक उवतचष्वभ०* हो भन्ने मान्यताको विकास भएको छ । यो मान्यतासँग हरेक लोक कल्याणकारी राज्यमा बालबालिकाको सम्बन्धमा अधिकार मात्र नभई जिम्मेवारी र उत्तरदायित्व थपिएको छ । बाल बचाउ, बाल विकास, बाल संरक्षण र बाल सहभागिता बालबालिकाको हकहित रक्षाका चार प्रमुख आयामहरू हुन् । यिनै आयामको विकाससँगै बालसंरक्षणका दृष्टिले अधिकारमुखी अवधारणा *९च्चनजत दवकभम वउउचवअज०* हरेक लोक कल्याणकारी राज्यको जिम्मेवारी अन्तर्गत राखिएको छ । बाल न्यायलाई बालबालिकाको संरक्षण गर्ने दृष्टिले मात्र नहेरी बालकलाई फौजदारी न्यायका कठोरताबाट अलग गरी सुधार गर्ने र बाल न्यायको आधुनिक मान्यता अनुरूप अधिकार तथा कर्तव्य बोध तर्फ उन्मुख गराउन आवश्यक पूर्वाधार विकास गरी असल नागरिक बनाउने बाल न्यायको प्रमुख उद्देश्य रहेको छ ।

बाल अधिकारको सम्बन्धमा सन् १९२४ को जेनेभा घोषणापत्र, संयुक्त राष्ट्र संघले २० नोभेम्बर १९५९ मा ग्रहण गरेको बाल अधिकारको घोषणापत्रमा उल्लेख भएका विषयको साथै सन् १९४८ को मानव अधिकारको विश्वव्यापी घोषणापत्र, १९६६ को नागरिक तथा राजनीतिक अधिकार सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिज्ञापत्र, आर्थिक सामाजिक तथा साँस्कृतिक अधिकार सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिज्ञापत्र समेतबाट अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा विकास हुँदै आएको बालबालिकाको संरक्षण र कल्याणसँग सम्बन्धित विषयले २० नोभेम्बर १९८९ मा संयुक्त राष्ट्र संघबाट ग्रहण गरी २ सेप्टेम्बर १९९० देखि लागू भएको बाल अधिकार सम्बन्धी महासन्धि पछि पूर्णता पाएको हो । नेपालले १४ सेप्टेम्बर १९९० मा अनुमोदन गरे पछि पक्ष राष्ट्रको हैसियतले अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धता पूरा गर्नु पर्ने अवस्था आए पछि बालबालिका सम्बन्धी ऐन, २०४८ बालबालिका सम्बन्धी नियमावली २०५१, बाल न्याय (कार्यविधि) नियमावली, २०६३ तर्जुमा गर्नुको साथै विभिन्न २६ जिल्लामा बाल इजलासको गठन समेत गरेको छ ।

बालबालिकाको सम्बन्धमा कार्यरत अन्तर्राष्ट्रिय संस्था संयुक्त राष्ट्र संघीय बालकोष *९ग्लुबलबैँ* र बाल न्याय समन्वय समिति बीच भएको सहमति अनुसार अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा विकसित प्रारूप अनुरूप नेपालमा बाल न्याय स्थापना र सञ्चालन गर्ने उद्देश्यले बाल न्यायसँग सरोकार राख्ने सरकारी निकायका पदाधिकारीलाई बाल संरक्षण र बाल न्याय सम्बन्धी राम्रो

अभ्यास गरिरहेको मुलुक दक्षिण अफ्रिकाको अध्ययन भ्रमण गराउने कार्यक्रम तय भएको थियो । यसै सन्दर्भमा प्रतिवेदकले सरकारी वकीलका लागि बाल न्याय सम्बन्धी प्रशिक्षण दिग्दर्शन तयार गर्ने विज्ञको रूपमा काम गरेको आधारमा प्रतिवेदकलाई सो भ्रमण टोलीको प्रतिनिधि १९९९मा मन्ोनयन भई भ्रमणको अवसर प्राप्त भएको थियो । अन्ततः १४ मे २०१२ देखि २० मे २०१२ सम्मको लागि अध्ययन भ्रमणको कार्यक्रम प्राप्त भई १२ मे, २०१२ तदनुसार वैशाख ३०, २०६९ मा भ्रमण टोली त्यस तर्फ प्रस्थान गर्ने निश्चित भएको थियो ।

2. अध्ययन भ्रमणको उद्देश्य

बाल न्यायको साथै बालबालिकाको संरक्षणमा कानूनी र संस्थागत विकासको उत्तम अभ्यास ९६वकत उच्चवतअभक० गरिरहेका मुलुकको अध्ययन भ्रमणबाट सहभागीले अनुभवको आदान प्रदान गरी देहाय बमोजिमको थप अवसर प्राप्त गर्ने भ्रमणको उद्देश्य रहेको थियो :

- फौजदारी न्याय प्रशासनसँग आवद्ध भई आउने बालबालिका साक्षी, पीडित वा बाल दुराचारी भएको अवस्थामा उनीहरूको संरक्षण र सुधारको लागि कानूनमा गर्नु पर्ने सुधार,
- कानूनको द्वन्द्वमा परेका बालबालिकाको संरक्षण र सुधारका लागि पुनर्स्थापकीय न्याय, सरोकारवाला निकायहरूसँगको सहकार्य र समन्वय, दिशान्तरणका लागि चाल्नु पर्ने कदमहरू, न्यायालय, प्रहरी, अभियोजनकर्ता, बालसुधार केन्द्रको क्षमता अभिवृद्धिका लागि आवश्यक कार्यक्रमहरू,
- बाल सुधार केन्द्र लगायत पीडित बालबालिकाको मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, चिकित्सा र कानूनी सहयोग बारे प्रचलित गुणस्तरीय अभ्यास सम्बन्धमा ज्ञान हासिल गर्ने,
- साक्षीको रूपमा रहने बालबालिकाको संरक्षणको लागि प्रचलित उत्तम अभ्यास बारे परिचित गराउने ।

3. भ्रमण टोली

बाल न्यायसँग सरोकार राख्ने निकायहरू अदालत, अभियोजनकर्ता, अनुसन्धानकर्ता, लगायत सम्बद्ध निकायमा कार्यरत न्यायाधीश, पदाधिकारी सहित भ्रमणटोलीमा देहाय बमोजिम १० जनाको सहभागिता रहेको थियो:

- सर्वोच्च अदालतका माननीय न्यायाधीश एवं बाल न्याय समन्वय समितिका अध्यक्ष श्री रामकुमार प्रसाद शाह
- पुनरावेदन अदालतका माननीय न्यायाधीश एवं राष्ट्रिय न्यायिक प्रतिष्ठानका फ्याकल्टी श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ,
- सर्वोच्च अदालतका का.मु. रजिष्ट्रार एवं बाल न्याय समन्वय समितिका सदस्य सचिव श्री लोहितचन्द्र शाह
- माननीय जिल्ला न्यायाधीश श्री चण्डिराज ढकाल, मोरङ जिल्ला अदालत, विराटनगर
- माननीय जिल्ला न्यायाधीश श्री लेखनाथ घिमिरे, पर्सा जिल्ला अदालत, वीरगन्ज
- सहन्यायाधिवक्ता धर्मराज पौडेल, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय
- प्रहरी नायब महानिरीक्षक श्री विमला थापा शर्मा, प्रहरी प्रधान कार्यालय

- उप-रजिष्ट्रार श्री शिशिरराज ढकाल, बाल न्याय समन्वय समिति पुल्चोक, ललितपुर
 - प्रहरी नायव उपरीक्षक श्री मनोजकुमार के.सी., प्रहरी प्रधान कार्यालय
 - प्रहरी नायव उपरीक्षक श्री किरण बज्राचार्य, प्रहरी प्रधान कार्यालय
- भ्रमण टोलीमा युनिसेफ नेपालका देहाय बमोजिमका प्रतिनिधिहरू समेत संलग्न थिए ।
- बाल संरक्षण विशेषज्ञ पेट्रिजिया बेन्भेन्युटी, युनिसेफ नेपाल
 - प्रमुख बाल संरक्षक त्रिगिट सोनोइस, युनिसेफ नेपाल
 - बाल संरक्षण अधिकृत श्री कामदेव खनाल, युनिसेफ नेपाल
 - युनिसेफ नेपाल कन्सल्टेण्ट नाइजेल ब्रंकेन

४. अध्ययन भ्रमणका प्रमुख उपलब्धी

युनिसेफ नेपाल र बाल न्याय समन्वय समितिले भ्रमण टोलीका सहभागीहरूलाई बालबालिकाको संरक्षण, बाल अधिकार र बाल न्यायका सम्बन्धमा कानूनी, संरचनागत र अनुकरणीय अभ्यास रहेका मुलुकहरूमध्ये दक्षिण अफ्रिकाको अध्ययन भ्रमणमा सहभागी गराउने निर्णय गरेको हो । दक्षिण अफ्रिका जाति, धर्म र भाषिक विविधता रहेको संघीय गणतन्त्रात्मक राष्ट्र हो । ९ प्रदेशमा विभक्त र संविधानद्वारा विभिन्न ११ भाषालाई सरकारी कामकाजको भाषाको रूपमा मान्यता प्रदान गरेको यो राष्ट्र १२,२१,०३७ बर्ग कि.मि. क्षेत्रफलमा फैलिएको छ । कार्यपालिकाको राजधानी प्रिटोरियामा, न्यायपालिकाको राजधानी ब्लोमफेन्टिनमा र व्यवस्थापिकाको राजधानी केप टाउनमा रहेको दक्षिण अफ्रिकाको संविधान १९९६ डिसेम्बर १८ मा घोषणा भई ४ फेब्रुवरी १९९७ देखि प्रारम्भ भएको हो । संविधानको धारा २८ मा बालबालिकाको मौलिक हकको व्यवस्था गरिएको छ । १८ वर्ष मुनिकालाई बालबालिकाको परिभाषामा संविधानले नै समेटेको छ । संविधानले व्यवस्था गरे अनुसार सन् २००५ मा संसदले बालबालिका ऐन जारी गरी १९ जुन २००६ देखि सो ऐन प्रारम्भ भएको र बाल न्याय सम्बन्धी ऐन २००८ संसदले जारी गरेकोमा ७ मे २००९ मा राष्ट्रपतिले प्रमाणीकरण गरेपछि १ अप्रिल २०१० देखि सो ऐन प्रारम्भ भएको छ । बालबालिका सम्मिलित भएको मुद्दामा दक्षिण अफ्रिकामा दिशान्तरण एम्बुसककष्यल० निर्णय पुनर्स्थापकीय न्याय एञ्चकतयचवतष्वभ वगकतष्वभ०, सुधारका लागि अवलम्बन गर्ने उपायहरू, बालबालिका पीडित भएको, बाल दुराचारमा संलग्न रहेको वा साक्षी बसेकोमा संरक्षण र सुधारका लागि कानूनी, संस्थागत र उदाहरणीय अभ्यास समेत अवलम्बन गरेको पाइन्छ ।

कुनै पनि अपराधिक कार्यबाट पीडितलाई संयुक्त राष्ट्रसंघद्वारा जारी गरिएको ग्लोबल अभिचवतष्यल या चवकष अचषलअषुभिक या वाकतष्वभ ायच ष्वअतषक या ऋचषभ बलम व्दगकभ या एयधभच, जडडछ द्वारा प्रत्याभूत अधिकार र सुविधा अनुकूल हुने गरी दक्षिण अफ्रिकाले त्जभ क्भचष्वअभ ऋजवचतभच ायच ष्वअतषक या ऋचषभ प्ल क्यगतज वचष्वअव, दृण्ड जारी गरेको छ । यो बडापत्रले अपराध पीडितका देहाय बमोजिमका ७ वटा अधिकारको व्यवस्था गरेको पाइन्छ -

- मानव मर्यादा र गोपनीयताको सम्मान गर्दै स्वच्छ व्यवहार पाउने

- अपराध अनुसन्धान र पुर्पक्ष एवं कारवाही वारे सूचना र जानकारी दिने
- पीडितका अधिकार, सुविधा र मुद्दामा भएको अनुसन्धान एवं कारवाही वारे जानकारी प्राप्त गर्ने
- सुरक्षित हुन पाउने र पीडित साक्षीलाई कुनै जोखिम उत्पन्न भएमा ९क्ष थयग बचभ व धप्तलभकक, थयग ङगकत चभउयचत बलथ कगअज तजचभवतक तय तजभ उयषिभ यच कभलष्यच कतवतभ उचयकभअगतयच ० तत्काल सूचना गर्ने
- औषधि उपचारको सहयोग, कानूनी सहायता र परामर्श लगायतको सहयोग प्राप्त गर्ने
- शारीरिक, मानसिक वा आर्थिक क्षति पुगेमा क्षतिपूर्ति प्राप्त गर्ने
- गैर कानूनी तवरबाट कुनै सामग्री वा सम्पत्तिमा क्षति पुऱ्याएमा सोध भर्ना प्राप्त ९च्चनजत तय च्भकतप्तगतष्यल० गर्ने

4.1. दक्षिण अफ्रिकाका देहायका स्थानमा देहाय बमोजिम कार्यक्रम सञ्चालन भएको थियो

२०६९।२।१ (१४ मे, २०१२) मा	प्रिटोरिया स्थित न्याय तथा संवैधानिक विकास विभागमा प्रशिक्षण
२०६९।२।२ (१५ मे, २०१२) मा	बाल अदालत ९ञ्जर्षमचभलुक ऋयगचत० र बाल न्याय अदालत ९ञ्जर्षम वाकतष्यभ ऋयगचत० अवलोकन र दक्षिण अफ्रिकी प्रहरी सेवाको भूमिका वारे जानकारी
२०६९।२।३ (१६ मे, २०१२) मा	स्वेटो स्थित बाल सुधार केन्द्रको अवलोकन र दक्षिण अफ्रिका संवैधानिक अदालतको अवलोकन
२०६९।२।४ (१७ मे, २०१२) मा	ब्लोमफेन्टिन स्थित थुटुजेला बालबालिका केन्द्र र मानगुङ्ग स्थित एकद्वार बाल न्याय केन्द्रको अवलोकन
२०६९।२।५ (१८ मे, २०१२) मा	प्रिटोरिया स्थित न्याय तथा संवैधानिक विकास विभागको सभाकक्षमा प्रशिक्षण, राष्ट्रिय अभियोजन प्राधिकरण ९ल्वतष्यलर्वा एचयकभअगतप्लन बातजयचप्तथ० को भूमिका वारे जानकारी, सामाजिक विकास विभागको भूमिका सम्बन्धमा प्रशिक्षण
२०६९।२।६ (१९ मे, २०१२) मा	लायन पार्क तथा इभ संग्रहालयको अवलोकन भ्रमण
२०६९।२।७ (२० मे, २०१२) मा	जोहनसवर्ग दक्षिण अफ्रिकाबाट कतारको दोहा हुँदै काठमाडौं फिर्ता

4.2. अध्ययन भ्रमणबाट जानकारी प्राप्त भएका प्रमुख विषय

मिति २०६९।१।३० मा कतार एयरवेजबाट काठमाडौं-दोहा-जोहनसवर्ग उडानबाट भोलिपल्ट दिउसो दक्षिण अफ्रिका पुगेपछि सो दिनमा अन्य कार्यक्रम भएन । जोहनसवर्गबाट प्रिटोरिया स्थित न्याय तथा संवैधानिक विकास विभाग ९म्भउवचकभलत या वाकतष्यभ बलम ऋयलकतप्तगतष्यलर्वा म्भखभयिऊभलत० को सभाकक्षमा सहभागीहरू उपस्थित भए पछि मिति २०६९।२।१ मा सहभागीको परिचय पश्चात कार्यक्रम शुरु भएको थियो । कार्यक्रमको दोस्रो चरणमा नेपालमा बाल अधिकार र बाल न्यायका सम्बन्धमा भएका कानूनी, संस्थागत व्यवस्था र भविष्यमा सुधार गर्नु पर्ने विषयमा सहभागीको तर्फबाट प्रस्तुतीकरण भएको थियो । बालबालिका सम्मिलित भएका मुद्दामा अनुसन्धान, अभियोजन, न्यायिक निर्णय लगायत बाल सुधारका पक्षमा नेपालले अपनाएको कार्यविधि नीति तथा

कार्यक्रम, बाल न्यायमा सुधार गर्नु पर्ने विषय समेत समावेश गरी कार्यपत्र प्रस्तुत गरिएको थियो । सहभागीबाट कार्यपत्र प्रस्तुत भएपछि प्रशिक्षण र अवलोकनबाट जानकारी प्राप्त भएका विषय देहाय बमोजिम छन् :

- दक्षिण अफ्रिकामा बालबालिकाले फौजदारी कानून उल्लङ्घन गरेकोमा बाल न्याय अदालतमा र बालबालिकासँग सम्बन्धित अन्य देवानी र पारिवारिक प्रकृतिका विवादहरू बाल अदालतमा दायर हुन्छन् । बाल अदालतमा विवाद परेपछि मेजिस्ट्रेटको अध्यक्षतामा सामाजिक कार्यकर्ता, कानून व्यवसायी, बालबालिकाका बाबु आमा वा संरक्षक सहितले छलफल गरी मेजिस्ट्रेटबाट निर्णय निरोपण गरिन्छ । बाल न्याय अदालतमा प्रारम्भिक अनुसन्धान, सामाजिक प्रतिवेदन र सरकारी वकील १९गर्दाध एचयकभअगतयच० ले दिशान्तरण निर्णय नगरेको अवस्थामा मुद्दा दायर गरी पुनर्स्थापकीय न्यायको अवधारणा अनुरूप न्याय निरोपण गरिन्छ ।
- सरकारी वकीललाई बालबालिका संलग्न भएका सामान्य कसूर १:प्लयच याभलअभक० मा प्रारम्भिक सुनुवाइ पूर्व दिशान्तरण १म्बभचकष्यल० को निर्णय गर्न सक्ने अधिकार बाल न्याय सम्बन्धी ऐन, २००८ को परिच्छेद-६ ले दिएको छ । प्रारम्भिक सुनुवाइ पश्चात पनि बालबालिकालाई दिशान्तरण गर्नु परेमा सरकारी वकीलले निर्णय गरी सो निर्णय अदालतबाट समर्थन भएपछि दिशान्तरण गर्न सकिने कानूनी व्यवस्था छ ।
- विद्यालय वा शैक्षिक संस्था बिदा भएका अवस्थामा बालबालिका संलग्न हुने र पीडित हुने प्रकृतिका यौन अपराध अत्याधिक बढ्ने र साक्षी तथा पीडितको संरक्षणका साथै बाल दुराचारीको सुधारका लागि सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाको समन्वय, सहकार्य र सहयोगबाट विभिन्न सुधार केन्द्रमा राखी सुधारात्मक उपाय अवलम्बन गरिन्छ ।
- बाल दुराचारमा संलग्न १० वर्ष नपुगेको बालबालिकालाई फौजदारी दायित्व बहन नगराउने १म्बभ अउवउवह० मान्यता अनुरूप कुनै सजाय हुँदैन । बाल न्याय अदालतले १४ वर्ष नपुगेको बालबालिकालाई सामान्यतया कैद सजाय गर्दैन । बालबालिकाको साथमा उमेर पुगेको व्यक्ति समेत संलग्न रहे पनि त्यस्तो मुद्दा बाल न्याय ऐन अनुसार बाल अदालतमा दायर गरिन्छ ।
- प्रारम्भिक जाँचबुझ पछि सो विवाद बाल अदालत १ऋजर्षमचभलुक ऋयगचत० मा नभई बाल न्याय अदालतमा पेश गर्नु पर्ने भनी प्रतिवेदन प्राप्त भएमा त्यस्तो विवाद बाल न्याय अदालत १ऋजर्षम वाकतषभ ऋयगचत० मा प्रस्तुत गरिन्छ । दिशान्तरण नगर्ने निर्णय भएपछि प्रारम्भिक सोधपुछको व्यवस्था मिलाउनु पर्छ ।
- प्रारम्भिक जाँचबुझको क्रममा पारिवारिक मिलन, पीडित तथा दुराचारीको मिलन एवं सोधपुछ सामान्यतया प्रक्राउ परेको ४८ घण्टा भित्र सम्पन्न गरिसक्नु पर्छ ।
- बालबालिकाको संरक्षण र हेरचाहका लागि स्थापना भएका अधिकांश केन्द्रहरू प्रादेशिक सरकारबाट संचालित हुन्छन् । ती केन्द्रहरूले पीडितको संरक्षण कार्यक्रम १ख्खतष कगउउयचत

उचयनचक्र०, अपाङ्गता भएका बालबालिकाको संरक्षण, पारिवारिक पुनर्मिलन सेवा, मानव बेचबिखन विरुद्धको जनचेतना फैलाउने कार्यक्रम समेत सञ्चालन गरेका छन् ।

- थुटुजेलाले बाल संरक्षण केन्द्रले बालबालिकाको स्वास्थ्य उपचार, शिक्षादिको, खेलकुद, नैतिक चरित्र निर्माण समेतका कार्यक्रम संचालन गरेको पाइन्छ । सो कार्यक्रमका लागि सरकारी र गैर सरकारी संस्थाको सहभागिता, योगदान र प्रयास उल्लेखनीय रहेको छ ।
- एकद्वार बाल न्याय केन्द्र प्रादेशिक सरकारको आर्थिक सहयोगबाट संचालित छ । यस केन्द्रमा बालबालिका सम्मिलित मुद्दाको सुनुवाइ, साक्षीको संरक्षण र सुविधा, कानूनी सहयोग, सुनुवाइमा सरकारी वकील, समाज सेवी, बालबालिकाका बाबु आमा वा संरक्षक, प्रहरी अधिकृत, कानून व्यवसायी समेतको उपस्थितिमा मेजिस्ट्रेटले निर्णय गर्ने व्यवस्था छ ।
- बाल न्यायको सबै भन्दा आर्कषक पक्ष पुनर्स्थापकीय न्याय नै हो । बाल न्यायमा सामाजिक प्रतिवेदनको पनि महत्वपूर्ण भूमिका रहेको हुन्छ । बाल न्याय सम्बन्धी ऐन, २००८ अन्तर्गत विभिन्न तीन प्रकृतिका मुद्दाहरू अनुसूचीमा समावेश गरिएको छ । अनुसूची-१ मा सामान्य अपराध, अनुसूची-२ मा मध्यम स्तरका अपराध र अनुसूची-३ मा गम्भीर अपराधको वर्गीकरण गरिएको छ । मुद्दाको गाम्भीर्यता समेत हेरी सरकारी वकीलले दिशान्तरण ९म्बभकष्यल० गर्ने, नगर्ने निर्णय गर्नु पर्ने हुन्छ । अनुसूची-३ मा उल्लेखित कसुरका सम्बन्धमा अपवादका अवस्थामा मात्र म्बभअतयच या एगदषिअ एचयकभअगतष्यल ले दिशान्तरण गर्ने लिखित आदेश दिन सक्छ, यो अधिकार प्रत्यायोजन गर्न सकिदैन ।
- महानगरीय प्रहरीलाई अनुसन्धान गर्ने कुनै भूमिका हुँदैन । दक्षिण अफ्रिकी प्रहरी सेवामा हरेक प्रहरी केन्द्रमा पारिवारिक हिंसा र यौन हिंसा सम्बन्धी विवाद हेर्ने छुट्टै शाखा रहेको देखिन्छ ।
- बालबालिकालाई ४८ घण्टा भन्दा बढी प्रहरीको नियन्त्रणमा राखिदैन तत्काल अदालतमा पेश गर्नु पर्ने हुन्छ ।

४.३.न्यायिक संरचना

- दक्षिण अफ्रिकाको न्यायपालिकाको संरचना अवलोकन गर्दा संवैधानिक अदालत, पुनरावेदकीय सर्वोच्च अदालत, उच्च अदालत, मेजिस्ट्रेट अदालत र अन्य अदालत रहेका छन् ।
- संवैधानिक विषयका विवाद हेर्ने सबै भन्दा माथिल्लो तहको अदालत संवैधानिक अदालत हो । अध्यक्ष, उपाध्यक्ष र नौ जना सदस्य समेत ११ जना न्यायाधीश रहने संवैधानिक अदालतमा कम्तीमा आठ जना न्यायाधीश उपस्थित नभई सुनुवाइ प्रारम्भ हुँदैन ।
- प्रदेश बीचको विवाद, संवैधानिक अंगको विवाद, संसद वा राष्ट्रपतिले आफ्नो दायित्व पूरा नगरेको विषयका विवादहरू संवैधानिक अदालतले निरूपण गर्दछ ।
- संवैधानिक विषय बाहेकका विवादमा पुनरावेदकीय अधिकार प्रयोग गर्ने सर्वोच्च अदालत हो । एक जना अध्यक्ष, एक जना नायब मुख्य अध्यक्ष र कानूनद्वारा निर्धारित अन्य संख्यामा न्यायाधीश रहन्छन् । संवैधानिक अदालतले निर्णय गर्न पाउने विषय बाहेकका अन्य विषयमा सुनुवाइ र निर्णय गर्न पाउने अधिकार प्रादेशिक उच्च अदालतको रहेको छ ।

- मेजिस्ट्रेट अदालत बालबालिका सम्मिलित विवादमा निर्णय गर्ने समेत क्षेत्राधिकार पाएको अदालत हो । यसले फौजदारी विवादमा समेत अभियुक्तको म्याद थप गर्ने लगायत कानूनको संवैधानिकता परीक्षण गर्ने र राष्ट्रपतिको आचरणका विवाद बाहेकका अन्य विवादको निरूपण गर्दछ ।
- श्रम अदालत, आय कर अदालत, सर्किट अदालत, सम्बन्ध विच्छेद अदालत, सामुदायिक अदालत आदि अदालतहरू विधायिकी कानूनद्वारा गठन गरिन्छ ।
- दक्षिण अफ्रिकामा बाल न्याय सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था र संस्थागत सुधार उदाहरणीय रहेको छ । बाल अदालत र बाल न्याय अदालत, बाल संरक्षण र सुधार केन्द्रको व्यवस्थाले बालबालिकाको संरक्षण र सुधार प्रतिको राष्ट्रको जिम्मेवारी बोध गराउँदछ । संविधान जारी भएपछि निर्मित ऐनद्वारा व्यवस्था गरिएको बाल न्याय र बालबालिकाको संरक्षण अन्तर्राष्ट्रिय स्तर अनुरूप अनुकरणीय छ ।
- अध्ययन भ्रमणको अन्तिम दिन सहभागीहरूलाई लायन पार्क र इभ संग्रहालयको अवलोकनमा लिएको थियो । मानव सभ्यताको विकाससँग सम्बन्धित इभ संग्रहालयले मानवका पुर्खाको बारेमा ज्ञान दिलाउने र लायन पार्क वन्यजन्तुको संरक्षण र पर्यटनका दृष्टिले महत्वपूर्ण रहेको छ ।

५. निष्कर्ष

दक्षिण अफ्रिकाले फौजदारी न्यायबाट बाल न्यायलाई अलग राख्ने उद्देश्यले गरेको कानूनी व्यवस्थाको कार्यान्वयनबाट बालबालिकाको संरक्षण, सुधार र बाल न्यायमा गरेको लगानी र सुधार हाम्रो सन्दर्भमा उदाहरणीय छ । बालबालिकाको सम्मानपूर्वक बाँच्न पाउने, विकासको प्रतिफल उपभोग गर्न पाउने, शारीरिक तथा मानसिक रूपमा स्वस्थ रही व्यक्तित्व विकास गर्न र सहभागिता जनाउन पाउने अधिकारमुखी अवधारणा बाल न्यायबाट साकार हुन्छ । बाल दुराचारमा संलग्न भएपनि दिशान्तरण गरी चरित्र सुधार गराउने र पुनर्स्थापकीय न्यायलाई हाम्रो सन्दर्भमा पनि आत्मसात गर्नुपर्ने आवश्यकता देखिएको छ । काठमाडौं र पोखरामा स्थापित बाल सुधार गृहले मात्र मुलुकले अपेक्षा राखेको बाल सुधारको आवश्यकता पूरा गर्न सकेको छैन । बालबालिका सम्बन्धी ऐन, २०४८ मा समय सापेक्ष सुधार गरी दिशान्तरणका कानूनी प्रावधान राखी अन्तर्राष्ट्रिय मान्यता अनुरूप बाल न्यायलाई विकास गर्नु अत्यावश्यक छ । साक्षीको पहिचान, संरक्षण र प्रोत्साहनका लागि कानूनी व्यवस्था हुनु पर्ने देखिन्छ । सरकारी मुद्दा सम्बन्धि ऐन नियममा साक्षीलाई प्रोत्साहनको व्यवस्था भए पनि कार्यान्वयन हुन सकेको छैन । बाल न्यायको क्षेत्रमा यस सम्बन्धी सुधार आवश्यक छ । बाल न्यायलाई पुनर्स्थापकीय न्यायको रूपबाट विकास गर्न कानूनी सुधार हुनु पर्छ । अध्ययन भ्रमणमा सहभागी प्रतिनिधिको हैसियतले सुधार आफैबाट गर्नु पर्छ भन्ने मान्यता अनुरूप समय सापेक्ष रूपमा कानूनी, संस्थागत र व्यावहारिक सुधार तर्फ प्रतिवेदक हरक्षण प्रतिबद्ध र अग्रसर रहने व्यहोरा समेत निवेदन गर्दछु ।

प्रतिवेदक


धर्मराज पौडेल

सहन्यायाधिवक्ता


महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय, नेपाल

मिति:- २०६९/०३/०८

भावपूर्ण श्रद्धाञ्जली



जन्म : २०२६/०७/१८



मृत्यु : २०६८/१२/१७


स्व. मातृकाप्रसाद भण्डारी

जिल्ला सरकारी वकील कार्यालय दाङमा सहायक जिल्ला न्यायाधिवक्ताको पदमा कार्यरत मातृकाप्रसाद भण्डारीको मिति २०६८/१२/१७ गते सवारी दुर्घटनामा परी असामयिक निधन भएको हुँदा दिवंगत आत्माको चीर शान्तिको कामना गर्दै हार्दिक श्रद्धाञ्जली अर्पण गर्दछौं । यस दुःखद् घडीमा शोक सन्तप्त परिवार प्रति धैर्य धारण गर्ने शक्ति ईश्वरले प्रदान गरून भन्ने कामना गर्दछौं ।

साथै एक योग्य, इमान्दार एवं कर्मठ सरकारी वकील गुमाउनु पर्दा महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय र मातहतका सरकारी वकील कार्यालयहरूमा कार्यरत सरकारी वकील तथा कर्मचारीहरू मर्माहत भएका छौं ।

महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय रामशाहपथ, काठमाडौं ।

भावपूर्ण श्रद्धाञ्जली



स्व. देवराज ओम्का

पुनरावेदन सरकारी वकील कार्यालय कञ्चनपुरमा नायब सुब्बाको पदमा कार्यरत देवराज ओम्काको मिति २०६९/०२/३० गते असामयिक निधन भएको हुँदा दिवंगत आत्माको चीर शान्तिको कामना गर्दै हार्दिक श्रद्धाञ्जली अर्पण गर्दछौं । यस दुःखद् घडीमा शोक सन्तप्त परिवार प्रति धैर्य धारण गर्ने शक्ति ईश्वरले प्रदान गरून भन्ने कामना गर्दछौं ।

साथै एक योग्य, इमान्दार एवं कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारी गुमाउनु पर्दा महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय र मातहतका सरकारी वकील कार्यालयहरूमा कार्यरत सरकारी वकील तथा कर्मचारीहरू मर्माहत भएका छौं ।

**महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय
रामशाहपथ, काठमाडौं ।**